सुधीन्द्रनाथ दत्त

अमिय देव

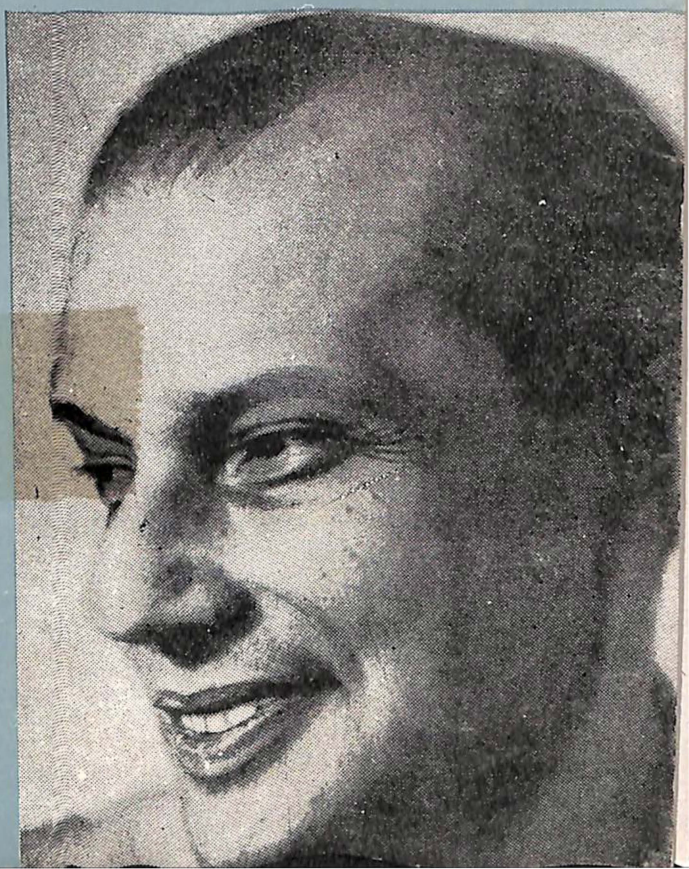

MT
891.440 92
D 262 D

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.44092
D262D

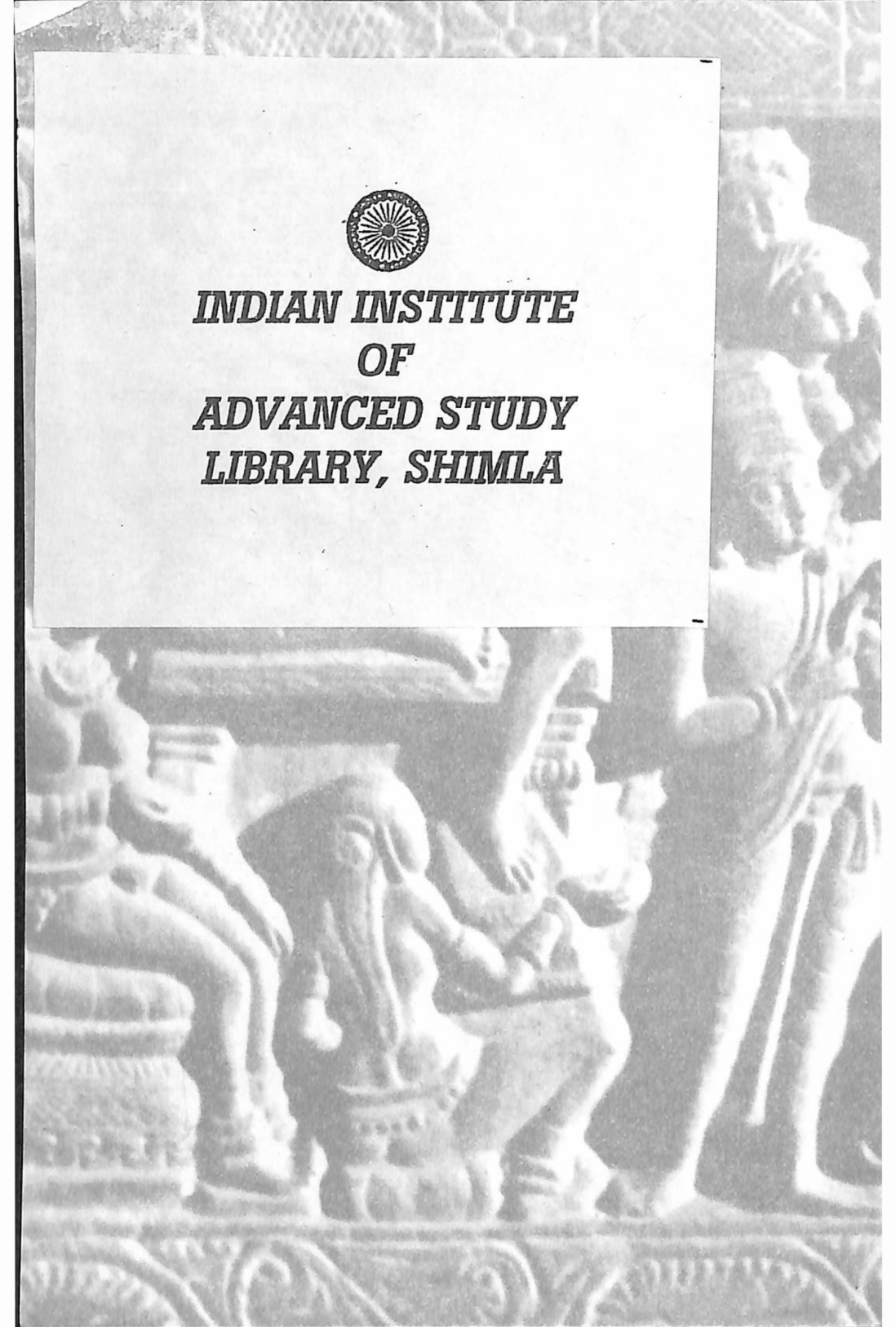

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

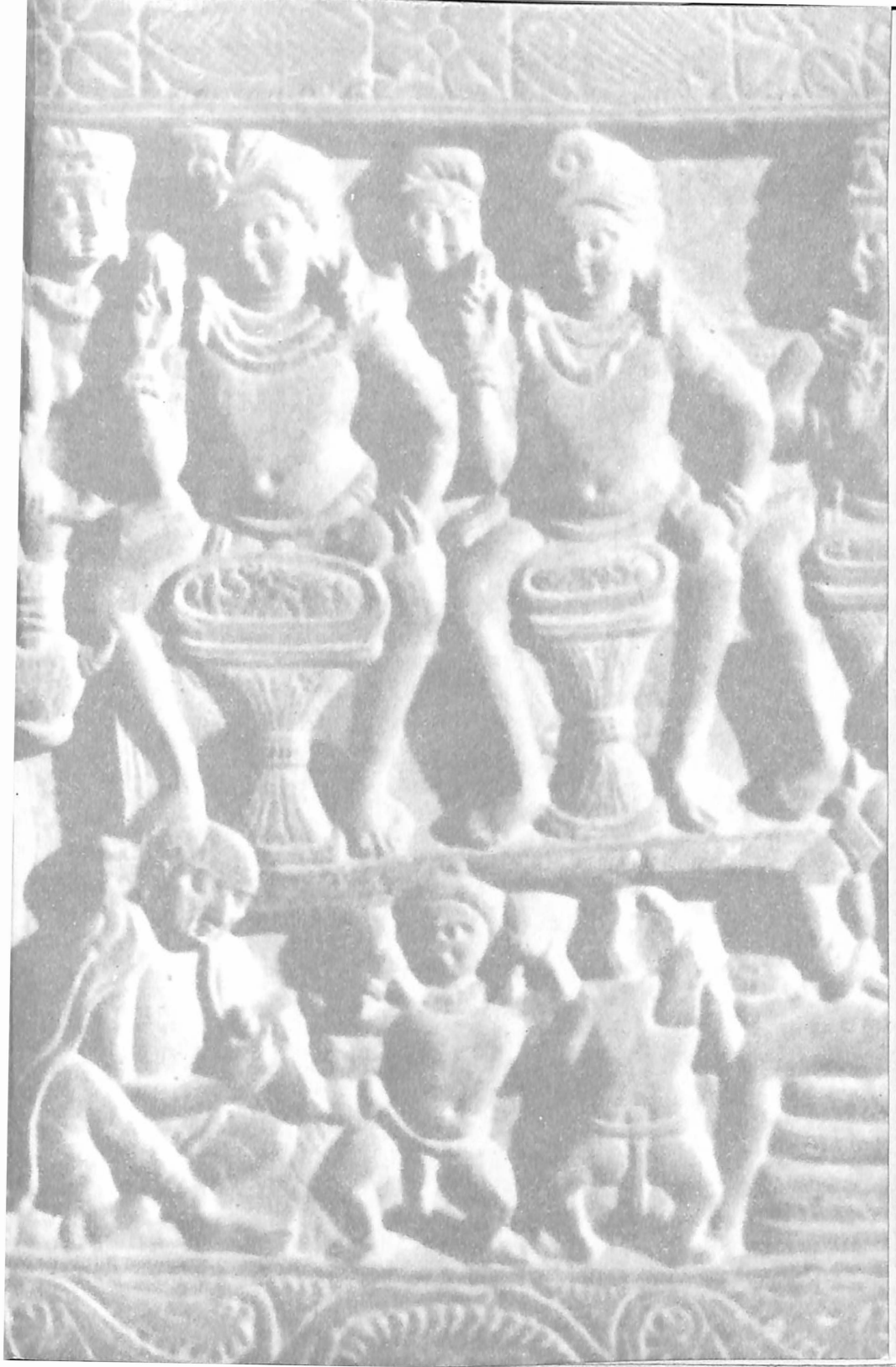

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यदवक्ता भगवान् बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँ एकटा देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकें लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थीक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

सुधीन्द्रनाथ दत्त

लेखक
अमिय देव

अनुवादक
जयदेव मिश्र

साहित्य अकादेमी

Sudhindranath Datta : Maithili translation by Jayadeva Misra of Amiya Dev's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1991) **SAHITYA AKADEMI**

REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.440 92 D 262 D
00117164

प्रथम संस्करण 1991

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 100 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवन तारा बिल्डिग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता-700 053
29, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

MT
891.440 92
D262 D

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

117164
10.12.04
SHIMLA

मुद्रक
रुचिका प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

प्रस्तावना

छअओ पुस्तक कविताक, एक पद्यानुवादक, दूटा निबंधक, एकटा असमाप्त आत्मकथा, कतोक छिटफुट रचना, जाहिमे एकटा उपन्यासक प्रारंभिक पृष्ठ अछि— इएह थीक टैगोरक बादक बंगलाक प्रमुख कवि सुधीन्द्रनाथ दत्तक रचनावली। यथार्थमे किछु अप्रकाशित रचना सेहो अछि, किन्तु बहुत नहि। बाल साहित्यक धरि थोड़े अछि। ई जनरव जे ओ थोड़ लिखैत छलाह, प्रायः अपन पुश्तक सभसँ थोड़ लिखएवाला, किन्तु सभसँ वेसी परिश्रम कय लिखनिहार, पूर्णतः आधारहीन नहि मानल जा सकैछ। यथार्थमे एक बेरि शिथिल बंगलाक संक्षिप्तीकरण करैत ई पूरा संध्या विता देलन्हि, "उड्डयन अवलंबन कएलन्हि" कें "उड़ि गेलाह" मे परिवर्तित कय। एहिसँ टैगोर ततेक क्षुब्ध भेलाह जे यद्यपि ओ समर्पणक हेतु तँ सहमति देल-थिन्ह, किन्तु सावधान कएल जे एना कएलासँ अतिशीघ्र हिनक कलम सुखा जाएत। पता नहि मात्र एहि मानसिक सुकुमारताक कारण अथवा ओहिसँ नहि, हिनक कलम, जे कहियो बहुत उर्वर नहि छल, प्रायः 15 वर्ष चलिकें रुकि गेल। ई नहि जे ओ लिखबे नहि कएलन्हि। लिखलन्हि, किन्तु कदाचिते। केवल जीवनक अन्तिम कतोक वर्षकें छोड़िकें, जखन बुझना गेल जे गौणरूपक सर्जनात्मक वृत्ति आबि गेल अछि। किन्तु दोसर जनरव ज हिनक कविता दुर्बोध अछि, अपन पुश्तक सभसँ अधिक दुर्बोध, प्रायः पूर्णरूपें साधार नहि अछि। ई सत्य जे हिनक शब्दावली निश्चितरूपें कखनहुँकें अपरिचित होइछ तथा हिनक वाक्यविन्यास होइछ जटिल। एकरा अतिरिक्त हिनक सन्दर्भ संकेत अपेक्षया गुह्यतापूर्ण रहैछ। किन्तु एहि सभक अर्थ होइछ प्रारम्भिक कठिनता। किन्तु एकरा पर विजय प्राप्त कएलाक बाद हिनक पुश्तक अन्य कविक अपेक्षा ई प्रायः सभसँ कम जटिल छथि। टैगोरक ई आशीर्वाद जे ई बौद्धिकताक कवि थिकाह प्रायः पूर्णरूपें वरदान नहि थीक। कारण, हिनका पुश्तक कोनो कवि प्रेमक सम्बन्धमे एतेक साफ एवं एहन भावात्मकताक संग लिखलन्हि अछि? एकरा अतिरिक्त आन के शब्दोच्चारणक हेरफेर सँ एहन प्रभावोत्पादन कएलन्हि अछि?

सुधीन्द्रनाथक प्रथम काव्य-पुस्तक टैगोरकें समर्पित भेल "ऋण चुकएबाक

अभिप्राय सँ नहि, ओकरा स्वीकार करबाक हेतु"। यथार्थमे स्वीकार करबाक बहुत वस्तु छल। किन्तु हिनका पुस्तकमे हिनक वैयक्तिकता निखड़ि गेल। ई केवल नवीन प्रकारक अनुभव पर टा नहि लिखलन्हि प्रत्युत नव शैली एवं नव शब्दावलीक विकाश कएलन्हि। जहिना हिनक सभसँ पैघ कवित्व छल तहिना सभसँ पैघ गद्यात्मकता सेहो। हिनक विशुद्ध आवेग बौद्धिकताक तानावानामे सँघटित छल अथवा हिनक तीव्र बौद्धिकता स्फुरित करैत छल विशुद्ध आवेगकेँ। हिनक संयोजनक, यथा यद्यपि, तथापि, तैयो, क प्रयोग आश्चर्यजनक छल। विशेषतः ई विचारि जे हिनक छन्द लिखबाक परिपाटी प्रचुर मात्रामे पारँपरिक छल, ओ गुण अपना समसामयिक लोकनिमे हिनका विशिष्ट बना देलक। प्रायः इएह टा एहन छलाह जे मुक्त छन्दमे कहियो नहि लिखलन्हि, अथवा गद्य-काव्य अथवा एहन अन्य कोनो प्रयोग नहि कएलन्हि। एकरा विपरीत कविता सम्बन्धी हिनक अवधारणा सयम एवं सामंजस्यक संग अनुस्यूत छल, कारण जे ई संसारमे ततेक अराजकता एवं नियमहीनता देखलन्हि जे हिनका हेतु एना करबे उचित मानवीय प्रचेष्टा छल। मलाम एहिमे हिनक आदर्श छलाह, कारण जे मलामेमे हिनका विशुद्ध चेतनाक मोटामोटी रूप भेटलन्हि।

मलाम सँ स्पष्ट भय जाइत अछि जे पश्चिमी साहित्यक संग सुधीन्द्रनाथक परिचय व्यापक छल। संगहि संस्कृतक ज्ञान सेहो हिनका छल। ई दोहरा ज्ञान जे अंग्रेजी शिक्षित भारतीय बुद्धिवादीक सामान्य चिन्ह बनि गेल छल, हिनका मे आबि प्रायः एकटा विशेष रूप पओलक। की एतय एकटा परिचयक संकट उपस्थित भेलैक? हिनक यथार्थ तात्पर्य की छलन्हि जखन ई लिखलन्हिः "हम ओतबे पुरान छी जतबा बीसम शताब्दी/डुबैत बंगालक खाड़ीमे, कोनो नायक नहि, तथापि साक्षी सार्वजनिक विनाशक/जन्महिसँ, युद्ध एवं क्रान्ति होइत, मरण-समान शीतल भय गेलहुँ अछि/मानवीयतावादीक स्तोत्र एवं क्रमविकाशक सान्त्वनाक प्रति/आ भूतसँ विमुख, अग्रगतिसँ अपेक्षया न्यून।" अथवा की केवल विनय हिनका ई कहबाक हेतु बाध्य कएलकन्हिः 'हमर पिता पक्का वेदान्ती छलाह तथा यद्यपि किशोरावस्थहिसँ एकेश्वरवादक अकथनीय अत्याचार सँ हम कुपित भय तार्किक भौतिकवादक दिशि झुकलहुँ, हमरा एहिमे संदेह अछि जे अद्यापि हम अपन निर्णयक शारीरिक विश्लेषण कय सकलहुँ अछि'। सुधीन्द्रनाथकेँ बुझबाक हेतु एहि सभ प्रश्न सँ हमरा सम्बन्ध राखय पड़त। यद्यपि एकरा सभक उत्तर देबाक ई स्थान नहि थीक, तथापि हम आशा करैत छी जे हम जाहि संक्षिप्त विवरणीकेँ प्रस्तुत करबाक चेष्टा करैत छी ताहिसँ एकटा साँचा निखड़िकेँ सोझाँ आओल।

1

सुधीन्द्रनाथ दत्तक जन्म ओहि वर्षमे भेल जाहि वर्ष जन्म भेल एहि शताब्दीक-1901 ई० क 30 अक्टूबरकेँ। ई हीरेन्द्रनाथ दत्त एवं इन्दुमती वसुक द्वितीय सन्तान ओ प्रथम पुत्र छलाह। जँ जन्म सँ भाग्यकेँ नापल जाय तँ ई अवश्य भाग्यवान् छलाह, किएक तं हिनक पिता ओ माता दुनू दिसुक परिवार पूर्ण सम्पन्न छल। दत्त लोकनिक परिवारक इतिहास गोविन्दपुर धरि चल जाइत अछि। इएह ओ ग्राम छल जकरा समेत तीन ग्रामकेँ मिलाय कलकत्ता बनल। जखन हिनका लोकनिक धराड़ी पर फोर्ट विलियमक निर्माण भेल तखन इस्ट इण्डिया कम्पनी हिनका लोकनिकेँ कलकत्ताक बीचशहर चोर-बागानमे बसओलक। किन्तु सुधीन्द्रनाथक जन्म सँ बहुत पूर्वहि हिनक पितामह पुरखाक धराड़ी छोड़ि हातीबागानमे अपन घर बना लेने छलाह। ई घर "पुतरा", घरक नामसँ परिचित भेल, कारण जे एकरा सोझामे ढारल लोहाक सन्तरी पंक्तिबद्ध छलैक। सुधीन्द्रनाथक मातामह ओ मातामहभ्राता सेहो अपन पटलडांगाक पैतृक धराड़ीसँ उपटि वेलिंगटन स्क्वाअर चल आएल छलाह जकर नामकरण बादमे हिनक मामाक नाम पर भेल।

"पुतरा घर" हालमे खसा देल गेल अछि। केवल थोड़ेक अंश प्राचीन कार्नवालिस स्ट्रीट, वर्तमान 13½, विधान सरणिमे एखनहुँ ठाढ़ छैक। ओ तीनतल्ला मकान छल जकर आगाँक हिस्सा चौड़ा छलैक। भीतरक अंगनइ खूब प्रशस्त। कलकत्ताक प्राचीन मकानक अनुरूप सभ आकार-प्रकार। हिनक पितामह द्वारकानाथ जामिनदारक रूपमे एकटा अंग्रेज-ग्रीक व्यापारी संस्थासँ सम्बद्ध रहि खूब कमएलाह। हुनक पुत्रक मृत्युक बादो जामिनदारी हिनका परिवारमे रहल। तथापि हिनक द्वितीय पुत्र हीरेन्द्रनाथकेँ अधलाह दिन देखय पड़लन्हि। किन्तु ओ ओकर मोकाबिला नीक जेकाँ कएलन्हि। ओ किछु एहन काज कएलन्हि जे दत्त लोकनि कहियो नहि कएने छलाह। उदाहरणार्थ, ओ केवल देखएबाक लेल कालेजमे पढ़य नहि गेलाह। एकरा अतिरिक्त अपना परिवारक कोनो दोष हिनका मे नहि आयल। युवावस्थहिसँ ओ सादा जीवन बिताबय लगलाह। बुझना जाइछ तकरे प्रतिशोधमे हुनक अव्यवहित छोट भाय असल चरित्रहीनताक परिचय देलन्हि। ओ अपन बाप-

पुरखाक धन नष्ट कएलन्हि ततवे नहि, बंगला सार्वजनिक मंचक सर्जनशील अभिनेता-निर्देशक-लेखकक रूपमे जे प्रचुर अर्थोपार्जन कएलन्हि तकरहु फूकि देलन्हि। हुनक जीवन-रीति तेहन तीव्र छल जे चालिस वर्षक अवस्थामे हुनक असामयिक मृत्यु भय गेल।

सुधीन्द्रनाथ अपन असमाप्त आत्मकथामे अपन पिता एवं हुनक छोट भायक सम्बन्धमे समान स्नेहपूर्ण शब्द प्रयुक्त कएलन्हि अछि। तेँ ई कहब असंगत नहि होएत जे हीरेन्द्रनाथ तथा अमरेन्द्रनाथ दूनूक जे प्रभाव हिनका पर पड़ल ओ सनातन भय रहि गेल—एक एहन बुद्धिजीवी जे कखनहुँकेँ आवेगशील होअथि, दोसर एहन प्रतिभासम्पन्न जे कुतर्कक बिना रहिये नहि सकथि। विगत प्रायः एक सय वर्षक वंगाली मानसिकताक इतिहासमे एहि दुनू प्रवृत्तिक 'अपन-अपन स्थान रहलैक अछि। सुधीन्द्रनाथ एहि दूनू प्रवृत्तिकेँ उत्तराधिकार रूपेँ पावथि ई ऐतिहासिक कारणताक अंग थीक। स्थिति जेहन केहनो रहल हो, हिनका पर हिनक मायक प्रभावकेँ तिरस्कृत करव उचित नहि होएत। ई प्रभाव जेहन स्पष्ट छल तेहने प्रबल सेहो। प्रबोधचन्द्र वसु-मल्लिकक पुत्री, मन्मथ एवं हेमचन्द्रक भतीजी, राजा सुबोधचन्द्रक वहिनि—सभ सुविख्यात, केयो एक रत्ती कम, केयो एक रत्ती वेशी—ई निखड़ल व्यक्तित्वक छलीह। ई केवल स्वामीमे अनुरक्ता छलीह, ततवे नहि, देओरोक प्रति हिनक प्रेम प्रगाढ़ छल, कारणजे सम्मिलित परिवारमे जँ कोनो एक व्यक्ति निरंकुश अमरक प्रति स्पष्ट रूपेँ कृपालु छल तँ ओ वएह छलीह। हुनके आग्रह पर बालक सुधीन्द्रकेँ अपन पित्तीक नाटक देखबाक हेतु लोक लय गेल। सौभाग्यवश ओहि संध्याक सफलता सभ मापदंडेँ विस्मयकारी छल।

हिनक दोसर पित्ती, हिनक पिताक जेठ भाय धीरेन्द्रनाथ ओहि समय धरि आबि अवकाश ग्रहण कय चुकल छलाह। हुनका अपन पूर्वकृत्यक हेतु पश्चात्ताप छलन्हि। अपन तृतीय भायक आलोचक बनि गेल छलाह। अपन पुत्रक सेहो, जे हुनक पूर्वपथक अनुगामी छलाह। ई स्वयं कोनो उज्ज्वल नक्षत्ररूपेँ तँ नहि, किन्तु संगीत पारंगत एवं शिशु कथाकाररूपेँ समादृत छलाह। सुधीन्द्र अपन शैशवक बहुत अंश हिनकहि संग वितओलन्हि। छुट्टीक दिनमे ई हिनकहि सँग अनेक स्थान, विशेषतः वाराणसी, जाइत छलाह। गर्मीक हिनक दिन बितैत छल कलकत्ताक समीप देहाती घरमे जतयक शीशा सन पोखरि हिनक बालचित्तकेँ ऐनासँ युक्त नृत्यगृहसँ कनेको कम प्रभावित नहि करैत छल। नेनामे हिनक स्वास्थ्य कमजोर छल, अतएव पिताक दुलरुआ भय गेलाह। ई अपन मातापिताक संग दार्जिलिंग तथा जबलपुर गेलाह। आब हिनक पित्ती हिनका अपना संग अधिक लय जाथि, किएक तँ इएह हिनक सनकी वेटाक स्थानापन्न छलचिन्ह। अपन पितियौत सुधीन्द्रसँ ई हटल-हटल रहैत छलाह। हुनका सँ छोटो छलाह; किन्तु एकटा दोसर पितियौत, अपन पित्ती अमरक पुत्र सत्येन्द्रक, निकट जनिक पत्रिकामे पहिल-पहिल

हिनक रचना छपल।

हिनक दू पित्ती धीरेन तथा अमरक देहावसान 1915-16 ई०मे पन्द्रह दिनक भीतर भय गेल। एमहर 1914 ई० सँ आरंभ कय सुधीन्द्र बनारस रहि एनीवेसेन्ट द्वारा स्थापित थियोसोफिकल स्कूलमे विधिवत् पढ़ैत रहलाह। एतय हिनक अपना घरैक संगी छलथिन्ह हिनक अव्यवहित छोट भाय हरीन्द्र। हरीन्द्र हिनकासँ मात्र तीन वर्ष छोट छलाह। हिनक अन्तरंग सेहो। ई स्कूल छोट छल जतय प्रायः 200 छात्र पढ़ैत छल। किन्तु ई छल यथार्थमे राष्ट्रिय। प्रायः इएह एकमात्र एहन स्कूल छल जतय बंगालक राष्ट्रिय शिक्षा संस्थानक प्रवर्तकमे सँ एक अर्थात् हीरेन्द्रनाथ अपन पुत्र लोकनिकेँ पठा सकथि। एकर प्रधानाध्यापक छलाह पी० के० तैलंग। इं महाराष्ट्री छलाह। एनीवेसेन्टक नजरिबंद होएबाक बाद हिनका न्यू इंडियाक भार लेबय पड़लन्हि। बादमे एकबाल नारायण गुर्टू, जे बादमे इलाहाबाद विश्व-विद्यालयक वाइसचान्सेलर भेलाह, हिनका स्थान पर अएलाह। अंग्रेजीक शिक्षिका छलीह कुमारी हैरिटन जनिक एकटा व्यक्तिगत पुस्तकालय छल। सुधीन्द्र एहि पुस्तकालयक अधिकाँश पुस्तक पढ़ि गेलाह। डूमा तथा डिकेन समेत। हिनका पठनमे सँस्कृत पर बल रहल। ई कथित हिन्दी सेहो सीखि गेलाह। किन्तु ई केवल पुस्तकप्रेमी भय नहि रहलाह। हिनक रुचि क्रीड़ामे सेहो छल—विशेषतः मैदानक क्रीड़ा, जेना क्रीकेट, गेन्द, टेनिस। ई सामाजिक जीव छलाह। अपन भायकेँ छोड़ि तीनटा जे हिनक अन्तरंग छलथिन्ह ताहिमे छलाह एकटा अंग्रेज, दोसर सिंहली ओ तेसर वर्माक युवक। 1916 मे लखनउ मे जे थियोसोफिकल सभा भेल ताहिमे ई ओ हिनक भाय स्वयंसेवक छलाह।

बनारसमे पहिने ई लोकनि अपन पारिवारिक मकानमे रहलाह, बादमे विद्यालयक परिसरमे चल गेलाह। किन्तु 1917 मे हिनका लोकनिकेँ कलकत्ता बजाय लेल गेल आ प्रायः पाँच दशक पूर्वक टैगोरक स्कूल सन ओरियेंटल सेमिनरी मे भर्ती कराओल गेल। सुधीन्द्रकेँ प्रथम वर्ग—आजुक दशम वर्गमे। हिनका दूटा निजी शिक्षक छलथिन्ह—संस्कृतक हेतु साँझकेँ ओ गणितक हेतु भिनसर। 1918 मे ई प्रथम श्रेणीमे मैट्रिकुलेशन उत्तीर्ण भेलाह ओ स्काटिश चर्च कालेजमे भर्ती कराओल गेलाह।

प्रायः इएह ओ समय थीक जखन ई छन्दोबद्ध रचना करय लगलाह ओ हिनक रचना पहिल-पहिल छपल। अपना पिताक अनुकरण मे हिनक पितियौत भाय सत्येन्द्र "नृत्य प्रतिभा" प्रकाशित कएल जे प्रधानतः नाटकसँ सम्बन्ध रखैत छल। एकर प्रथम एवँ एक मात्र अंकमे टेनीशनक "दि ब्रुक" क अनुवाद छपल। एकर नीचाँ छपल छलैक सम्पादक। किन्तु कोन कारणसँ से बुझबाक योग्य नहि, किएक तँ जेना हरीन्द्रनाथ कहने छथि ओ सुधीन्द्रनाथ स्वयं संकेत देने छथि, अनुवाद सुधीन्द्रनाथक छल। ई विचारैत जे ई अपना पुश्तक प्रमुख कवि लोकनिमे सँ एकटा

होबएवाला छलाह, हिनक आरम्भ कोनो उच्च कोटिक नहि भेल यद्यपि टेकक प्रयोग छल सबल ओ लय-तालबद्धता जागरूक। सम्पादक हिनक प्रथम प्रकाशक होएबाक अतिरिक्त हिनक प्रथम पाठको छलाह। साहित्यिक मित्र एवं परामर्श-दाता सेहो।

किन्तु सुधीन्द्रक सभसँ पैघ परामर्शदाता छलथिन्ह घरहिमे हिनक पिता। बहुत काल सुधीन्द्र दर्शन ओ साहित्य, विशेषतः अंग्रेजी ओ संस्कृत, हुनका संग अध्ययन कएलन्हि। हुनका संग पढ़ैत ई "दि एनसेन्ट मेरिनर" कविताकेँ सर्वोच्च रचना निर्णीत कएलन्हि। मनीषी ओ राष्ट्रवादी हिन्दू होइतहुँ हिनक पिता पश्चिमक ऋणकेँ स्वीकार करबाक युक्तिकेँ स्वीकार करैत छलाह। संगहि सांसारिकतामे सफल रहि "सोलीसीटर" रूपेँ प्रचुर धन कमएलाह। वेदान्ती रूपेँ ओ प्राचीन भारतीय दर्शन ओ धर्मक व्याख्या कएलन्हि। जखन तृतीय दशकमे हुनक पुत्र पत्रिका चलओलन्हि तँ एकर अधिकांश एहि पत्रिकामे क्रम-क्रमसँ प्रकाशित भेल। किन्तु वर्तमान शताब्दीक आरम्भमे सक्रिय देशभक्त तथा थियोसोफिस्ट रूपेँ प्रख्यात भेलाह। कतोक गोष्ठीमे तँ थियासोफिकल सोसाइटीक संग हिनक संपर्के विश्वसनीयताक कारण बनल। किन्तु एनीबेसेन्टक संग हिनक मित्रता आनो-आनो संपर्कक द्वारेँ छल। ओ गाँधीक प्रशंसक नहि छलाह। आरम्भमे यद्यपि ओ टैगोरक प्रति बहुत सहानुभूतिपूर्ण नहि छलाह, किन्तु बादमे अपन मत परिवर्तित कएलन्हि। बुढ़ापामे आबि कविताक क्षेत्रमे हिनक प्रयास, विशेषतः कालिदासक अनुवाद, बहुत मूल्यवान् नहि भेल ओ हुनक पुत्रक विचारमे तँ ई जे ओकरा प्रकाशित नहि करितथि तँ नीक छल। सुधीन्द्रक विचारमे हिनक पिता पक्का वेदान्ती छलाह। ई स्वीकार करैत छथि जे अपना बाल्यकालक एकेश्वरवादक प्रति पक्षपात हिनका द्वन्द्वात्मक आधिभौतिकवादक दिशि धकेलि देलक। एहि कथनमे आलंकारिकताक मात्रा रहि सकैत छैक, किन्तु एहिमे सन्देह नहि जे ई दूनू गोटय दू दुनियाक लोक छलाह। तथापि दूनू गोटामे किछु दूर धरि मतैक्य सेहो छल, विशेषतः एहिठाम जे समाजमे मोटामोटी तर्कमूलकता चाही। एकरा अतिरिक्त दूनू गोटामे जँ मतसाम्य नहि छल तँ कम-सँ-कम एक-दोसराक प्रति सम्मानक भाव अवश्य छल। पिताक प्रति पुत्रक कृतज्ञताक मात्रा एतेक अधिक छल जे ई अपन समस्त सम्पत्तिकेँ पिताक स्मृतिरक्षार्थ नियोजित कय देल।

आइ० ए० उत्तीर्ण भेलाक बाद सुधीन्द्र ओही कॉलेजमे अंग्रेजी आनर्समे नामांकन करओलन्हि। किन्तु पछाति "पास कोर्स" मे चल गेलाह (अंग्रेजी, बंगला, अर्थशास्त्र तथा इतिहासिक संग)। अपना पुश्तक अन्य पैघ कविलोकनिक विपरीत हिनका अध्ययनक प्रति कहियो प्रबल प्रवृत्ति नहि छलन्हि, यद्यपि अपना समयक नवयुवक लोकनिमे ई सभसँ अधिक लिखल-पढ़ल लोक छलाह। जीवनानन्द दास जीवन भरि अध्यापन कएलन्हि। विष्णु दे सेहो। अमिय चक्रवर्ती एखनहुँ 'फैकल्टी'

सँ सम्बद्ध छथि। यद्यपि बुद्धदेव बोस बहुत दिन धरि केवल लिखिकेँ जीवन निर्वाह कएलन्हि, किन्तु आरम्भ कएलन्हि अध्यापन सँ। बादमे यादवपुर विश्वविद्यालयमे तुलनात्मक साहित्यक विभाग संघटित कएलन्हि जतय अध्यापनक हेतु सुधीन्द्र-नाथकेँ आमन्त्रित कएल। इएह एकमात्र एहन अवसर छल जखन सुधीन्द्रनाथ शैक्षिक संस्थानसँ सम्बद्ध रहलाह। एखनहि हमरालेकानि देखल जे अंग्रेजीक एम० ए० क हेतु हिनक प्रचेष्टा आधा मनेँ भेल छल। किन्तु बी० ए० ई उत्तीर्ण भेलाह उत्कृष्टाक संग।

ई भेल 1922 क कथा। एहि बीच अपन मातृकक संग हिनक प्रेम दाना बान्हय लागल। 12, वेलिंगटन स्क्वायर सभ दिन हिनक प्रिय स्थान छल। एहिठामक स्वाच्छन्द्य, पश्चिमी आचरण अथवा आधुनिकता हिनका घर परक कट्टरतापूर्ण वातावरणसँ भिन्न छल। एकर प्रभाव सुधीन्द्रक व्यक्तित्व पर खूब पड़ल। एक प्रकारेँ हिनकामे दूटा संस्कृतिक समन्वय छल। पूर्णतः पश्चिमी रहन-सहनक लोक बिना भेनहुँ, (एक समयमेँ स्कूली शिक्षाक हेतु हिनका इंगलैंड पठएबाक गप्प छल) हिनका दिमागमे पश्चिमी प्रवृत्ति छल ई सत्य, किन्तु देशक माटिक संग हिनक सम्बन्ध निविड़ छल। प्रायः दू मीलक दूरी पर सोझांसोझी अवस्थित दू घर कही तँ प्रतीक जेकाँ छल। ट्रामक साधारण यात्रा द्वारा श्वेत गद्दा पर श्वेततर तकियायुक्त फर्श सँ ई सजल-धजल एहन बैसिकीमेँ चल जा सकैत छलाह जाहिमे बिलियड बोर्ड ओ पुस्तकालय छलैक। ओही प्रकारेँ बंगाली भोज्य सामग्रीसँ तीन वा पाँच कोर्सक रात्रिभोजनमे। एकर अर्थ ई नहि जे पश्चिमी रहन-सहनक मल्लिक लोकनि कनेको कम देशभक्त छलाह। हिनक मामाक राष्ट्रानुरक्ति प्रख्यात छल। पूर्वहुँ हिनक मातामह भ्राता मन्मथ, जे केम्ब्रिजमे शिक्षित छलाह, केँ जखन भारत सरकारक दिशिसँ "बाबू एम० सी० मल्लिक" रूपेँ सम्बोधित कय अपमानजनक पत्र लिखल गेल तखन इहो प्रत्युत्तर मे लिखलन्हि—"बाबू एक्स० वाइ० स्मिथकेँ एम० सी० महाशयक तरफसँ।" हिनक छोट मातामहभ्राता हेम-चन्द्रकेँ कर्जन साहेबक प्रति प्रतिशोधक भावना तेना जकड़ि लेने छलन्हि जे ओ गुप्तरूपेँ बीस हजार टाका एकटा अदनाकेँ दय देल, किन्तु जखन हिनक मातामह प्रबोध मल्लिक अपन पैतृक घर छोड़लन्हि तखनसँ हुनक नवका घरमे अंग्रेजी-बंगाली वातावरण स्थिर भय गेल। मन्मथ मल्लिक अपन पढ़ाइ केम्ब्रीजमे समाप्त कएने छलाह। हेम मल्लिकक पुत्र नीरद, अपन पितियौत सुबोधक विपरीत ओक्फोर्ड वा केम्बिज तँ नहि गेलाह, किन्तु जापानक माध्यमसँ पश्चिमक प्रभावमे अवश्य अएलाह। सुधीन्द्र, सुबोध एवं नीरदक अति प्रिय भागीन छलथिन्ह किन्तु सुधीन्द्रकेँ पूरा ज्ञान होएबाक पूर्वहिं सुबोध मल्लिकक देहान्त भय गेल। किन्तु नीरदक प्रति हिनक आत्मीयता प्रगाढ़ रहल। यथार्थमे 12, वेलिंगटन स्क्वायर जाएब नित्य-कर्मे भय गेल। हुनक पिताक पिता अपन देयाद लोकनिकेँ छोड़ि मुक्ताराम बाबूसँ

स्ट्रीट परक सुविस्तृत मकानसँ भिन्न प्रकारक मकान बनाओल। उदाहरणार्थ, परिवारक चिनबाड़ पर कहियो पशुवलि नहि पड़ल। यथार्थमे ई कोनो आन हिन्दूक मकान जेकाँ छल। एतहि 12, वेलिंगटन स्क्वायरक बालक सुधीन्द्रक लग भिन्न दृश्य उपस्थित होइत छल। एहिठाम हिनक किछु अधलाह अभ्यासक उल्लेख करब अनुचित नहि होएत। 139, कार्नवालिस स्ट्रीटमे धूम्रपान अपराधमे परिगणित छल, तथापि ओही अवधिमे ई धूम्रपान आरम्भ कएल। पश्चिमी पोशाकक सम्बन्धमे सेहो इएह बात। अन्य प्रकारेँ अनेक उत्साहवर्धक परिस्थिति रहनहुँ किशोरावस्थाक उदयक संग जाहि कोनो अड़चनक बोध हिनका होइत छल से एहिठाम उठि गेल। की एहिसँ किछु उन्मुक्तता सेहो आएल ?

बुझना जाइछ जे 1922 मे छन्द रचनाक क्षेत्रमे ई अतिरिक्त प्रयास कएने होएताह यद्यपि उपलब्ध दैनन्दिनीक अनुसार एकर समय किछु बादमे अबैत अछि। हिनका छोट पुर्जा-पुर्जी पर लिखबाक अभ्यास छल। यथार्थमे हिनक पहिल नोट-बुक अंशतः प्रतिलिपि थीक तथा असम्भव नहि जे एहि पुर्जा-पुर्जीमे सँ किछु भोति-आय गेल हो। कदाचित् किछु नष्टो भय गेल हो। 1922 मे ई एक संग तीनटा कार्य आरम्भ कएलन्हि—कलकत्ता विश्वविद्यालयमे एम.ए.क पढ़ाइ, कानूनक पढ़ाइ ओ पिताक अधीन एटर्नीशिपक हेतु आर्टिकल क्लर्कक काज। ई विचारैत जे आत्म-संयमक हेतु कठोर कार्यक्रम पालन करबाक ई अभ्यासी नहि छलाह, उपर्युक्त उद्देश्य बहुत पैघ छल। फलो निराशाजनक भेल, कारण जे एक वर्षक बाद एम० ए० क्लासमे जाएब बन्द कय देलन्हि यद्यपि कानूनक पढ़ाइ आओर एक वर्ष चल-ओलन्हि ओ आर्टिकिल क्लर्कक काज पाँच वर्ष धरि, किन्तु परीक्षा एकोटा नहि देलन्हि। प्रसंगक्रमेँ उल्लेखनीय जे किशोरक हेतु लिखित हिनक एक सँ अधिक गल्पक नायक छथि अटर्नीशिपक रंगसूट जे निश्चित रूपेँ छथि एहि कार्यक हेतु अनुपयुक्त। किन्तु ई प्रतिकूलता कोनो विकट रूप नहि लय सकल, कारण जे हिनक पिता अपना ज्येष्ठपुत्रसँ अधिक आधिभौतिक उन्नतिक आशा कएनहि नहि छलाह। हिनक स्वाभाविक प्रवृत्तिक प्रति हुनक सहानुभूति छल यद्यपि ओ अवश्य चाहैत छलाह जे सुधीन्द्र एहन कोनो हुनर सीखथि जाहिसँ भरण-पोषण भय सकन्हि।

अंग्रेजीमे एम० ए० नहि देवाक कोनो विशेष कारण छल ? एकटा घटना घटल। एकबेरि एकटा अध्यापक हिनका क्लासमे "चौसर" पढ़एक हेतु कहलथन्हि। ई अनिच्छासँ पढ़लन्हि। दोसर बेरि आओर अधिक अनिच्छासँ। तेसर बेरि अड़ि गेलाह—"नहि, स्कूलक छात्र जेकाँ हम बारम्बार नहि पढ़ब।" ई अध्यापक छलाह प्रफुल्ल घोष, कलकत्तामे अंग्रेजी शिक्षणमे सुविख्यात। ओ अपना वर्गसँ सुधीन्द्रकेँ निकालि देल। हिनका वाइस-चान्सेलरक कार्यालयमेँ बजाओल गेल। महान् वाइस-चान्सेलर आशुतोष मुखर्जी हिनका अध्यापकसँ क्षमायाचना करय कहल थिन्ह। सुधीन्द्र आपत्तिक संग क्षमायाचना कएल। प्रोफेसर घोषक क्लासमे ई फिरिकेँ

गेलाह की नहि ? अथवा जाएब वन्दे कय देलन्हि ? प्रोफेसर घोष सुधीन्द्रकेँ एहि द्वारेँ पढ़य कहने होइथिन्ह जे ई "चौसर" नीक पढ़ि सकैत छलाह। हिनक आवाज पुष्ट छल ओ ई बुझिकेँ आवेगक संग पढ़ि सकैत छलाह। जे केयो हारवर्ड विश्व-विद्यालयक लेमैन्ट पुस्तकालय सँ अनूदित हिज मास्टर्स वायसक अलबम सुनने होएताह तनिका हिनक उच्चारण सम्बन्धी अनुवादक नमूना अवश्य मन पड़ि जए-तन्हि।

अंग्रेजीक दोसर प्रसिद्ध अध्यापक प्रोफेसर पार्सीवलक कालेज स्ट्रीटक वाइ० एम० सी० ए० मे एकटा अध्यापनक गोष्ठी छल। सुधीन्द्रनाथ ओहिमे जाथि, किन्तु इहो क्रम बहुत दिन नहि चलल। किन्तु एहि क्रमबद्ध पाठक कमीक पूर्ति भेल हिनक प्रचुर अध्ययनसँ। एकरा अतिरिक्त 1922-23 मे ई फ्रेंच सीखब अवश्य आरम्भ कएने होएताह, कारणजे हिनक उपलब्ध "नोटबुक" मे प्रसिद्ध वालेनक कविताक अनुवाद अछि। इएह ओ समय थीक जखन रवीन्द्रनाथक ओहिठाम प्रायः जाएब आरम्भ कएने होएताह। जोरासाँको समीपहिमे छल ओ हिनक पिता रवीन्द्रनाथ सँ परिचित छलाह। हिनक प्रारंभिक कविता ई प्रमाणित करत जे रवीन्द्रनाथक संग सम्पर्क हिनक कविताकेँ उसकओलक। ई उचिते जे बादमे कविताक अपन प्रथम पुस्तककेँ "विनम्रतापूर्वक रवीन्द्रनाथकेँ" ई उत्सर्ग करथि।

निबन्धक हिनक द्वितीय पुस्तक जे हिनक जीवन कालमे प्रकाशित भेल एहि उल्लेखक संग उत्सर्गित भेल—"हमर प्रथम पाठकमे सँ एक श्री धीरेन्द्रनाथ मित्रकेँ जे अप्रतिम धैर्य एवं सहानुभूति देखओलन्हि।" हिनक प्रसिद्ध काव्यमेसँ एक "औरकेष्ट्रा" जकरा आधार पर दोसर पुस्तकक नामकरण भेल, उत्स-र्गित भेल मित्र श्रीअपूर्व कुमार चाँदेकेँ। ई दूनू गोटय परिवारक बाहरक ओ मित्र छलाह जनिका ई आरम्भहिमे चुनलन्हि। किन्तु दूनू गोटय हिनक सम्बन्धिक सेहो छलथिन्ह। धीरेन्द्रनाथक विवाह छल हिनक ममियौत बहिनि सुबोध मल्लिकक कन्यासँ तथा अपूर्व चाँदक नीरद मल्लिकक बहिनिक कन्यासँ। धीरेन्द्रनाथक प्रति, जे हिनका पिता-माताक सेहो प्रियपात्र छलाह, हिनक आकर्षण प्रबल छल। हिनकहि द्वारा दोसरो मूल्यवान् मैत्री हिनका प्राप्त भेल। अर्थात् पदार्थ विद्याविद् सत्येन्द्रनाथ बोसक, जनिका हिनक पुस्तक "औरकेष्ट्रा" समर्पित भेल। जँ सुधीन्द्र प्रचुर मात्रामे स्नेह देखा सकैत छलाह तँ सत्येन्द्रनाथो एहिमे कम नहि छलाह। दूनू गोटामे अनेक वर्षक अन्तर रहितहुँ, हिनका लोकनिक बीच मित्रता स्पृहणीय छल। ओ मित्रता प्रायः दू दशक धरि चलल। जे केयो सुधीन्द्र-नाथक दाहसंस्कारक काल उपस्थित छलाह ओ गवाही दय सकैत छथि जे पाकल केशक पदार्थशास्त्रविद् सत्येन्द्रनाथ अधपक्कू केशक कविक प्रति कते भाव-विह्वल श्रद्धांजलि निवेदित कएल।

औपचारिक शिक्षासँ फराक भय जाएब, कानून सम्बन्धी जीविकाक प्रति

उदासीनता तथा बाहरक लोकक संग मित्रतासँ स्पष्ट छल जे सुधीन्द्र वयस्क भय चुकल छलाह। अतएव कथमपि सम्भव नहि छल जे बुझओलासँ एहि प्रतिभावान् आधुनिक लोक द्वारा एम० ए० उपाधि अथवा ओकालतिक पासपोर्टक प्रयोजन स्वीकृत कराओल जाय। एकटा विषय आओर छल जकरा सम्बन्धमे बुझाएब-सुझाएव आवश्यक छलैक—यथार्थतः नीके जेकाँ—कारणजे सुधीन्द्र एखनहुँ विवाह करबाक हेतु प्रस्तुत नहि छलाह। हिनक परिवारक मतेँ हिनक वयस विवाहक उपयुक्त भय चुकल छल। अनिच्छाक संग विवाह हिनक किशोरावस्थाक कथा लेखनक विषय-वस्तु छल। एक वा दू प्रस्तावक प्रत्याख्यान सुधीन्द्रनाथ कय देल। किन्तु गुरुजनक आग्रह बनले रहल, कम-सँ-कम कन्याकेँ तँ देखि लेथु, तखन निर्णय करथु। ओ सहमत भेलाह। तदनुसार गेलाह ओ कन्याकेँ देखलन्हि। कन्या पसिन्न भेलन्हि। विवाह करबाक हेतु सहमति देल।

ई छलीह छविरानी भोस 72, कार्नवालिस स्ट्रीटक सरोजेन्द्र भोसक कन्या। एहि परिवारक सम्बन्ध सभ नीक छल—सत्कुल एवं समृद्ध। छविरानी छलीह लम्बा, गौरवर्णा, नीक गढ़निकेर। वयसक दृष्टिएँ विकशित, पन्द्रह वर्षक। सुधीन्द्रक ठीक अनुरूप जे स्वयं लम्बा, गौरवर्ण, सुन्दर छलाह। ककरो-ककरो दृष्टिएँ रक्त सम्बन्धी जेकाँ बुझना जाइत छलाह। किन्तु एक दृष्टिएँ जोड़ी छल असमान। छविकेँ ने तँ अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त छल, ने अनुभववैविध्ये। ई सत्य जे हिन्दू विवाहमे एकर बहुत मूल्य नहि छैक। सुधीन्द्रक माय सेहो तँ एहि दृष्टिएँ बहुत नीक नहि छलीह। यथार्थमे हुनक विवाह बहुत काँच वएसमे भेल छल-नओ वर्ष। किन्तु हीरेन्द्रनाथ ओ सुधीन्द्रमे एहिठाम अन्तर अछि। सुधीन्द्र ई आशा करैत छलाह जे हिनक स्त्री हिनक द्रुत पसरैत दुनियांक सँग मेल राखि चलतीह—केवल पुत्रवधू अथवा अन्दर हवेलीक सर्वसत्तासम्पन्न मलिकाइन भय नहि रहि जइतीह। पारम्परिक एहि हिन्दू परिवारक चारूकात एक अलक्ष्य देबाल अवश्य छल जकरा दिशि पश्चिमी दिमागक पूर्वीय लोकक ध्यान सतत नहि जाइत छलैक। किन्तु सुधीन्द्रनाथ एकटा एहन सुच्चा आधुनिक लोक छलाह जनिक इच्छा छल जे हिनक स्त्री हिनक जीवनमे पूर्ण भाग लेथु। जे होअओ, 1924 मे एहि प्रश्नक समाधान आवश्यक नहि छल। विवाह उद्घोषित भय गेल। हर्षोल्लास आओर बढ़ि गेल एहि हेतु जे हिनक भाय हरीन्द्रनाथक विवाह एही समयमे स्थिर भय गेल। सुधीन्द्रनाथक विवाह भेल 22 जुलाइकेँ ओ हिनक भायक एक दिन बाद। हीरेन्द्रनाथ उपरका महलमे दूटा कोठली आओर जोड़ि देलन्हि। 1925क मइमे सुधीन्द्रक स्त्री एक मुइल बच्चाकेँ जन्म देलन्हि।

सुधीन्द्रनाथक उपलब्ध नोटबुकमे सँ पहिल 1923 सँ आरम्भ होइत अछि। एकर मुख्य पृष्ठ पर बँगाक्षरमे अँकित—"दुर्गामाता सहाय होथु"—"रचना।" श्री सुधीन्द्रनाथ दत्त। नं० 139, कार्नवालिस स्ट्रीट। सुधीन्द्रनाथक मृत्युक बाद

सुधीन्द्रनाथक जे कविता संग्रह प्रकाशित भेल तकरा भूमिकामे बुद्धदेव बोस एहि तथ्यक दिशि हमरालोकनिक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि ओ संकेत देलन्हि जे एहि प्रकारक आरम्भ एक अर्थमे सुधीन्द्रक साहित्यिक जीवनक प्रतीक छल—जड पदार्थक विरुद्ध सचेतन बुद्धिक अन्तहीन युद्ध। एहिमे अक्षर छल गृहव्यवस्थापक विभूति मुखर्जीक जनिका युवक कवि अपन पुरान रचनाक नकल करएक हेतु प्रायः आदेश देने छलाह। देवीक प्रार्थना प्रायः लिपिकार अपना दिशिसँ जोड़ि देल। बादक नोट बुकमे सुधीन्द्र स्वयं लिखने छथि, किन्तु एहिमे दुर्गामाता तथा "रचना"क कोनो उल्लेख नहि। पहिल नोटबुकमे दू वा तीन अनुवादक सँग किछु कविता छल। संगहि तीनटा गल्प। कविताक विषयवस्तु अनेक प्रकारक अछि-सामान्यतः किछु विषादपरक। एहिसँ 19म शताब्दीक यूरोपीय कविताक प्रभाव द्योतित होइछ। छन्दक दृष्टिएँ नियन्त्रण अनिश्चित अछि। एहिसँ बुझबामे अबैछ जे कवि एखन लिखिये रहल छलाह। यथार्थमे एतय संस्कृतक मन्दाक्रान्ताक अभ्यास देखना जाइछ। अनुवादमेसँ अछि लैण्डरक एकटा कविता। किन्तु एहिसँ रोचक बात ई जे, जेना कहिचुकल छी, "वर्लेन"क कविता क अनुवाद सेहो एहिमे अछि। ई स्वाभाविक जे सुधीन्द्रनाथक, जे बादमे फ्रान्सक प्रतीक काव्यक प्रतिष्ठित अनुवादक बनलाह, प्रारम्भिक प्रयास होअय वर्लेनक कविताक अनुवाद द्वारा। हिनक पहिल नोटबुकक तथा प्रारम्भिक अन्य नोटबुकक सम्बन्धमे महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे ई कथासाहित्यिक रचनाक दिशामे चेष्टा कएलन्हि। अन्यथा आइ के स्वीकार करैत जे सुधीन्द्रनाथ उपन्यासकार, अथवा गल्पकार भय सकैत छलाह। ओ चेष्टा करैत गेलाह तथा अनेक गल्प लिखबो कएलन्हि। हिनक पहिल गल्प, जे पहिल नोटबुकमे निबद्ध अछि, अर्थात् इंगलैंडक यात्रा। ई जेना किछु आत्मजीवनक विवरणक दिशि संकेत करैत हो। ओही प्रकारें दोसर, तेसर आओर चारिममे। ई सभ न्यूनाधिक मात्रामे किशोरोपयुक्त अछि—लेखकक आन्तरिक इच्छापूर्तिक दिशामे सत्प्रयास। जे होअओ, कैशोरगद्य रूपेँ सेहो ई रोचक अछि—हिनक बादक आलोचनात्मक गद्यक विपरीत केवल ठेंठ नहि, कखनहुँकेँ गतिशील सेहो।

द्वितीय नोटबुक ओही समयक थीक जकर प्रथम नोटबुक अर्थात् 1923क। यथार्थमे द्वितीय नोटबुकमे प्रथम नोटबुकक कतोक कविता हूबहू राखि देल गेल। सम्भव थीक जे दूनू पर एकें संग लिखय लागल होथि। द्वितीयमे प्रायः एकटा दीर्घ वर्णनात्मक कविता अछि—एहन कविताक प्रथम प्रयास। आओर अछि छोट कविता सभ तथा कथा। द्वितीय नोटबुक आरम्भ होइछ 1923क उत्तरार्धसँ। ई 1924 धरि चल जाइछ। एहिमे केवल कविता अछि—ओहिमे तँ कतोक कविताकेँ पैघ कहि सकैत छी। किछु कविता कथोपकथनक रूपमे अछि जकर कथानक लेल गेल अछि पुराणसँ। उर्वशी आएल अछि दूटामे। निःसन्देह आदर्श छल टैगोरक एही प्रकारक पद्यरचना—जेना कर्ण-कुन्ती सम्वाद। तृतीय नोटबुकक

अवशिष्ट अंशमे अछि व्यक्तिपरक गीतिरचना। हँ, एकटा छोट गीत अछि—शेलीक अनुवाद।

एकरा बादक चतुर्थ नोटबुक थीक 1924क। एहिमे सँ चारिटा कविता बादमे संशोधित भय किशोर सभक लेल एकटा पुस्तकमे संगृहीत भेल। एकरा अतिरिक्त एहिमे दू टा पैंघ रचना अछि। एहिमे सं एकटा ठीक हिनक विवाहक बाद लिखल गेल। जेना स्वाभाविक अवशिष्ट छोट अछि। किन्तु जे प्रेम हिनक कविताक उपजीव्य छल ओ विवाहक बाद की नव अर्थ पओलक···प्रायः एकटा याथार्थ्य जे पहिने नहि छलैक? पाँचम नोटबुक एहि सभक उत्तर दय सकैत अछि, कारण जे एकर आरम्भ होइत अछि विवाहक दू मास बाद सँ ओ अग्रिम वर्ष धरि चल जाइछ। छठम नोटबुक जे विवाहक दोसर वर्षकेँ व्याप्त कएने अछि, सातम नोट-बुक सेहो 1926 सँ 28क पहिल किछु अंश सँ सम्बन्ध रखैछ अर्थात्, हिनक रचना तन्वीसँ जे हिनक प्रथम कवितापुस्तक थीक ओ जकर रचना उपर्युक्त तीन नोट-बुकसँ संगृहीत अछि।

तन्वी 1930मे प्रकाशित भेल। किन्तु जेँ हेतु एहिमे संगृहीत कविता तन्वीकेँ छोड़ि, जे बाद मे जोड़ल गेल, 1924-27क बीच रचित भेल, तें एतय ओकरा ऊपर विचार कएल जा सकैत अछि। एकरा सुधीन्द्रनाथक "काव्यसंग्रहक" अन्तमे राखल गेल, कारण जे बिना संशोधन कएने ओ एकर पुनः प्रकाशन नहि करितथि। संगहि जेँ हेतु ई हिनक प्रथम पुस्तक छल तेँ एहिमे वएह लोकनि रुचि लय सकैत छलाह जे हिनकासँ परिचित छलाह। ई सत्य जे तन्वी सर्वत्र परिपक्वताक परिचय नहि दैछ, इहो सत्य जे तन्वीक स्वर सम्पूर्ण प्रामाणिकताक स्वर नहि थीक, किन्तु एहिमे प्रामाणिकताक अंश अवश्य छैक। निःसन्देह ओ रचना केवल एकटा घटिया दर्जाक कविक नहि थीक जे एहिसँ नीक लिखिये नहि सकैल छल—एकटा सामान्य विषयकेँ लय सामान्य रीतिएँ लिखि देल। एकर अट्ठाइस कवितामे सँ कतोक निःसन्देह बुद्धिपूर्वक काटिछाँटिकेँ लिखल गेल अछि, किन्तु एहिमे कतोक एहनो कविता अछि जे सोझ-सोझ हिनक मनोदशाकेँ व्यक्त करैछ। एहिमे सँ अधिकाँशक विषयवस्तु छैक प्रेम ओ एहि क्रममे जाहि प्रेमिकाकेँ उजागर कएल गेल अछि ओ सम्भवतः थिकीह हिनक स्त्री। एहिमे पहिल भावोद्रेकक चिह्न अछि, किन्तु एहिमे जे भावना प्रमुख छैक ओ थीक एक प्रकारक मोहभंग वा ई बोध जे सभ वस्तु रहितहुँ मूल्यवान् किछु पड़ा गेल। कविताक गुच्छ एहि धारणाकेँ बनबैत अछि, विशेषतः "वास्तरिक"—शीर्षकक कविता जे विवाहक एक वर्ष बाद लिखल गेल। एहिमे एकटा व्यापक निराशाक भाव अछि। जे निराशा सुधीन्द्रनाथक कविताकेँ जीवन भरि व्याप्त कएने रहल तकर आरम्भ प्रायः एतहि भेल। कवितारूपेँ ई बहुत मूल्यवान् नहि अछि—एकर स्वरूप पारम्परिक छैक, किन्तु स्मरणीय जे तन्वीक कविताक स्वरूपे पारम्परिक छैक। एकटा दोसरो कविता जकर नाम अछि

"अनाहूत" देखबामे आत्मकथात्मक लगैत अछि, कनेक घुमा-फिराकेँ। हमरा सन्देह होइत अछि जे ई हिनक ओहि नेनाक सम्बन्धमे अछि जे मुइल जनमल—विषण्ण किन्तु इन्द्रियगोचर। सुधीन्द्रनाथक निःसन्तान रहि जएबाक सम्भावना छल, कारण जे हिनक दोसरो विवाहसँ कोनो सन्तान नहि भेल। एहि दृष्टिएँ एहि कविताक मर्म किछु व्यापक रूपक छैक। कविताक स्वरूप पूरा-पूरी टैगोर जेकाँ अछि। "वर्षशेषक" अनुकृति। शब्दावलीक प्रयोग सेहो ओहिना अछि, किन्तु प्रारम्भक शून्यभाव सुधीन्द्रनाथक अपन थीक। तथापि ई कविता, एकर पहिलुक एकटा तथा कतोक दोसर कविता प्रामाणिक कविरूपेँ हिनका प्रतिष्ठित कय देलक। ई सत्य जे हिनक कोनो अपन शैली स्थिर नहि भेल छल तथा जे केयो पछातिक हिनक कविता जनैत-बुझैत छथि ओ एकरा हिनक कवितारूपेँ स्वीकार नहि करताह, तथापि जतय ई भावनाकेँ स्वाभाविक ढँगेँ अभिव्यक्त कएलन्हि अछि ओकर स्वर असंदिग्धरूपेँ हिनक अपन थिकन्हि। चतुर्दशपदी रचनामे ओतेक नहि। ओ किछु शब्दाडम्बरयुक्त अछि। तथापि छन्द सुडौल छैक ओ स्वरूप लचकदार।

तन्वी बाल साहित्य नहि थीक। ई थीक कैशोर जँ से कहलासँ अन्तरक बोध होइक। दोसर शब्दमे तन्वी अपना स्थितिमे पूर्ण विश्वासी नहि अछि। एकर रचयिता एखन अभ्यासे कय रहल छथि। स्थिति ई जे पहिल चारि नोटबुक ओ वर्तमान तीन नोटबुकक बीच ई मोटामोटी अपन अनुभवकेँ स्थिर कएलन्हि। ई निश्चित जे एखन एहिमे बहुत गति नहि छैक—तात्पर्यार्थ छैक अत्यन्त समीपक। किन्तु एहिमे निहित अनुभूति कोनो कल्पित वस्तु नहि थीक जकर आधार होइक कोनो आन कविक रचना। संभव थीक जे एही सभ कारणसँ टैगोर तन्वीकेँ अपन स्वीकृति दय एकर प्रकाशनक अनुमोदन कएल। प्रायः एही कारणसँ ई उचित जे हमरालोकनि अतिरिक्त रचनारूपेँ नहि, प्रत्युत हिनक प्रथम काव्य पुस्तकरूपेँ एकर पाठ करी। जँ हमरालोकनि विशेषज्ञ थिकहुँ तँ उचित जे एतहि सँ प्रारम्भ करी, जँ साधारण पाठक थिकहुँ तँ प्रायः उचित होएत जे हिनक अन्य काव्यपुस्तक, उदाहरणार्थ "आर्केस्ट्रा", केँ पढ़ि तखन एकरा पढ़ी।

2

तन्वीक प्रकाशन भेल 1930मे। एहि समय धरि आबि सुधीन्द्रनाथ उत्तरी अमेरिका तथा यूरोपक यात्रा समाप्त कय फिरि आएल छलाह—एकटा विशेष यात्रा, कारणजे ई यात्रा कएलन्हि टैगोरक संग। यूरोप जएबाक विचार ई पहिनहुँ कएने छलाह, विशेषत: बी० ए० क बाद, किन्तु हिनक पिता आपत्ति कएल। इंगलैण्डसँ बारिस्टर होएबाक बदलामे हिनका कलकत्तहिमे ओकीलक संग लगा देल गेल, यद्यपि फल किछु नहि भेल। गप्प तँ एहिसँ पूर्वहुँ छलैक 1912 मे जे इंगलैण्डक पब्लिक स्कूल मे ई जाथि। ओहि समय मे किन्तु हिनक माम सुबोध मल्लिक, जे स्वयं केम्ब्रिजक छात्र रहि चुकल छलाह, मना कएल। किन्तु 1929मे कोनो दिशिसँ वर्जन नहि भेल। एकर विपरीत जँ ई किछु दिनसँ अस्वस्थ छलाह, ई सोचल गेल जे यात्रा स्वास्थ्यक दृष्टिएँ लाभप्रद होएत। दू गोटय आओर टैगोरक संग यात्रा कएलन्हि—टैगोरक यात्रा-सचिवक रूपेँ सुधीन्द्रक मित्र अपूर्व चाँद तथा अमेरिकन मेथोडिस्ट वायड सी० टकर जनिका अपन मीशन द्वारा विश्वभारतीक सेवार्थ पठाओल गेल छल। टैगोर जाय रहल छलाह वानकोवर जतयक शिक्षा सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु हुनका आमंत्रित कएल गेल छल।

मइ 1928मे सुधीन्द्र एकटा नोटबुक किनलन्हि। राँची ई अपना पत्नीक संग गेल छलाह स्वास्थ्य लाभक दृष्टिएँ, विवाहक बाद दोसर बेरि। वर्षक अन्त धरि ई किछुए कविता लिखलन्हि। किन्तु एहिमे एकटा छल "कौआ" जकरा पर टैगोरसँ ई एकटा बाजी जितलन्हि। आधुनिक काव्य पर दून गोटाक बीच वाद-विवाद भेल। टैगोरक धारणा छल जे जे कोनो विषय कविताक उपयुक्त नहि भय सकैछ-अत: एतहि आधुनिक कवितामे त्रुटि आबि जाइछ। किन्तु सुधीन्द्र कहल-थिन्ह जे विषयक कोनो महत्त्व नहि, महत्त्व छैक अन्तर्निहित अनुभूतिक। टैगोरक धारणा जे एहन विषय जेना "कौआ" पर केयो कविता कोना लिखत। सुधीन्द्र कहलथिन्ह जे ओ लिखि सकैत छथि। तदनुसार लिखबो कएलन्हि। रवीन्द्रनाथ स्वीकार कएलन्हि जे कविता नीक भेल—ओ पराजय स्वीकार कएल। एकरा ओ प्रकाशनार्थ "प्रवासी" में पठाओल। ओ सितम्बर-अक्टूबर 1928 (व० सन 13-

35) मे प्रकाशित भेल। ओ हिनक दोसर प्रकाशन छल, यथार्थमे प्रथमे, कारण जे बाल्यावस्थामे टेनीशनक हिनक प्रथम अनुवाद जकरा संग हिनक नामो धरि जुटल नहि छल, के पढ़ने होएत ? कौआ पर हिनक कविता थोड़ेक चाँचल्यक सृष्टि कएलक। तीव्र साप्ताहिक शनिवासरीय चिट्ठी जकर उद्देश्ये छलैक कखनहुँ कें अग्रणी समेत आधुनिकताक विरुद्ध निर्मम अभियान चलाएब, अपन मुखपृष्ठ पर कौआक रेखाचित्र दय प्रसंगकें लेलक ओ अपन पारम्परिक ढंग सँ एकटा विद्रूपिका प्रकाशित कएलक। जँ मूल कविताक रुक्षता तथा असामान्य शब्दावली उल्लेखनीय छल तँ विद्रूपिका ओकरा चरम सीमा धरि पहुँचा देलक। जे होअओ, एहिसँ सुधीन्द्रनाथक सोझाँ विषयसूची खुजि गेल, संगहि एकटा कर्त्तव्यमार्ग सेहो।

हिनका हेतु ओ समस्यामे सँ एकटा छल। कानून कें, जे हिनका पिताक पेशा छल, स्वीकार करएक हेतु ओ हिनका कहैत छलथिन्ह, किन्तु ओहिमे हिनका रुचि नहि। ई सत्य जे 1928-29 मे दैनिक "फारवर्ड" क सम्पादकीय टेबुल पर ई अवैतनिक रूपमे पत्रकारिताक कार्य करैत छलाह तथा ओहि वर्षक भारतीय राष्ट्रिय काँग्रेस अधिवेशनक प्रचार-दलक संग सम्बद्ध छलाह, किन्तु पत्रकारिता अथवा राजनीतिक प्रति हिनका की कोनो रुचि छलन्हि ? अथवा 1925 सँ नवीन अवस्थामे बहराइत प्रतिष्ठित साहित्यिक समीक्षा सबुज पत्रक संग हिनक सम्बन्ध कतेक निविड़ छल ? की हिनक वैविध्यपरक अध्ययनक कोनो तात्कालिक उद्देश्य छलैक ? हिनक सातम नोट बुकक मुखपृष्ठक भीतरी अंश पर हिनक लिखल एकटा विद्रोही साहित्यकारक सूची अछि। की ई केवल उत्सुकतावश छल अथवा हिनक अपन वा अपना पुश्तक घोषणापत्रक तैयारीक क्रममे छल ? किन्तु बुझना जाइछ जे "प्रवासी" क कविताक संग हिनकामे एकटा प्रतिबद्धता आबि गेल। एहि अवधिमे युनिभरसीटी इन्सीट्यूटमे एकटा साहित्यिक सम्मेलनमे, जकर सभापतित्व अतुलचन्द्र गुप्त कएल, सुधीन्द्र एकटा निबन्धक पाठ कएलन्हि। ई नव कविताक प्रेरक तत्वक पहिल व्यवस्थापन छल। बादमे अपन पत्रिकाक प्रथम अंकमे एकरहि संशोधित रूपें ई प्रकाशित कएलन्हि। एकर आरम्भ एना भेल :

कविता थीक आद्य प्रवृत्ति। अथवा जँ हमरा लोकनिक वैज्ञानिक धारणाकें चोट पहुँचाबय नहि चाही तँ एना हम कहि सकैत छी जे कविताक जन्म ठीक ओहि-दिन भेल जाहि दिन आदिम मनुष्य ताल-लयबद्ध आवाजकें विभिन्न वस्तु एवं विभिन्न आवेगक संग अटूट तागसँ जोड़लक। ई भेल हजारक हजार वर्ष पूर्व। बादमे मनुष्यक भाषा क्रम-क्रमसँ विकशित भेल। आब मनुष्य देखलक जे ओहि वाक्य मे अनियमित विराम नहि छैक तथा जे अनायास स्मृति मे अटकि जाइछ। एहि आरम्भसँ लय बादक कविताक विकाशक अटकर लगाएब सोझ अछि। सुस्तें-सुस्तें एतय-ओतय एक-दू कयकें एहन लोकक दर्शन होबय लागल होएत जनिक कल्पनाशक्ति दोसराक अपेक्षा तीव्रतर छल ओ स्मरणशक्ति सामान्य लोकक

स्मरणशक्तिक अपेक्षा प्रबल—एहन प्रबल जे कोनो शुभ अवसर पर स्मरणीय घटनाक वर्णन, कखनहुँ समवेत लोकक मौन प्रशंसाक बीच, कखनहुँ लोकक योग-दानक बीच कय सकय। सुस्ते-सुस्ते जखन दल जातिक रूप धएलक, लोक अपन दैनिक काजकेँ विभिन्न पेशाक रूप देलक ओ गतिनायकक अस्थिर स्थानकेँ लय लेलक चारण। आजुक कवि ओही चारणक वंशधर थिकाह।

काव्यक मुक्तिक एहि घोषणा-पत्रक संग सुधीन्द्रनाथ अपन भावनाकेँ रूपायित करैत निःसंगताक स्थितिसँ अपना समयक अवबोधकसंग ऐतिहासिक पुरुष बनि गेलाह। ई विचार रवीन्द्र-परम्परासँ विरुद्ध छल। जँ आधुनिक कविता नामक एहि समयक टैगोरक निबंधसँ एकर मिलान कएल जाय तँ अन्तर स्पष्ट भय जाएत। तन्वीक कविता सभमे अर्थात् ओहि कविता सभमे जे थोड़ेक पहिने लिखल गेल छल, ई टैगोरक अनुसरण कएने होथु, किन्तु कुकुक्ट केँ केयो टैगोरक रचना नहि कहि सकैत अछि-अथवा हुनक चेलामे सँ ककरो। प्रत्युत देखबामे भिन्न होइतहुँ एकरा जीवनानन्दक प्रारम्भिक रचना मानल जा सकैछ अथवा अमिय चक्रवर्तीक अथवा बुद्धदेव बोसक ओहि रचनामे सँ कोनो जे "वन्दीक वन्दना"क रूपमे शीघ्र प्रकाशित होबयवाला छल अथवा विष्णु दे केर जे शीघ्रे आबयवाला छल। ई तथ्य जे टैगोर हिनक पाँडुलिपि पढ़ि किछु संशोधनो कएलन्हि, एहि सभसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैछ।

ई गुण ओहू सभ कविताक थिकैक जे 1928मे रचित भेल ओ आठम नोट-बुकमे सँगृहीत। हिनक भाय हरीन्द्रनाथक अनुसार प्रवासीमे सफलताक बाद ई अपन कविताक रचना समान प्रसिद्धिक "भारतवर्ष" मे पठओलन्हि, किन्तु "भारतवर्ष" ओकरा अस्वीकृत कय देलक। ई तथ्य जे ई रचना सभ कर्कश नहि छल, प्रत्युत संगतिपूर्ण, स्पष्ट कय देलक जे 1928 एवं 34 क बीच ओतेक अन्तर नहि छल। सुधीन्द्रनाथ वयस्क भय चुकल छलाह। किन्तु किछु अन्तरो अवश्य आएल। 1929मे उत्तरी अमेरिका तथा यूरोपक यात्राक क्रममे हिनक कविताक अनुभूति-निविड़ता बढ़ि गेल—ई शत-प्रतिशत प्रामाणिक भय गेल। एकर ई परित्याग नहि कय सकैत छलाह। हिनक काव्य रचनाक गति शिथिल भय जाओ, किन्तु अनुभूतिक प्रामाणिकता रचनावधि पर्यन्त बनल रहल। 1929मे जे आगि जराओल गेल ओ स्थिर भय रहि गेल।

सुधीन्द्र टैगोरक संग यात्राक हेतु अपन वस्तुजातक संग अपन आठम नोटबुक सेहो लय लेलन्हि। संगहि आओरो एकटा नोटबुक। 26 फरवरीकेँ ओ लोकनि ट्रेनसँ बम्बईक हेतु विदा भेलाह। मार्च मेँ "एस० एस० जलडेरा" द्वारा यात्रा कएल। एकर विवरण दैत "टाइम्स ऑफ इण्डिया" सुधीन्द्र एवं अपूर्व चाँदक संग टैगोरक फोटो देलक। ई लोकनि कोलम्बो जाय पहिल बेरि अटकलाह। ओतयसँ पेनंग, सिंगापुर, हौंकौं तथा संघाइ होइत जापान। सुधीन्द्र सोचने छलाह जे एकटा

यात्रा-दैनन्दिनी लिखल जाय। कोलम्बो छोड़लाक बाद ई अपन नवम नोटबुकमे एकठाम लिखलन्हि—मात्र एक प्रविष्टि। एकर प्रसंग छल संस्कृति—पश्चिमसँ सुसभ्य मानकक आशा पर। "पश्चिमसँ हमरा लोकनि उदारतावाद सिखलहुँ ओ तेँ जखन अन्ध अभ्याससँ प्रेरित भय पश्चिम स्वयं अनुदारवृत्ति देखबैत अछि तखन एहि प्रकारक आचरण दूगुना गर्हित भय जाइछ। जँ उचित निरीक्षण-परीक्षणक बाद पश्चिम हमरा त्याज्य बुझय तँ हमरा कोनो आपत्ति नहि होएत। किन्तु बिना निरीक्षण-परीक्षणक जँ ओ हमरा मात्र कृपापात्र बुझय तँ हमरा सह्य नहि भय सकैछ।" एहि क्रोधक पाछाँ अवश्य कोनो उपयुक्त कारण रहल होएतैक। एकरा संग की टैगोरक सेहो सम्पर्क छल? की एकर कारण छल कोनो गोरा सहयात्री अथवा व्यवस्थापक दिशिसँ जातिगत अपमान? सुधीन्द्र एखनहुँ पश्चिमेक प्रशंसक छलाह। ई जातिगत दूरत्वकेँ सह्य कय सकैत छलाह, किन्तु उद्धतता कथमपि नहि। बादमे ई वैचारिक गहनता प्राप्त कएलन्हि। उदाहरणार्थ, 56 वर्षक वयसमे लिखत गेल हिनक असमाप्त "आत्मकथा" मे पूर्व-पश्चिमक सम्बन्धक विषयमे हिनक सूझि-बूझिपूर्ण टिप्पणी अंकित अछि। जे होअओ, 1929क आरम्भमे हिनक यात्रा-टिप्पणी बादक कतोक सप्ताहमे भविष्य-सूचक प्रमाणित भेल। समुद्रक पश्चिमी किनार पर आप्रवासी द्वारा टैगोरकेँ ततेक लंगोचंगो कएल गेल जे ओ तुरन्त सभ आबंधकेँ रद्द कय दुइये दिनक बाद यात्रा कय देलन्हि।

ओ लोकनि 22 मार्चकेँ जापान पहुँचलाह। सुधीन्द्र स्वयं एकटा निर्देशित यात्रा पर चल गेलाह तथा एस०एस० इम्प्रेस ऑफ एसिया द्वारा कनाडाक हेतु प्रस्थान करबाक पूर्व याकोहामामे हुनका लोकनिक संग घय लेलन्हि। ओ लोकनि अप्रैलकेँ विक्टोरिया पहुँचलाह ओ वान्कोवर 7 केँ। कनाडा पहुँचलाक बाद टैगोरो संयुक्त राष्ट्र जयबाक कार्यक्रम बनाओल। एतयसँ अनेकानेक निमंत्रण प्राप्त भेल छलन्हि। बान्कोवरसँ ई लोकनि 18 अप्रैलकेँ लौस एन्जेल्स पहुँचलाह। लौस इन्जेल्सक प्रेस सामाचारकेँ प्रचारित करैत सुधीन्द्रनाथ ओ अपूर्व चाँदक संग टैगोरक फोटो "भारतवर्ष" क गण्यमान्य लोकरूपेँ वर्णित करैत छपलक। दक्षिण कैलीफोर्निया विश्वविद्यालयमे टैगोरकेँ छओ सप्ताह व्याख्यान देबाक छलन्हि। किन्तु 20 अप्रैलकेँ हठात् ओ जापानक हेतु प्रस्थान कय देलन्हि। अपूर्व चाँद हुनका संग गेलाह। (ठकर अपना देशहिमे रहि गेलाह)। किन्तु सुधीन्द्र अटकि गेलाह। एहि समयक हिनका नामेँ हिनका पिताक पत्रक आधार पर कहल जा सकैत अछि जे ई कतोक व्याख्यानक बात सोचैत छलाह। ई शिकागो गेलाह, तकरा बाद पूब जाय यूरोपक जहाज पकड़ि लेलन्हि।

हिनक यात्रा-विवरण मात्र एहन लेखन थीक जकरा ई यात्राक क्रमसे अंकित कएल। किन्तु मइसँ दिसम्बरक बीच ई कतोक कविता लिखलन्हि जे आठम नोट-बुकमे दर्ज अछि। ओ सभ एके प्रकारक अछि—सभ प्रेमकाव्य। एकर क्रम छल

11716.4

8 मइकेँ शिकागोमे लिखित कविता, फेरि जूनमे अतलांतिक पार करैत चारिटा चतुर्दशपदी, जूनमे इंगलैण्डमे लिखित पंचम चतुर्दशपदी। फेरि छठम चतुर्दशपदी तथा छओ अन्य कविता जर्मनीक बेंसवेडनमे लिखित अगस्त-सितम्बरमे। एहिमेसँ तीनटा चिकित्सालयमे लिखल गेल तथा अन्तिम दूटा अरब सागर पार करैत जहाज पर। एहिमेसँ दोसर रचना काल 10 दिसम्बर अंकित अछि। पन्द्रहो कविता यथार्थमे पन्द्रहटा एहन शब्दचित्र थीक जकर आवेग प्रचण्ड छैक। एहिसँ पूर्व सुधीन्द्रनाथ एहन कोनो रचना नहि कएने छलाह। बादमे जखन एहन आवेगसँ युक्त कोनो रचनाक दर्शन होएत तँ ओ रहत एही आवेगक स्मरणस्वरूप। ई कविता सभ हिनक श्रेष्ठतम कवितामे नहि अछि, किन्तु ई अछि प्रामाणिक अनुभूतिक निदर्शन। एकरा पर विचार विना कएने सुधीन्द्रनाथकेँ जानल-बुझल नहि जा सकैछ।

छओ चतुर्दशपदीक सामान्य शीर्षक छैक, क्षणिका। बुझना जाइछ जे वर्तमान यात्रामे रचित सभ कविताक कुंजी एतहि अछि। प्रत्युत सोझाँ-सोझी अथवा घुमा-फिराकेँ प्रेमपरक हिनक बादौक कविताक। कविता सभमे निहित छटपटी तथा आवेगक दृष्टिएँ शब्द एक प्रकारक प्रायोगिकता व्यंजित करैत अछि। ई भाव जे प्रेम क्षणभंगुर थीक—अत्यन्त क्षणभंगुर इएह मुख्यरूपेँ विराजमान। एहि कविता सभमे निहित "तो"क एहिसँ नीक वर्णन नहि भय सकैत छल। किन्तु एही शीर्षकक टैगोरक कविताक एहिमे कोनो प्रतिध्वनि नहि छैक। एहि कोटिक सुधीन्द्रनाथक पहिले कविता, जेना ओ स्वयं अनुवाद कएने छथि, थीक :

हमर क्षणभंगुर प्रेम,
तोहर अतुलनीय स्मृति,
हमरा चित्तमे आबि सनातन नहि भय सकैछ।
तोहर उपस्थितिक प्रबल प्रेरणा
अश्रुसिक्त अन्धकारमे विला जाओ
अवशिष्ट रहओ अतर्क्य चेतनाक अनुच्चरित उल्लास
ताराविहीन वर्षा-रात्रिक चमकैत आनन्दातिरेक जेकाँ।
जँ चाहह तँ विसरि दएह प्रिये !
जँ सम्भव होइक तँ दएह अपन निश्चेष्ट कृपा
अपन सन्ध्याक तृष्णातुर फुरसतिमे,
किन्तु स्मरण करह, जँ सम्भव होइक तँ एतबेटा स्मरण करह—
हमर नाओ, हमर एकाकी नाओ
अन्हराएल गतानुगतिकताक शान्त धारा पर हेलैत
अनिश्चित उदासीक गह्वरमे जखन डूबय लागल

तखन तों हमर प्रियतमे !
दयापरवश भय हाथ बढ़ओलह
आ ओकर सनातन पतन रोकि देलह ।

एहि पंक्ति सभकें पढ़ि, एहि कविता सभकें पढ़ि, सुधीन्द्रक पछातिक सभ प्रम काव्यकें पढ़ि, ई निश्चय करब कठिन जे ई सभ केवल कल्पनाप्रसूत छल अथवा एकरा पाछाँ कोनो याथार्थ्य छलैक । साहित्यिक रसास्वादनक हेतु जीवन-वृत्तान्तक जँ कोनो उपादेयता होइक तँ ओकरो उधेसबाक मूल्य छैक । एकटा वातकें अस्वीकार कएने काज नहि चलत—हिनक कवितामे हठात् परिवर्तन आबि गेल । ओ के छल जे एहि कविताक सद्यः कारण बनल । ओकरा संग हिनका भेंट कतय भेल ? की ओ जर्मनीक छल । बादक एक कवितासँ वएह धारणा होएत । वर्णनाकें छोड़ियो दी, तथापि "सम्वर्त"क अन्तिम दू पंक्ति स्पष्ट साक्ष्य देत । किन्तु जखन वाह्य साक्ष्य नहि भटैत अछि तखन एकरो मूल्य छैक, विशेषतः जखन ई प्रचुर मात्रामे ओ बारंबार आएल अछि । कदाचित् कोनो दिन कतहु कोनो साक्ष्य प्राप्त भय जाएत-सम्भव थीक कोनो पत्राचार । तावत धरि कविता पर ध्यान देब उचित - शब्दावली पर ।

किन्तु कतोक जनरव अछि । बुझना जाइछ जे हिनक मित्र लोकनिकें ज्ञात छल-अन्तरंग मित्र लोकनिकें अवश्य, किन्तु हुनका लोकनिमेसँ सभ एकरा दिशि बहुत ध्यान नहि देलन्हि, कारण जे ओहि समयक भारतीय युवक अपन पश्चिमी यात्रामे क्षणिक प्रेम कय बैसथि एहिमे अजगुत किछु नहि । किन्तु वर्तमान प्रसंगमे ई कतेक दूर धरि अगुआएल ? जँ मानि लेल जाय जे जतय पहिल कविता रचित भेल अर्थात् शिकागोमे हिनका लोकनिक मिलन भेल तँ की पूब दिशाक यात्रामे ओ हिनका संग छलि—तकराबाद यूरोप धरि ? ई असम्भव नहि जे चारिटा चतुर्दशपदी "क्षणिका" ओकरा संग समुद्रयात्राक कालमे लिखल गेल । अथवा की यूरोपमे हिनका लोकनिक फेरि मिलन भेल ? की लंडनमे जतय ई किछु दिन रहलाह ओ एकटा आओर चतुर्दशपदी लिखलन्हि, फ्रांस एवं वेलजियमक निवास अवश्य बहुत थोड़ कालक छल, किन्तु जर्मनी रहैत स्थिति गम्भीर भय गेल । ओतय जएबाक प्रधान कारण छल हिनक एपेनडिक्स । ई निश्चय कय चुकल छलाह जे घर पहुँचबाक काल धरि शल्य-चिकित्सा रोकि देल जाय । किन्तु हिनक मामा नीरद मल्लिक, जे बेसंवेडनमे रहैत छलाहा जाँच करएबाक हेतु हिनक, आमंत्रित कएल । डाक्टर लोकनिक राय भेल जे शल्यचिकित्सा तुरन्त कराओल जाय । शल्यचिकित्सा क्रान्केनहास पालिनेनस्टिकटमे कराओल गेल । एतय ई तीनटा कविता लिखलन्हि—सितम्बरमे । स्पष्टतः अपना मामाक संग कुर होटलमे रहैत, जतय ई शल्यचिकित्साक पूर्व ओ पछाति रहलाह । ई थोड़ेक आओर कविता लिखलन्हि । वेसबाडेन ई जुलाइ-अगस्तमे पहुँचल होएताह

तथा अक्टूबर-नवेम्बरमे अथवा दिसम्बरक आरम्भमे छोड़ने होएताह। ओहि गुच्छक अन्तिम दू कविता ई लिखलन्हि घरमुहाँ अबैत अरब समुद्रमे।

एडवर्ड शील ओ० यू० पी० पुस्तकक भूमिकामे लिखने छथि (शील अवश्य स्वयं सुधीन्द्रनाथसँ ज्ञात कएने होएताह) जे जर्मनीमे रहैत हिनका जखन कतोक हिटलरी युवक पुछलकन्हि जे ई "हिटलर जिन्दावाद" किएक नहि कहलन्हि तखन ई हँसीमे कहल जे जें हेतु ई स्वयं आर्य थिकाह तें हिनका हेतु ई कहब आवश्यक नहि, की ई घटना वेसवेडनमे घटल ? ई जाहि समयमे जर्मनीमे छलाह तखन स्थिति ठीके छलैक। तावत् लोकार्नो संधिक सुखाभास दुःस्वप्नमे परिणत नहि भेल छल अथवा स्ट्रेसमैनक आदर्शवाद अप्रासंगिक। किन्तु वादानुवाद एहन तीव्र छल जे एही समयमे हिटलरक प्रथम उदय लय अनलक—सुधीन्द्रनाथ तँ बादमे कहलन्हि जे दूर क्षितिज पर प्रलय उतरि आएल छल। की ई घटना वज्रपातक क्षीण प्रकाश नहि छल ? किन्तु ओहि समयमे एकरा हेतु ई विशेष चिन्ता नहि कएलन्हि। ओहि ग्रीष्म ऋतुमे फ्राँकफस्टएम-मेन शहरक निकट छोटका शहरमे मशाल जुलूसमे भाग लितहुँ, सभ किछु हँसी मसखड़ी जेकाँ बुझबामे अएलन्हि। किन्तु एखन प्रायः हिनक व्यक्तिगत अनुभव हिनक इतिहास-बोधकें कुंठित कय देने छल। जँ फेरि हमरालोकनि आभ्यन्तरीण साक्ष्यकें ली, तँ "प्रेयसी" हिनका लेल अधिक महत्त्वक छल।

सुधीन्द्रनाथक लिखल प्रेमकाव्य अत्यन्त भावसंकुल अछि। जँ कोनो वंगालीकें टैगोरक बादक प्रेमकाव्यसँ उद्धरण देबाक हेतु कहल जाय तँ प्रायः ओ सुधीन्द्रनाथसँ उद्धरण देताह। प्रसंगतः कहल जा सकैत अछि जे हिनक पत्नीसँ प्रेरित हिनक प्रेम-काव्य भिन्न स्वादक अछि। एहिमे इच्छा छैक, किन्तु इच्छापूर्तिजन्य विरक्ति सेहो। एकर क्षणभंगुरता एहन क्षणभंगुरता नहि थिकैक जे सर्वदाक हेतु चल जाय। एकरा अतिरिक्त तन्वीक कविता सभ कखनहुँकें कनेक बनौआ जेकाँ छैक, कम-सं-कम बुझबामे सएह अबैछ—किन्तु ओकरा विपरीत एकर कविता सभ प्रामाणिक बुझना जाइछ। पहिल पांडुलिपिमे किछु स्थानीय निर्देश छैक जेना "राइन नदी" अथवा "पाइन गाछ"। "विदेशिनी"क निर्देश सेहो। बादमे अनेक ठाम परिवर्तित कय देल गेल अछि "विपाशा" अथवा "पलाश"मे तथा विदेशिनी "अनागत्यामै। सभ प्रायः सामान्य बनएबाक उद्देश्यसँ कएल गेल अछि। किन्तु जकर विरलीकरण नहि कएल जा सकल ओ थीक भावप्रवणता। एकर प्रामाणिकताक विषयमे कोनो सन्देह नहि। तथापि जँ आओर प्रमाण चाही तँ एकर प्रथम पांडुलिपिकें देखि सकैत छी।

यथार्थमे एहिठाम हमरालोकनिक से अभिप्राय नहि अछि। एखन हमरालोकनि हिनक साहित्यिक जीवनक लेखाजोखा कय रहल छी। हिनक धोबिक हिसाब तथा अन्य छोट-छोट बातक जाँच नहि। किन्तु कखनहुँकें ओहि सभक प्रयोजन भय

जाइत छैक, कारण जे साहित्यिक जीवन शून्यमे नहि बनैत छैक। ई निश्चित जे एहिमे ककरहु आपत्ति नहि होएतैक। एहिठाम प्रश्न छैक महत्त्व देबाक। जँ एखन हम हिनक जीवन-वृत्तान्त पर जोर दैत छी, तँ एकर कारण ई जे ओहि समयमे ई अधिकांशतः बनिये रहल छलाह। दोसर शब्दमे, कलाक द्वितीय कारणताक अपेक्षा ई अनुभूतिक प्रथम कारणताक अधीन अधिक छलाह। एक वेरि एहि लक्ष्यकेँ ग्रहण कय लेलाक बाद स्पष्ट बात पर परिश्रम नहि करय पड़त। एकरा अतिरिक्त हमरालोकनि प्रतिभाक संग आदर्श आचरणकेँ जोड़बाक अभ्यासी छी। अथवा कहू जे जाहि व्यक्तिकेँ हम श्रद्धा करैत छी तनिका सम्बन्धमे कोनो हीन भाव जोड़बासँ विरत होइत छी। सुधीन्द्रनाथक बादक निबन्धमेसँ एकटाक विरुद्ध हिनक मृत्युक बाद ई कहि निन्दा कएल गेल जे ई वर्जनक उल्लंघन कएलन्हि। अतएव उचित जे हमरालोकनि हिनकहि वर्जित नहि कय दी आ हिनक सत्यनिष्ठामे धक्का लगावी।

किन्तु जाहि पन्द्रह कविताक विषयमे हम कहलहुँ केवल वएह टा हिनक पश्चिम-यात्राक परिणाम नहि थीक। ई एहन पश्चिमक यात्रा पर जाथि ई उच्च-स्तरीय बँगाली बुद्धिजीवीक पक्षमे प्रायः अनिवार्य छल। अँग्रेजी शिक्षाक ई एक प्रकारेँ प्रसार छल। अँशतः ई ऐतिहासिक सत्य जे हिनक राष्ट्रवादी मामा अथवा पिता पहिने अनुत्साह देखाबथि, किन्तु सँगहि इहो ऐतिहासिक सत्य जे एहि हेतु हिनक अपन आग्रह प्रचुर होइन्हि। एकरा अतिरिक्त ई एहन एक व्यक्तिक संग यात्रा कएलन्हि जे प्रायः पाँच दशक पूर्व एहन यात्रा कय चुकल छलाह तथा अपना धारणाकेँ स्मरणीय बना चुकल छलाह। हमरा ज्ञात अछि जे सुधीन्द्रनाथो एकटा पत्रिका चलओलन्हि, किन्तु चलओलन्हि मात्र। किन्तु अपना पिता धरिकेँ ई पत्र लिखैत गेलाह जकरा नष्ट कय देबाक अपन सामान्य अभ्यासक विपरीत ओकरा जोगाकेँ रखैत गेलाह तथा सुधीन्द्रक फिरिकेँ अएलाक बाद हिनका दय देलन्हि एहि अनुदेशक संग जे भविष्यमे संभावित उपयोगक हेतु ओकरा सभकेँ सुरक्षित राखल जाय। एखन धरि ओ पत्र सभ हमरा प्राप्त नहि भय सकल अछि ओ तेँ ई नहि कहि सकैत छी जे ओहिमे की छलैक। निःसन्देह प्रामाणिक अवधारणा। गोर चमड़ाक पश्चिमी लोकक सम्बन्धमे सुधीन्द्रक केहन धारणा भेल? केवल प्रशंसा अथवा किछु भर्त्सना सेहो? पश्चिमी लोकक सम्पर्क की सुखद छल—एक स्वप्नक याथार्थ्यमे परिणति? अथवा एक दुखद अनुभव जाहिमे भूरा लोकक भारक सँकेत छलैक! एकर खोज करब आवश्यक।

हिनक यात्राक प्रारम्भिक प्रविष्टि किछुकेँ स्पष्ट कय दैत अछि। सुधीन्द्रनाथक मतेँ पश्चिमीकरण एकटा वास्तविक प्रक्रिया थीक जकर अर्थ थिकैक व्यावहारिक युक्तिवादक वर्चस्व। बँगालाक कविक हेतु केवल इएह टा आवश्यक नहि जे ओ पश्चिमी कविता एवँ अलंकार शास्त्रकेँ आत्मसात् कय लेथि प्रत्युत इहो आवश्यक

जे समस्त समाज कतोक पश्चिमी सामान्य गुणकें अपनाबय। निःसंदेह एहना स्थितिमे अँग्रेजी राज अगवे अधलाहक प्रतीक नहि। किन्तु अँग्रेजी राजक अर्थ छलैक अँग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा प्रचुर मात्रामे अपमान। एकक विना हम दोसर कोना प्राप्त कय सकैत छलहुँ? बादमे सुधीन्द्रनाथ पश्चिमक आओर यात्रा कएलन्हि—पंचम दशकमे। जहिना शताब्दीक तहिना अपना जीवनक। ई फेरि उत्तरी अमेरिका गेलाह। एक समयमे तँ अपना जीवनक एक महत्त्वपूर्ण घड़ीमे इँगलैण्ड चल जएबाक बात सोचलन्हि। किन्तु साधारणतः हिनक विचार एकर विपरीत छल: कोनो स्वाभिमानी भारतीयकें कहियो पश्चिम जाय ओतय रहि जएबाक बात सोचबैक नहि चाही।

किन्तु एहि यात्राक एकटा दोसरो पक्ष अछि जकरा अनठाएब उचित नहि। ई टैगोरक संग यात्रा कएलन्हि आ ओकर स्थिति केहन रहल? ई तथा अपूर्व चाँद स्वातंत्र्य प्रेमी छलाह (बुझना जाइछ जे ई तथा अपूर्व चाँद आरम्भमे टकरक सँग नीक जेकाँ चलओलन्हि)। ई दूनू गोटय ओहि पैध लोकक सँग कोना चलओलन्हिँ? बादमे परिचयक एकटा गोष्ठीमे (ई हमरा लोकनि श्यामलकृष्ण घोषक दैनन्दिनीमे देखैत छी) आओर वस्तुक अतिरिक्त यात्रामे अपूर्व चाँदक कथित निरर्थकता प्रसंग हिनक अभ्युक्ति भेल: "कवि अन्ततोगत्वा मानवीयता सँ परिपूर्ण, भड़कदार आत्मविभोर लोक छथि"। ई कोनो निन्दात्मक उक्ति नहि छल, कारणजे ई ओहिना बजबाक अभ्यासी छलाह। किन्तु एहि सँ स्पष्ट भय जाइछ जे हुनका प्रति स्नेहपूर्ण भेनहुँ, फराक-फराक रहय चाहैत छलाह। एकर कारण कोनो दुराग्रह नहि प्रत्युत आत्ममर्यादा। ई कोनो रूढ़िभंजक नहि छलाह, प्रत्युत शीर्षस्थ लोकक प्रति हिनका उच्चतम श्रद्धा छल। किन्तु एही सँग स्मरणीय जे ई दोसर पीढ़ीक लोक छलाह जकर हिनका पूर्ण ज्ञान छलन्हि। एकरा अतिरिक्त ई सत्यनिष्ठ लोक छलाह ओ ई सत्यनिष्ठता ककरहु अपवाद नहि बुझैत छल—अपनहुँ कें नहि।

3

सुधीन्द्रनाथ दिसम्बर 1929 मे फिरिकेँ अएलाह ओ किछुए मासक भीतर पहिल पुस्तकक प्रकाशन करओलन्हि। किन्तु हमरालोकनि जनैत छी जे ई कविता सभ बहुत पहिनहि लिखल गेल छल, केवल शीर्षक-कविताकेँ छोड़िकेँ जे 1930मे लिखल गेल—आठम नोटबुकक अन्तमे। प्राप्त सूचनाक अनुसार ई कविता सभ टैगोरकेँ देखाओल गेल छल। एकर एकटा प्रति पर टिप्पणी ओ संशोधन अँकित छैक टैगोरक अक्षरमे। सुधीन्द्र अधिकांश सुधारकेँ स्वीकार कएल, किन्तु थोड़ेकमे अपन मूलपाठकेँ रखलन्हि अथवा स्वयँ संशोधन कएलन्हि। देखाओल गेल सभ कविता तन्वीमे समाविष्ट नहि भेल-थोड़ेक बादमे प्रकाशित पुस्तकमे देल गेल। जे कविता सभ एखनहि रचित भेल छल ओकर प्रकाशन स्थगित रहल। एहि बीच ई आओर कविता लिखलन्हि-सभक वएह स्वर। अनुवाद कएलन्हि, निबन्ध लिखलन्हि। संगहि जे ऐतिहासिक दृष्टिएँ अधिक महत्त्वपूर्ण थीक—एकटा त्रैमासिक प्रकाशित कएलन्हि—सुप्रसिद्ध 'परिचय'। किन्तु ओकरा दिशि ध्यान देबाकपूर्व तथा देश फिरि अएबाक पश्चात् नवम नोटबुकमे संगृहीत अधिकांश कविताक विवरण पर विचार करबाक पूर्व दशम नोटबुक पर प्रारम्भिक दृष्टिपात करब उचित। मुखपृष्ठ पर अंकित अछि "ओक्सफोर्ड बुक-ऑफ बँगाली भर्स ।।। पार्ट"। पुस्तककेँ खोलैत मात्र देखैत छी जे ईश्वरचन्द्र गुप्त, सत्येन्द्रनाथ दत्त, गोविन्दचन्द्र दास द्विजेन्द्रलाल राय सँ कविता लय संग्रह समाप्त कय देल गेल। एहि अवधिमे टैगोरक संग ई ऑक्सफोर्डक हेतु 'बंगला पद्यसंग्रह' प्रस्तुत करब आरम्भ कएलन्हि। ई काज अन्ततोगत्वा पूरा नहि कएल गेल। किन्तु कहल जाइत अछि जे संग्रहक काज आगाँ बढ़ि चुकल छल। दशम नोटबुकक अवशिष्ट अंशमे कविता ओ अनुवाद पाछाँ सँ लिखल गेल अछि।

बंगला समीक्षाक आलोकमे गत एक सय वर्षक बंगला साहित्यिक इतिहासक प्रचुर अंश लिखल जा सकैत अछि, किन्तु विशेषतः ई लागू होएत एहि शताब्दीक द्वितीय ओ तृतीय दशकक टैगोरक पश्चातक रचनाक सम्बन्धमे। समीक्षा सँ तात्पर्य छलैक नव शैली, लेखनक नव दर्शन, अधिकाँशमे नव सँहति। कहल गेल हो

अथवा नहि, समीक्षाक अर्थ छलैक एकटा नव उद्घोष जकरा पाछाँ समस्त गोष्ठीक हस्ताक्षर छलैक; बादमे आबिकें ओ लोकनि अपन प्रतिभाक विकाश कतबो भिन्न रूपें करथु। उदाहरणार्थ, कल्लोलक तथाकथित त्रिमूर्तिक बीच, एतवा छोड़ि जे ई लोकनि समानरूपें एकरा हेतु रचना दैत छलाह, साम्यक मात्रा कदाचिते छल। किन्तु अचिन्त्य कुमार सेनगुप्त, बुद्धदेव बोस तथा प्रेमेन्द्र मित्र ओहि समयमे जे किछु लिखलन्हि तकरा पर एहि समीक्षाक असंदिग्ध मोहर छलैक। जे होअओ, जँ कल्लोलक प्रधान लक्ष्य छलैक अवरुद्ध आवेगक स्फुरण तँ परिचयक उद्देश्य भय गेलैक एक प्रकारक नियन्त्रण, भावनाक नहि, एकर असंयमताक, एकर प्रायः अविचारित सुखबोधक। ई रोचक बात थीक जे कल्लोलक वातावरणसँ अभ्यस्त लोक परिचयक संग समरसता नहि बैसाय सकलाह। परिचयक आभ्यन्तरीण गोष्ठीक लोक 'कल्लोलक' सहमैत्रीक लोकक तुलनामे पैघत्व देखाबएवाला छलाह यद्यपि किछु लोक एहनो छलाह जे दूनूमे खपि सकैत छलाह। एहिठाम दुमुहाँ रूप देखल जा सकैत अछि, किन्तु एतय एहि पर अथवा एहि सँ सम्बन्धित अन्यान्य समीक्षाक इतिहास पर, जकरा द्वारा दुमुहाँपनीक सम्पुष्टि वा असम्पुष्टि होइत हो, विचार करब आवश्यक अछि। किन्तु जखन टैगोरक बाद उभड़ल लेखन पर विचार करैत छी तथा ओकरा कल्लोल एवं तत्समानक संग जोड़ि दैत छी, तखन ओकरा सभसँ 'परिचय'क पार्थक्य स्मरण राखब उचित।

'परिचयक' आरम्भ ओ अस्तित्वक लक्ष्य प्रधान रूपें छल आलोचनात्मक समीक्षा। टी० एस० इलियटक क्राइटेरियन जेकाँ जकरा संग तुलना बारम्बार कएल गेल अछि। सुधीन्द्रनाथक जीवनमे एकर महत्त्व निर्णायक अछि, कारण जे ई एकर आरम्भे टा नहि कएलन्हि ओ प्रथम बारह वर्ष धरि सम्पादकेटा नहि रहलाह, प्रत्युत एहि अवधिमे लिखबो कएलन्हि प्रचुर मात्रामे—कविता, निबन्ध, अनुवाद। कविताक तीन पुस्तक प्रकाशित कएलन्हि, निबन्धक एकटा—मोटामोटी अपन रचनाक आधा। 'परिचय'क कारण ई एतबा रचना कएलन्हि सएह नहि। 'परिचय' मुद्रणशालाक दिशिसँ मासिक वा त्रैमासिक (पहिल पाँच वर्ष धरि त्रैमासिक ओ तकरा बादसँ मासिक) प्रकाशने टा नहि छल, जकरा हेतु सम्पादककें टेबुल पर बैसि तैयारी करय पड़ैत छलन्हि, प्रत्युत एकटा साहित्यिक संगोष्ठी सेहो। एतय ओ लोकनि प्रवीण लोकसँ मैत्री स्थापित करैत छलाह, नव विचार स्वीकार करैत छलाह, ओ पुरानक परित्याग, अद्यतन घटना पर उत्तेजित होइत छलाह, आधुनिकतम पुस्तकक धज्जी उड़बैत छलाह अथवा ओकर वैशिष्ट्यक उद्घोष करैत छलाह। पुरना प्रतिष्ठित रचनाक जतेक सम्भव वैगुण्यक बखान करितहुँ, ओकर स्थायित्व प्रायः स्वीकार करैत छलाह, कोनो कें लय, प्रत्येक वस्तुकें लय वाद-विवाद करैत छलाह, झगड़ा करैत छलाह। एहि सभमे प्रमुख भाग लेबाक कारण अपन मतकें प्रकाश करबाक ओ वाग्वैदग्ध्य हासिल करबाक सुधीन्द्रकें अवसर

भेटलन्हि ; पछातिक छओ, रसेल स्ट्रीटक सुधीन्द्रनाथकें उच्चतम कोटिक प्रतिभासम्पन्न एवं प्रसिद्ध गद्य रचनिहार रूपमे जे यश भेटलन्हि जकर जड़ि 'परिचय' मे छलैक।

परिचयक आरम्भ कोना भेल तकर विवरण एकाधिक व्यक्ति देने छथि। किन्तु प्राय: सभसँ अधिक विवरण देने छथि स्व० हिराण कुमार सान्याल अपन "परिचय बीस वर्षमे", जे एकैसम" वर्षसँ आरम्भ कय क्रम-क्रमसँ पत्रिकामे छपल। ओ एमहर आबि कें पुस्तकरूपें प्रकाशित भेल अछि। एकरा अतिरिक्त श्यामलकृष्ण घोषक अंशत: प्रकाशित पत्रिका सेहो अछि। एहिमे एकक बाद दोसर सप्ताहक विवरण संगृहीत रहबाक कारण एकर महत्त्व अमूल्य छैक। प्रारम्भिक दृश्य छल स्टीफेन हाउस जतय सुबोध मल्लिक द्वारा स्थापित "लाइटहाउस ऑफ इनस्योरेन्स" कम्पनीक आफिस छलैक। एतहि वैज्ञानिक यन्त्रक कारवारी अडायर दत्त कम्पनीक आफिस सेहो छलैक। सुधीन्द्र पहिल संस्थापक सचिव छलाह (1930-33 मे) ओ जें कैमरा तथा काफी स्रावितमे रुचि रखनिहार लोक छलाह तें दोसर संस्थासँ सम्बद्ध गिरिजापति भट्टाचार्यक मित्र भय गेलाह। गिरिजापति हिनक परिचय अपन मित्र नीरेन्द्रनाथ राय सँ करा देल जनिका सम्बन्धमे ई सत्येन्द्रनाथ बोससँ सुनने रहथि। एहि नवीन मित्रलोकनिक संग मिलि सुधीन्द्र समीक्षाक परिकल्पना कएलन्हि। सम्पादन एवं छपाइक हेतु एकटा निदेशक-मंडलक गठन कएल गेल—चारुचन्द्र दत्त छलाह अवकाश प्राप्त अफसर तथा सुधीन्द्रनाथक पित्ती जे आरम्भमें प्रचुर उत्साह देल। सुबोध मुखर्जी तथा प्रबोध बागची, सोसाइटी आफ इंडो-लैटिन (बीसम दशकमें प्रधानत: फ्राँस सँ आगत लोकनिक क्लब) क धूर्जटी प्रसाद छलाह, गिरिजापतिक बालसंगी ओ एहि गोष्ठीक एकटा प्रतिष्ठित लेखक। ओ लोकनि एकटा छोट विज्ञप्ति प्रकाशित कएलन्हि। 'परिचय' नाम हरीन्द्रनाथक अनुसार देल (सुधीन्द्रनाथ एकटा दोसर नामक प्रस्ताव देलन्हि "उत्तर फाल्गुनी") नीरेन राय, किन्तु चारुदत्त जनिक मत महत्त्वपूर्ण बुझल जाइत छल "परिचय" नीक बुझलन्हि। इएह कार्यक्षेत्रक वर्णन करैत एकर सम्पादकीय लिखलन्हि। मुखपृष्ठ पर अक्षर रचना कएलन्हि गिरिजापति, केवल रूपरेखा नहि, रंगब्लॉक सेहो। सम्पादकीय कार्यालय कायम भेल स्टीफैन हाउसमे। भारती भवनक कुन्दभूषण भादुड़ी मुद्रक नियुक्त भेलाह। प्रथम अंक श्रावण 1338 बंगाब्द (जुलाइ-अगस्त-1931) मे प्रकाशित भेल। ई 154 पृष्ठ धरि पहुँचि गेल।

कदाचिते कोनो बंगालक समीक्षा एहन बौद्धिक विभिन्नता प्रदर्शित कएने हो-दर्शन, साहित्य, राजनीति, विज्ञान तथा ललित कला सभ पर निबन्ध। लेखकमे हीरेन्द्रनाथ दत्त, प्रबोधचन्द्र बागची, सुधीन्द्रनाथ दत्त, सुशोभन सरकार, सत्येन्द्रनाथ बोस, सुबोधचन्द्र मुखर्जी, हेमेन्द्रलाल राय। एकैस पुस्तकक समीक्षा—साहित्य, दर्शन, राजनीति, यात्रा। एकरा अतिरिक्त एकटा कथा छल धूर्जटी प्रसाद मुखर्जीक,

कविता सुधीन्द्रकुमार चौधरीक, अन्नदाशंकर रायक, विष्णु देक, बुद्धदेव बोसक। अतिरिक्तमे प्रस्टक अंशक अनुवाद विष्णु दे द्वारा। संगहि नीरेन रायक सम्पादकीय ओ विरचल अर्थात् प्रमथ चौधरीक पत्र, नवीन पत्रिका कोना चलाओल जाय तकरा सम्बन्धमे। एहिमे टैगोरक कोनो रचना नहि छल। बुझना जाइछ जे अजगुत भेनहुँ एहि हेतु हुनका कहले नहि गेल छल। (टैगोरक रचना दोसर अंक मे आएल)। पत्रिका प्रकाशन पर एकटा पत्र तथा जगदीश गुप्तक गल्प-पुस्तक 'लघुगुरु' क समीक्षा। जाहि पुस्तक सभक समीक्षा कएल गेल ओहिमे छल शरच्चन्द्रक शेष प्रश्न, बुद्धदेव बोसक वन्दी-वन्दना तथा गल्पक प्रथम पुस्तक, टैगोरक रूसक चिट्ठी, अन्नदाशंकर रायक पथमे प्रवासमे, फ्राँसक किछु उपन्यास, जर्मन-कथा संग्रह। समीक्षक लोकनिमे छलाह नीरेन राय, गिरिजापति, धूर्जटी प्रसाद, मणीन्द्रलाल बोस तथा स्वयं सम्पादक। समीक्षाक अंश बंगला-पत्रिकाक दृष्टिएँ बहुत पैघ छल, किन्तु इएह प्रमाणित भेल बंगला साहित्यक प्रति सभसँ श्रेष्ठ अवदान। अधिकांशतः समीक्षा समीक्षात्मक निबन्धे छल—नाम गनाएब नहि। जँ कल्लोलक उद्देश्य छल नवलेखनक प्रवेश तँ परिचयक उद्देश्य भेल नव "मानक"क स्थापन।

गिरिजापति द्वारा बुद्धदेव बोसक समीक्षा एकटा उल्लेखनीय बात छल। ई प्रमाणित कएलक जे परिचयक सहानुभूति प्रधानरूपेँ ओहि लोकक प्रति छल जे कल्लोल सँ सम्बद्ध छलाह। एकर उच्च मानकक द्वारेँ एकरा विशिष्ट लोकक वस्तु कहल जा सकैत अछि, नवलेखनक प्रति उदासीनताक कारण नहि। "परिचय" क प्रधान गुण ई छल जे एकर क्षेत्र पैघ छलैक। ई केवल बँगलैक पुस्तकक समीक्षा नहि करैत छल, प्रत्युत यूरोपीय पुस्तक सभक सेहो। यूरोप सँ सम्बन्धित विषय पर सेहो लेख प्रकाशित करैत छल (उदाहरणार्थ आरम्भमे कतोक वर्ष रूसी क्रान्ति तथा हिटलरक तानाशाही समेत यूरोपक राजनीतिक दृश्य पर क्रमबद्ध लेख रहलैक)। ई यूरोपीय भाषा सँ अनुवाद सेहो छपलक। यथार्थमे पहिल कतोक अँकमे तँ "अनुवाद"क पृथक् स्तम्भे छलैक। वस्तुतः एकर व्यापकता एक प्रकारेँ सीमित छलैक, किएक तँ बँगलाक बाहर कोनो वस्तुक अर्थ छलैक पश्चिमी—प्रायः कोनो वस्तु जे अबँगाली तथा आधुनिक भारतीय सँ (संस्कृत तथा पाली तँ पूर्णतः प्राचीन छल) फराक हो। किन्तु निःसन्देह ई गुण केवल परिचयटाक नहि छलैक। एकर कारण छलैक बँगालक साहित्यिक साधना पर पश्चिमी प्रभाव। जँ "परिचय" एकरा उजागर कएलक तँ एहि हेतु जे ई प्रधानतः बौद्धिकताक पत्रिका छल। एखन धरि आबिकेँ हमरालोकनि भारतीय आन-आन साहित्यक दिशि उन्मुख भेलहुँ अछि—ओहिसँ अनुवादो करैत छी। किन्तु तेसर दशक मे स्थिति बहुत भिन्न छल। "परिचय" एवं कल्लोलक विशेष गुण ई छल जे एकरासँ पूर्वक पत्रिका सभक विपरीत एकर रुचि अँग्रेजिये धरि सीमित नहि छलैक।

उदाहरणार्थ, जँ हमरालोकनि पहिल पाँच वर्षक अवधिमे परिचयमे समीक्षित

पुस्तकक वर्गीकृत तालिका बनाबी (परिचय नाम रहलैक त्रैमासिक रूपेँ-आकार-प्रकार नीक) तँ देखब जे ओहिमे विभिन्न विधाक पुस्तक छैक—साहित्य-इतिहास, अर्थशास्त्र-राजनीतिविज्ञान, दर्शन, विज्ञान, यात्रा आदि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मुख्य रूपेँ साहित्यिक पत्रिका होइतहुँ, एकर उद्देश्य वृहत् छलैक। ई मात्र साहित्यिक समुन्नतिक हेतु प्रयास नहि करैत छल प्रत्युत अन्यान्यो बौद्धिकक उद्देश्यक पूर्तिक दिशामे ई अपन उपादेयता मे विश्वास रखैत छल। एकर अर्थ ई नहि जे "परिचय" एकटा वहूद्देश्यीय वस्तु छल, एक प्रकारक गुलदस्ता। एहिमे विस्तृति रहितहुँ, प्राथमिक रुचिवैचित्र्य रहितहुँ, एकर एकटा अपन स्वर छलैक। जहिना पुस्तकमे वैविध्य छलैक तहिना समीक्षकमे सेहो। जाहि मानकक प्राप्तिक हेतु प्रयास छलैक ओ समान रूपेँ उच्च छल तथा प्रवृत्ति अधिकाँशतः आधुनिक छलैक। उदाहरणार्थ, इतिहास, अर्थशास्त्र तथा राजनीतिक समीक्षामे सामान्य मार्क्सवादी दिशि झोंक छलैक। एहि कारण नहि जे सम्पादक मार्क्सवादी छलाह (से प्रायः छलाहो नहि) प्रत्युत एहि कारण जे समीक्षक लोकनि प्रायः ओहने छलाह। सम्पादक साधारणतः ओहने लोक केँ चुनैत छलाह। एहिसँ हिनक केवल मैत्रीपरायणता प्रमाणित नहि होइछ प्रत्युत उदार वैचारिकता सेहो, जकरा अनुसार मार्क्सवाद सामाजिक समस्याक सम्बन्धमे एकटा वैज्ञानिक दृष्टिकोण छल। बादमे हमरालोकनिकेँ मार्क्सवादक सँग सुधीन्द्रनाथक सम्बन्ध पर विचार करबाक अवसर होएत। ई एकटा जटिल प्रश्न रहल अछि जकरा पर जँ कखनहुँकेँ विरोधी दृष्टिएँ विचार भेल अछि तँ कृपालु दृष्टिएँ सेहो। किन्तु सुधीन्द्रनाथक बाद 'परिचय' एकटा मार्क्सवादी पत्रिका बनि जाय ई कोनो आकस्मिक घटना नहि छल। एकरा अतिरिक्त, आरोप अथवा प्रशंसा जे सुधीन्द्रनाथक "परिचय" द्वारा बँगाल मार्क्सवादक सम्वर्द्धन-स्थल बनि गेल, एहि मे कोनो अत्युक्ति नहि छैक।

जे होअओ, सभ मिलाकेँ देखला पर बुझना जाएत जे साहित्यिक समीक्षा सभ प्राविधिक मार्क्सवादी होएबाक अपेक्षा आधुनिक अधिक छल। ओहिमे सँ अनेक सम्पादके लिखने छलाह। एहि सभसँ केवल आधुनिक साहित्यक हिनक विस्तृत अध्ययन तथा आपेक्षिक उदार रुचिक परिचय नहि भेटैछ प्रत्युत हिनक साहित्यिक समीक्षा द्वारा उद्भूत एकटा सौन्दर्यपरकताक सेहो। ई किछु लोकक भर्त्सना कएलन्हि—किछु लोकक प्रशंसा—कतेक आधुनिक दिग्गज लोकनि भर्त्सना पओलन्हि, कतेक अपरिचित किन्तु प्रतिभावान् लोक पओलन्हि प्राप्य बकियौताक चुकता। एकरा अतिरिक्त, किछु पश्चिमी दिक्पाल प्रारम्भहिमे पश्चिमी मानकक दृष्टिएँ धरि समीक्षित भेलाह—उदाहरणार्थ 1931मे फाकनर, 1937मे हापकिन्स। जँ उपनिवेशवादक द्वारेँ पश्चिमी लेखककेँ महत्त्व देल गेल तँ ई उपनिवेशवाद कोनो सामान्य कोटिक नहि छल, कारण जे एकरा अन्तर्गत आनल जाइत छल की तँ चिरप्रतिष्ठित रचनाकेँ अथवा अतिपक्व विधाकेँ जे पश्चिमहुँमे द्रुतगतिएँ

विलीन भय रहल छल।

परिचयक दोसर महत्त्वपूर्ण अवदान छल एकर निबन्ध सभ। एतहु विषय-वैविध्य छलैक—पूर्ण कल्पनापरक दार्शिकतासँ लय वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक एवं सामाजिक विषय धरि। प्रायः प्रत्येक अँकमे—एठिाम हम केवल प्रारम्भिक 12 वर्षव्यापी अवधिक बात कहैत छी—कम-सँ-कम एकटा छल दर्शनतत्व चिन्तन वा धर्म पर, एकटा इतिहास वा समाज शास्त्र पर तथा एकटा साहित्य पर। एकरा अतिरिक्त यदाकदा विज्ञान, भाषातत्व, ललितकला, जीवनी आदि पर लेख छल। पहिल पाँच वर्षमे सभसँ अधिक निवन्ध छल साहित्य पर। किन्तु दार्शनिक, तत्व-चिन्तन विषयक—धार्मिक अथवा ऐतिहासिक-सामाजिक लेखक संख्या मोटामोटी ओतबे छल—बहुत कम तँ नहिएँ। दर्शन विषयक लेखमे सँ अधिकांश छल सुधीन्द्र-नाथक पिताक। सँगहि वटकृष्ण घोषक, प्रबोध बागचीक, अनुसयीद अयूबक, हुमायूँ कबीरक। विषयवस्तु अधिकांश छल भारतीय—हिन्दू तथा बौद्ध सम्बन्धी। थोड़ेक पश्चिमी सेहो। ऐतिहासिक सामाजिक लेखमे अधिक विभिन्नता छल। उपर्युक्त यूरोपीय राजनीतिक दृश्य सम्पर्की लेखक अतिरिक्त लेख छल विवाह पर, चालिढालि पर, शिक्षा पर। सँगहि छल टैगोरक प्रसिद्ध रचना "कालान्तर" तथा स्वयं सुधीन्द्रनाथक "मनुष्य धर्म"। साहित्यिक लेख सभमे एक गुच्छ छल छन्द पर—जकर वादानुवादमे टैगोर, दिलीप कुमार, प्रबोधचन्द्र सेन, अमूल्यधन मुखर्जी तथा स्वयं सम्पादक भाग लेलन्हि। लेख छल सामान्य लेखन पर—यथा सुधीन्द्र-नाथक "काव्यक मुक्ति", हुनके ऐतिह्य ओ टी० एस० इलियट तथा टैगोरक "आधुनिक काव्य"।

'परिचय'मे प्रकाशित कविता ओ कथाक संख्या थोड़ छल। नाटक तँ नहिएँ जेकाँ, सम्पादक द्वारा एकटा अनुवादकेँ छोडिकेँ—एहि दृष्टिएँ 'परिचय' अन्य पत्रिका सभसँ भिन्न छल। एकरा त्रुटि कहल जाय बा नहि से अन्य बात थीक, कारण जे 'परिचयक' एकटा स्पष्ट उद्देश्य छल जकर पालन बरोबरि भेल। एकर आकार कतबो छोट रहल हो, अधिकांश नव कविक रचना एहिमे प्रकाशित होइत रहल। किछु तत्कालीन कथा साहित्य सेहो। एहिमे स्वरसाम्यक मात्रा अधिक नहि रहल प्रत्युत रहल केवल आधुनिकताक प्रवृत्ति—एक प्रकारक ध्यानक केन्द्रीकरण जेकाँ। जेना कल्लोल द्वारा कथासाहित्यक अथवा 'कविता' द्वारा काव्यक क्षेत्रमे। यथार्थ पूछल जाय तँ "परिचय" कोनो साहित्यिक आन्दोलन नहि छल। ई कोनो कवि वा उपन्यासकारकेँ जन्म नहि देलक। इहो कहब उचित नहि होएत जे सुधीन्द्रनाथ स्वयं 'परिचय'क बनाओल छलाह। ई जे करबाक चेष्टा कएलक ओ मात्र छल एकटा स्पष्ट मनक निर्माण, अभिरुचिक विषयमे बुद्धिक महत्त्वक स्थापन। वस्तुतः "परिचय" एहन प्रथम पत्रिका छल जे साहित्यसर्जन मात्र साहित्यक सर्जनक हेतु नहि कएलक, प्रत्युत एकरा जोड़ि देलक, बुद्धिपूर्वक जोड़ि देलक, सामाजिक, ऐति-

हासिक, दार्शनिक समस्याक सँग, जकरा एखन सांदर्भिक समालोचना कहैत छी। बँगलामे ओकर आरम्भ प्रायः 'परिचयैक' पृष्ठमे भेल। जँ हेतु सुधीन्द्रनाथ बादमे मार्क्सवादक प्रति उदासीन भय गेलाह, तँ हिनका "कलाक हेतु कला"क उन्नायक रूपेँ ग्रहण करब उचित नहि होएत। एकरा विपरीत हिनकामे आधिभौतिक प्रवृत्ति छल। ई जे किछु लिखलन्हि ताहिमे इतिहासबोध स्पष्ट छल। साहित्यिक आलोचना रूपेँ हिनक प्रसिद्ध रचना "काव्यक मुक्ति" आइ थोड़ेक सोझ-सपाट बुझबामे आओत। किन्तु बँगालाक कविताकेँ सामाजिक-ऐतिहासिक दृष्टिएँ देख-बाक ई प्राचीनतम प्रयासमे सँ एकटा छल।

जँ हमरा लोकनि "परिचय"क सन्दर्भमे एकर विचार करी तँ बुझि सकैत छी जे "परिचय" शुक्रदिनकेँ एतेक महत्त्व किएक देलक—किएक एकर सदस्य लोकनि स्वयं पत्रिकासँ एकोरत्ती कम महत्त्व शुक्रदिनकेँ नहि देलन्हि। साहित्यिक "अड्डा" वा गोष्ठी रहल अछि बंगला साहित्यक एक आवश्यक अंग—विशेषतः जकर संघटन भेल हो एकटा पत्रिकाकेँ केन्द्र बनाय। किन्तु एहि शुक्रवासरीय जेकाँ कदाचिते कोनो अड्डाक बैसाड़ एतेक नियमसँ भेल हो अथवा ओकर जीवन एतेक पैघ रहल होइक। एतय अन्य अड्डा जेकाँ पहुँचि हुलकी मारब यथेष्ट नहि छलैक—अधिकांशतः ई छल घरौआ परिचय स्थापित करब। आरम्भमे उद्देश्य छलैक सम्पादकीय एवं पत्रिकाक व्यवस्था सम्बन्धी विचार, किन्तु बादमे ई गौण सन बुझबामे अएलैक। जे कार्य औपचारिक रूपेँ साधारणतः किछु दिन चलैत रहल ओ छल समीक्षाक हेतु पुस्तक-वितरण। यथार्थमे ई सुच्चा बौद्धिक अड्डा बनि गेल। मासमे तीन शुक्रकेँ ई सुधीन्द्रनाथक 13, कार्नवालिस स्ट्रीटक बैसकखानामे होइत छल तथा चारिम शुक्रकेँ शहरक दक्षिणांशक सदस्यक सुविधार्थ प्रबोध बागचीक वालीगंजक मकानमे। यदाकदा दोसरो-दोसरो ठाम बैसक आमंत्रित होइत छल—विशेषतः चारुदत्तक ओहिठाम। बैसकक साधारण समय छल साँझ। अधिक काल सभ सदस्य उपस्थित होइत छलाह—कखनहुँकेँ घर ठसमठस भरि जाइत छल। 'हमर यौवन' नामक अपन आत्मकथामे बुद्धदेव बोस शुक्रवासरीयक सम्बन्धमे अपन अनुभव एना व्यक्त कएने छथि। हम हुनका उद्धृत कयैत छी यद्यपि ओहि समयमे ओ सुधीन्द्रनाथक महत्त्वकेँ पूर्ण रूपेँ ग्रहण नहि करैत छलाह, किन्तु बादमे ग्रहण कएलन्हि तथा मरणक पूर्व प्रायः दश वर्ष धरि सुधीन्द्रनाथक घनिष्ठ प्रशंसक लोकनिमेसँ एकटा रहलाह—"स्वच्छ प्रीताभ वा हरिताभ फर्श, कोमल सोफा, चमकैत चीना कप, उत्तम जलपान—कखनहुँकेँ उत्तरी कलकत्ताक उत्तमोत्तम पैघ समोसा, मधुर आदि, आन कोनो दिन 'फरपोक' जलपान। प्रत्येक वस्तु प्रचुर मात्रामे, एकक बाद दोसराक आगमन। सभ विज्ञ, ज्ञानक अनेक विभागमे निष्णात—प्रायः ज्ञान-विज्ञानक नवीनतम दिशामे स्वच्छन्द विचरणकारी, सभ मिलाकेँ उज्ज्वल गोष्ठी, गोष्ठीमे सभसँ देदीप्यमान गोष्ठीक सरदार सुधीन्द्रनाथ दत्त, अद्भुत आँखि,

विशिष्ट परिधान, कखनहुँकें हथकरघाक धोती एक फूट पाढ़िवाला, नीकजेकाँ मोड़ल। कोनो आन दिन सौखीनी जापानी किमोनो-कारी जमीन पर स्वर्णाभ नकशाक संग, भरल, सुस्पष्ट शैली-निपुण गप्पशप ओ सहज सामाजिकता, गोष्ठीक नेता सुधीन्द्रनाथ दत्त—अत्यधिक माधुर्यपूर्ण, उन्नतिशील एवं उज्ज्वल···जेना सामान्य 'बैसाड़ नहि, एकटा सुव्यवस्थित सभ्य समाज···हमरा एहने बूझबामे आएल।" ई उक्ति थीक "प्रगति"क सम्पादक जे "कल्लोल"क सदस्य छलाह—तथा जनिका "परिचय"क प्रथम अंकमे प्रमुख स्थान देल गेल छल-दोसर अंकमे जनिक नीक समीक्षा ओ आलोचना भेल—किन्तु जे ओ जनिक मित्र लोकनि सामान्य मतभेदक कारण एहिमे रहलाह तँ नहि, किन्तु रचना प्रकाशित करबैत रहलाह। ई ऐतिहासिक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण थीक। केयो एहि वा ओहि विवरण पर आपत्ति कय सकैत छथि, किन्तु आधुनिक बंगालक लेखकक एक वर्गकें, विशेषतः अधिक क्रान्तिकारीवर्गकें, कोना प्रभावित कएलक तकर यथार्थ विवरणीरूपें महत्त्वपूर्ण रहि जाएत।

के लोकनि अबैत छलाह? ई अवश्य जे एकर एकटा बीजकोष छल। किन्तु एकरा अतिरिक्त किछु लोक यदाकदा अथवा कोनो एक अवधिमे जखन सुधीन्द्रनाथ सम्पादक छलाह तथा वादो मे शुक्रवासरीयसँ सम्बद्ध रहि गेलाह। हिराण सान्याल एकटा श्रेणीवद्ध सूची देने छथि—इण्डो-लैटिन सोसाइटीक पूर्व सदस्य लोकनि ऑक्सकोर्डक पूर्वछात्र, कैम्ब्रीजकपूर्वछात्र, हिनका ओ सम्पादकक संग दोसर व्यक्ति लोकनि। एहिसँ विस्तृत सूची प्राप्त होइत अछि श्यामलकृष्ण घोषक पत्रिका सभसँ। एकर तीन जन्मदाता—सुधीन्द्रनाथ, गिरिजापति तथा नीरेन रायक अतिरिक्त तथा आरम्भमे आएल धूर्जटी प्रसाद, सत्येन बोस, प्रबोध वागचीकअतिरिक्त प्रायः एकर केन्द्र विन्दु छलाह हिराण सान्याल, श्यामलकृष्ण (उपस्थिति प्रायः पूर्ण नियमित) सुशोभन सरकार, वसन्त मल्लिक (प्रायः' सभक "मल्लिक दादा" जावत धरि ओ फिरिकें ऑक्सफोर्ड नहि चल गेलाह), सहीद सुह्रवर्दी, हम्फ्रे हाउस, विष्णु दे, हिरेन मुखर्जी, अपूर्व चाँद, अवनी वनर्जी, किरण मुखर्जी, हरितकृष्ण देव, हुमायूँ कबीर, सुरेन गोस्वामी, मजिद रहीम, तुलसी गोस्वामी, जीवन्मय राय, अबु सहीद अयूब, सुमन्त्र महालनवीस। जे लोकनि अनियमित रूपें आबथि ताहिमे छलाह, वटकृष्ण घोष, सुरेन मैत्र, अनाथनाथ वसु, हेमेन्द्रलाल राय, योगेश सिंह. सुधीर सिंह तथा प्रारम्भिक उन्नायक चारुदत्त। प्रारम्भिक सदस्य जे आएब बन्द कय देलन्हि से छलाह उत्तराक सुरेश चक्रवर्ती जे किछु दिन 'परिचय'क प्रबन्धक सेहो छलाह, अन्नदा शंकर राय, सुधीर कुमार चौधरी तथा प्रारम्भिक उत्साही सदस्यमे सँ एक सुबोध मुखर्जी। प्रमथ चौधरी कदाकदा आबथि, किछु दिन यामिनी राय नियमसँ आवथि। अन्यान्य कलाकार एवं कला-समीक्षकमे सँ जे कखनहुँकें आबथि से छलाह अतुल बोस, सतीश सिंह, ओ० सी० गांगुली तथा अमिय गांगुली—मेरठ केसक

वन्दी राधारमण मित्र सेहो कतेक बेरि अएलाह—पी० सी० महालनवीस एक-दू बेरि। अतुल चन्द्र गुप्त कहियो नहि अएलाह, किन्तु परिचयक मित्र बनल रहलाह। बादमे किन्तु सुधीन्द्रनाथक कार्यकालमे सदस्य गणमे छलाह समर सेन, लिंडसे तथा मृणालिनी इम्मर्सन, मृणालिनीक वहिनि शीला ओ अनिला, लीलाराय (बादमे मजुमदार), अरुण सेन, चंचल चटर्जी, ज्योतिरीन्द्र मैत्र, अशोक मित्र, सुभाष मुखर्जी, प्रियरंजन सेन, नन्दगोपाल सेनगुप्त, अवनि चटर्जी, मारकौम मुगरीज पहिने किछु दिन अएलाह। बादमे ओहिना किछु दिन एम० एन० राय। संगहि एकटा असैनिक अफसर ह्यूजेज जे बंगला बजैत छलाह। सम्भव जे ओ एहि बुद्धिजीवी लोकनि पर नजरि रखैत होथि। जेना ऊपर उल्लेख कएने छी, 'कल्लोल'क त्रिमूर्ति किछुए बेरि अएलाह। मनीष घटक ओ अजित दत्त किछु अधिक बेरि। अमिय चक्रवर्ती एक-दू बेरि अएलाह। कलकत्ता विश्व विद्यालयक ख्यातनामा प्रफुल्लचन्द्र घोष सेहो एक बेरि अएलाह। विशिष्ट अतिथिओ लोकनि छलाह, जेना जापानी कवि नोमुची तथा सरोजिनी नाइडू जे एकसँ अधिक बेरि अइलीह, इ० एम० पार्सस्टर, लिन यूतँग, नीधम तथा वर्नेल। यद्यपि टैगोर कहियो नहि अएलाह ओ एक-दू बेरि गोष्ठीकेँ जोरासाँ कोमे आमंत्रित कएल। एक बेरि निमंत्रण पहुँचबामे बिलम्ब भेलैक। जेना श्यामलकृष्ण उल्लेख कएने छथि, सुधीन्द्र अभ्युक्ति कएलन्हि—"हुनक थिकन्हि भूत ओ वर्तमान, भविष्य हमरा लोकनिक थीक"।

एहि सूची सँ—सूचीमे जोड़लो जा सकैत अछि—ई स्पष्ट अछि जे परिचय सभ प्रकारक बुद्धिर्जावी लोकनिकेँ आकर्षित कएलक, किन्तु अधिक ओहि प्रकारक लोककेँ जे नव विचारक प्रति उन्मुख छलाह। एकर स्वरूप सर्वदेशीय छलैक। एकर नियमित सदस्यमे किछु एहनो छलाह जे बंगला नहि बाजथि, यथा सहीद सुह्रवर्दी। जन्मना बंगाली होइतहुँ साधारणतः हिनक बजबाक भाषा छल अंग्रेजी। अड्डाक झोकँ छल बौद्धिकताक दिशि। जाबत धरि एहिमे वसन्त मल्लिक रहलाह हिनक चेष्टा रहल शुक्रवासरीयकेँ चापल्य सँ बचाकेँ रखवाक। ई दार्शनिक छलाह, तेँ ई गप्पशपकेँ चिन्तनशीलताक दिशि मोड़बाक प्रयास करथि। किन्तु स्वभावतः दर्शनमात्र विचारणीय विषय नहि छल। विचारणीय विषय छल साहित्य; ताहूसँ अधिक राजनीति। जँ हमरा लोकनि श्यायलकृष्णक पत्रिकाकेँ देखी तँ स्पष्ट भय जाएत जे राजनीतिक समस्या हुनका लोकनिक अति प्रिय छल, ओहिमे वैविध्य छलैक—जहिना समीप सम्बन्धी तहिना दूर सम्बन्धी। बंगालक राजनीतिक संग-संग मुसोलिनीक राजनीति। यथार्थमे एकरा सभकेँ उजागर करबाक चेष्टा कएल जाइत छल। एकटा मत जे बारंबार उच्चरित होइत छल ओ छल मार्क्स-वाद। ई गोष्ठी वा पत्रिकाक मत छल से नहि, कारण जे पत्रिकाक कोनो एकटा मत

नहि छलैक। एहि सभक चिन्ता सम्पादकके नहि छलन्हि, कारण जे ओ यथार्थ उदार विचारक छलाह।

हम एहि पर बल देबय चाहैत छी, किएक तँ वस्तुतः सुधीन्द्रनाथ सुच्चा कवि छलाहे नहि—चाहे एकरा नीक अर्थमे लेल जाय अथवा अधलाह अर्थमे। राजनीति आ आर्थिक इतिहासमे, वैचारिकताक इतिहासमे, प्राकृतिक आ जैवविज्ञान धरिमे, एहन तर्कसम्मत प्रक्रिया जेना गणितमे हिनक अभिरुचि केवल सुच्चाटा नहि छल प्रत्युत हिनक कविताक सहवर्ती सेहो—अर्थात् कविताक रसास्वादनक काल पूर्वोक्त विषय सभके कलाप्रेमीक सामान्य पल्लवग्राहिता कहि छोड़ि नहि देल जाय। चारिम दशकक उत्तरार्धमे इएह एम०एन० रायके यूरोपीय इतिहास सम्बन्धी धारणाके लिपिबद्ध करबाक आग्रह कएल। 'बुद्धिवाद रोमानिकता तथा क्रान्ति' नामक दू खंडक पुस्तकक अंशतः योजना सेहो प्रस्तुत कय देल। यथार्थमे हिनक गद्य आ पद्य सँ जे रूप निखड़ैत अछि ओ थीक इतिहासके बुझबाक हिनक प्रचेष्टा। हिनक लेखन शैलीमे ई अंशतः द्योतित होइत अछि—एक प्रकारेँ व्यापक तर्क-पूर्णता। जहिना कवितामे तहिना गद्यमे।

सामाजिक-राजनीतिक वाद-विवादक बाद शुक्रवासरीय जाहि विषयके पकड़लक ओ छल साहित्य एवं कला सम्बन्धी विवाद। कोन चित्रकला अपेक्षया नीक, अवनीन्द्रनाथ टैगोरक अथवा नन्दलाल बोसक अथवा यामिनी रायक? सुधीन्द्रनाथ तथा सुह्रवर्दी अवनीन्द्रनाथके नीचाँ स्थान दैत छलाह, कारण जे हिनक कलाकृति किछु अतिरिक्त रूपेँ निदर्शी छल, किन्तु निरेन राय छलाह निदर्शी चित्राँकनक पक्षधर। की सभ चित्राँकन चित्राधारक बाहरक वस्तुक दिशि सँकेत नहि करैछ? साहित्यिक एकटा समस्या छल गद्यकाव्य। सुधीन्द्रनाथ समेत बहुत व्यक्तिके एहिमे सन्देह छलन्हि। वस्तुतः ओ लोकनि रवीन्द्रनाथके अपवादमे रखैत छलाह—वएहटा जनैत छलाह जे गद्य कोनाके कविता बनाओल जा सकैछ। एक बेरि समीक्षाक क्रममे हिराण सान्याल द्वारा ई मत प्रचारित भेला पर बुद्धदेव बोस, जे एकटा प्रबल स्तंभ छलाह, एकर घोर आलोचना कएल। 'परिचय'मे उत्तेजनाक सृष्टि भय गेल। किन्तु ओतय एकटा लोक छलाह वीरेन राय जे दुर्दान्तताक समर्थन कएल, केवल एही बेरि नहि प्रत्युत अन्यान्यो अवसर पर।

तृतीय दशक भरि शुक्रवासरीय तथा 'परिचय' अपन स्वभाव एवं गौरवके कायम रखलक। केवल 1936 मे परिचय मासिक बनि गेल। ई समय पर प्रकाशित होइत रहल तथा शुक्रवासरीयक बैसक नियमतः होइत रहलैक। मर्मस्थल वएह रहल, लेखक ओ परिचारक लोकनि सुस्ते-सुस्तेँ बदलैत रहलाह जे साहित्यिक पत्रिका एवं साहित्यिक गोष्ठीक हेतु स्वास्थ्यप्रद चिह्न थीक, किन्तु जखन युद्ध आएल सुधीन्द्रनाथक हेतु संकट उपस्थित भय गेल। ठीक एही समयमे एकटा व्यक्तिगत

संकट सेहो आबि गेलन्हि। फल ई भेल जे पत्रिका एवं गोष्ठी दूनूक प्रति हिनक रुचि घटि गेल। हीराण सान्याल जे नवम वर्षक दशम अंक सँ लय सह-सम्पादक छलाह, सम्पादकक प्रायः सभ काज करबाक लेल बाध्य भय गेलाह। सुधीन्द्रनाथ अधिकाधिक मात्रामे शुक्रवासरीय सँ फराक रहय लगलाह। अन्तमे स्थिति एहन भय गेल जे ई सम्बन्ध विच्छेद कय लेलन्हि। किन्तु ओकरा सभकेँ समेटि लेबाक बदलामे अपनहि हटि गेलाह।

4

सुधीन्द्रनाथक कविताक दोसर पुस्तक 'और्केस्ट्रा' 1935 मे प्रकाशित भेल। एकरा बाद 1937 मे हिनक तेसर पुस्तक 'क्रन्दसी' प्रकाशित भेल ओ 1940 मे चारिम पुस्तक 'उत्तर फाल्गुनी'। एहि दूनूक बीच 1938 मे आएल हिनक पहिल निबन्धपुस्तक 'स्वगत'। एकरा अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच तथा अंग्रेजी कविताक अनुवाद करबामे ई संलग्न रहलाह। एकरा सभकेँ संशोधित एवं एकत्र कय पुस्तक रूपमे प्रकाशन ई बादमे कएलन्हि। एकटा एहन कविक हेतु जनिक समग्र रचना छल मात्र कविताक छओ पुस्तक, अनुवादक एक, निबन्धक दू तथा किछु अपूर्ण लेखन, ई सभ प्रायः एके दशकमे कय लेब उल्लेखनीय थीक। कतोक वर्ष बाद जखन ई 'और्केस्ट्राक' दोसर संस्करण प्रस्तुत करैत छलाह ई स्मरण कय आश्चर्यान्वित भेलाह जे एक समयमे हिनको कलम गतिशील छल। कोनो आश्चर्य नहि जे ओहि समय धरि आबि हिनका लेखनीकेँ लकवा मारि दैत।

'और्केस्ट्रा'मे 25 टा कविता छल। एहिमे 11 टा छल ओहि कविता सभमे सँ जे हिनक उत्तरी अमेरिका-सह-यूरोपीय यात्रा, जकर उल्लेख ऊपर कएल गेल अछि, मे रचित भेल। पूर्वापरक क्रम छल, फिरिकेँ अएलाक बाद 8 मइ सँ 10 दिसम्बर, 1929 बीच एगारह कविता तथा चौदह कविता अप्रैल 1930 सँ जनवरी, 1933 क बीच। फिरिकेँ अएलाक बादक सभ कविता एहिमे संगृहीत नहि भेल। किछु चल गेल 'क्रन्दसी' मे तथा किछु 'उत्तर फाल्गुनी' मे। 'और्केस्ट्राक' सभ कविताक विषयवस्तु अछि मात्र एक अनुभव। एहन कविता जकरा विषय-वस्तुमे विविध अनुभव छलैक तकरामे विलम्ब स्वाभाविक छलैक। जे होअओ, एहिमे सन्देह नहि होएबाक चाही जे ई मात्र एक अनुभव कोन रूपक छल। टैगोरक बाद और्केस्ट्राक कविता प्रेमपरक सर्वोत्तम कविता थीक। पुस्तकक विज्ञापन निम्न प्रकारक अछि। स्पष्टतः एकर लेखक स्वयं पुस्तककर्ता छलाहः

"अपन पहिल कविता पुस्तक 'तन्वी' क प्राक्कथन मे लेखक अपनाकेँ पूर्वसूरि लोकनिक छाया कहलन्हि तथापि टैगोर धरि एहि कविता सभमे असाधारण मौलि-कता पओलन्हि। 'और्केस्ट्रा' आओर अधिक मौलिक अछि। स्वरूपमे, सुगन्धिमे

लयबद्धतामे, अलंकारमे। पुस्तकक वैविध्य एहन अछि जे प्रत्येक व्यक्ति कलासमीक्षक सँ सहमत होएताह जे सुधीन्द्रनाथ यथार्थमे आजुक बंगला साहित्यिक अग्रदूत थिकाह। एकर कारण ई जे यद्यपि 'ऑर्केस्ट्रा'मे प्रतिष्ठित वातावरणक अभाव नहि अछि, तथापि सर्वत्र ई अछि संयमित। एहिमे आधुनिकतम बौद्धिकता तँ छैक, किन्तु सीमित मात्रामे। कविक युवावस्थाक समस्त अनुभव दूनू गुणक सम्मिश्रणक संग स्फुरित भेल अछि। अतएव जेहन उपयुक्त भेल अछि तेहन रोचक सेहो। किन्तु 'ऑर्केस्ट्रा' जागरूक पाठकक अपेक्षा रखैत अछि। ऑर्केस्ट्रा रचित भेल अछि ओहि लोकक हेतु जे शिल्पक सूक्ष्म इंगितकेँ पकड़ि सकैत छथि जे विषयवस्तुक सम्बन्ध मे अयथार्थ कल्पनाक पोषण नहि करैत छथि, जे पुरना परम्परा सँ वशीभूत भय गम्भीरतम मानुषी आवेगक परित्यागक अभ्यासी नहि छथि, विशेषतः जे कलाक क्षेत्रमे प्रतिभाक आदर करैत छथि। ओ कविता जकरा आधार पर शीर्षक अछि एकटा अविस्मरणीय कृति थीक। एकर प्रतिस्पर्धी, केवल बंगला साहित्यमे विरल अछि, सएह नहि प्रत्युत पश्चिमी साहित्यमे सेहो।"

ई छल विज्ञापन, अन्यथा सुधीन्द्रनाथ अपना कविताक एना गुणगान नहि करितथि। यथार्थमे एकर दोसर प्रकाशनक भूमिकामे एहि कविताक सम्बन्धमे यथेष्ट आलोचनात्मक स्वरमे कहलन्हि :

"जे कविता अनुभव सँ ऐश्वर्यशील रहैछ तकर कथन शैली स्वभावतः वैयक्तिक होइत छैक। ऑर्केस्ट्रामे जानिबूझिकेँ अथवा अनजानमे टैगोर सँ एकाधिक उक्तिए टा नहि लेल गेल अछि, प्रत्युत एकर भाषा सेहो एक प्रकारेँ सांध्यभाषा थीक-प्रांजल ओ ग्राम्य भाषाक बीचक भाषा जकर प्रयोग आजुक बंगला कवितामे प्रचलित अछि। ऑर्केस्ट्रा बंगला कविताक अराजकता सँ परिपूर्ण अछि—तुकबन्दी अथवा छन्दक अनुरोधेँ शब्दक तोड़-मरोड़, क्रियापदक ग्राम्यरूप अथवा चरणक अनुरोधेँ अक्षरक घटाएब-बढ़ाएब 'होएब' वा 'करब' केर वारम्बार प्रयोग' तथा अधिकरण कारकक अनावश्यक रूपेँ अधिक प्रयोग। नायिका बीसम शताब्दीक युवती रहनहुँ जेना हिनका काड़ा ओ अन्य पुरान चालिक गहना सँ सजा देल जाइत अछि, तहिना हिनक कथोपकथन एवं व्यवहारमे संस्कृत अलंकारक स्पष्ट प्रभाव बहुधा परिलक्षित होइछ।

"इलियट कविकेँ उत्प्रेरक कहने छथि। हमरो विचार जे वैयक्तिक मानसक वंशानुगत मनःस्थितिकेँ अभिव्यक्ति प्रदान करब कविजीवनक सभसँ पैघ उपलब्धि थीक। किन्तु केयो अपना समयक भावनाकेँ तिरस्कृत कय एहि संयोगकेँ प्राप्त नहि कय सकैछ। जे केयो एहि संयोगकेँ पावय चाहैत छथि तनिका अपन अनुभव तथा वंशानुगत ध्यानधारणाकेँ प्रतीक रूपेँ ग्रहण करय पड़तन्हि। यद्यपि एहन व्यक्तिक हेतु, जे कल्पनासम्पन्न छथि, हमर प्रेयसी ओ कालिदासक प्रेयसी समान थीक, किन्तु एहि समानताक आधार ओ छद्मवेश नहि थिकैक जे स्थानान्तरित

कय देल जा सकय, प्रत्युत ओ थीक प्रेमक निर्वैयक्तिक स्वरूप। एकरा विपरीत ऑर्केस्ट्राक अनुभव कोनो सूक्ष्मतत्वसँ नहि उपजैत अछि। दिमाग एकरा चारुकात अनवरत एहि द्वारेँ घुमैत रहैत अछि जे एकर विवरण स्मृतिपटल पर सर्वदा-क लेल अंकित भय जाय। एहि सौन्दर्यक स्वतन्त्र व्यक्तित्व जकर निर्माण अंश-अंश मे भेल, ओहि समयमे एहि द्वारेँ प्रकटित नहि भेल जे कविक भावनात्मक सम्बन्ध अति निविड़ छल, अर्थात् ऑर्केस्ट्रामे सम्प्रेषण एवं सहजानुभूतिक बीच सह-अस्तित्वक अभाव छैक। अतएव तीव्र ओ क्षणिक भावनाक उत्प्रेरण रहनहुँ, एकर असमान छन्द बहुत काल शिथिल भय गेल अछि।"

तथापि पहिल संस्करणक विज्ञापनमे कतोक दाबाक मूल्य एहि हेतु अछि जे कतबो अतिरंजित रहओ, ऑर्केस्ट्राक अनुभव धरि प्रामाणिक अछि। एही आधार पर टैगोर एकर अनुमोदन कएल तथा एहि सँ पूर्वक प्रत्येक वस्तुकेँ कृत्रिम मानल। दोषपूर्ण रहितहुं, ऑर्केस्ट्राक कविता बंगलामे नवीन वस्तु छल। निश्चितरूपेँ उत्प्रेरणाक परित्याग बुद्धिपूर्वक कएल गेल अछि। यद्यपि विषयवस्तु थीक भावावेग, प्रचंड भावावेग किन्तु बुद्धिपूर्वक एकरा सीमित राखल गेल अछि। ई नियमन केवल स्वरूप सम्बन्धी नहि अछि—ई ततबा लचकदार अछि जे आवेगक प्रभावक संग सामंजस्य बैसा लेअय। यथार्थमे बंगलाक पयार एकटा अपूर्व छन्द अछि। नियंत्रणो ओही रूपक जे कविताक अनुभवक स्फुरणप्रणालीक उपयुक्त हो। एकटा कविताकेँ लेल जाय अधिक स्मरणीयमे सँ एकटा अर्थात् 'नाम'।

एखनहुँ तोरा, केवल तोरा हम चाहैत छी
एखनहुँ हम कनैत छी
गुमसुम रिक्तिक कानमे
जे, तोरा विना,
असह्य अछि हमर वर्तमान, भविष्य वन्दी अछि निराशाक गह्वरमे
आ मरण अछि हमर एकमात्र निस्तार।
निराशाक असीम गभीरमे
उद्देश्यहीन परिधिक चारूकाल एखनहुँ घुमबैत छह हसर प्रेयसि !
छीजल गति, टूटैत ताराक भुस्सी जेकां,
हमर आँखि देखि सकैत अछि केवल भूतक रुग्ण आभा।
आ हमर जागल स्वप्नमे
जे बँचल अछि ओ थिकीह तों आ स्मृतिसमूह।
तथापि हमर हृदय
फूसिक सांत्वनाकेँ अस्वीकार कय दैत अछि।
एकटा मृगमरीचिका, हम जनैन छी, तों थिकीह,

हमर पकड़ाओ सँ बाहर—जतय जीवन जीवनक संग एकाकार भय जाइछ।

केयो नहि, हम जनैत छी, हमर संसारक भारकेँ कान्ह लगा सकैछ :
एहि संसारक विनाश निश्चित छैक, जे हमर अपन कएल थीक
हमरा पीसि देत एक दिन
आ स्वयं शून्यमे मिलि जाएत।
व्यर्थ, हम जनैत छी,
व्यर्थ ओ गौरवोज्ज्वल संध्या
जखन, हमरा पर केन्द्रित, तोहर अतलस्पर्शी आँखि
उमड़ि आएल प्रसादवर्षी स्वातीक पवित्र जल सँ।
किएक तँ हम ओहि वन्यपथ पर प्रकट स्वीकार कएल
वएह पुरना पारम्परिक प्रेम :
अपनाकेँ ठकैत, तोहर अन्तस्तलमे हम नहि गेलहुँ
आ अपना अन्तस्तलकेँ मिथ्या सँ पाटि देल।
अनेक बेरि अधैर्यक फंदामे पड़ि
आनल हम किशोर गाल पर लज्जाक रेखा।
क्षणिक पुष्पोद्गम सँ प्रेरित भय
विस्मृत अशोक केँ हम कठोरता सँ नवा देल
दोसराक ओहि चरण पर। किन्तु रौद, वर्षा एवं बसातमे
ओकर मेटाइत पदचिह्न आब हेड़ा गेल,
आ युगक बाद
तोहर स्मृतियो धरि माटिमे मिलि जाएत।
आ तैयो हम तोरहि चाहैत छी, केवल तोरा।
तथापि एहि भुताहि कोठलीमे
हमर आधि अनादर करैत अछि अकथनीयकेर,
आ अन्तहीन हानिक भाव जपैत अछि केवल तोहर नाम।

पहिल गति दोसर सँ संतुलित अछि। तेसर, जे दोसर सँ भिन्न अछि, चारिम सँ जे पहिलकेर हेरफेर थीक। पहिल ओ दोसर मिलिकेँ कविता नहि बनि सकैत छल। ढाँचाक हेतु तेसर ओ चारिम आवश्यक छलैक। अब केर जोड़ामे अन्तर्निहित अनुभवक फलितार्थ छल तीव्रता ओ क्षणभंगुरता। एहि ठाम एकटा प्रारम्भिक द्वन्द्वात्मकता अछि तकर विकाश वादक कवितामे भेल—ओ द्वन्द्वात्मकता जे केवल मानवीय इतिहासक व्याख्या नहि करय प्रत्युत वैयक्तिक ओझराओटक सेहो। क्षण-भंगुरता सुधीन्द्रनाथक कविताक क्रमशः सनातन विषयवस्तुरूपेँ प्रकटित होबएवाला छल। किन्तु आवेगक तीव्रता विना क्षणभंगुरताक कोना अर्थ नहि। प्रेम स्वभावतः

तीव्र एवं क्षणभंगुर होइछ—एही प्रकारक 'अनुभव' एहिठाम अछि।

ओ कविता जे शीर्षक बनल एकटा उपलब्धि थीक, यद्यपि पहिल संस्करणक विज्ञापनमे ई जे कहल गेल जे ई अतुलनीय अछि से अछि अतिरंजित। सुधीन्द्रनाथक सभसं पैघ ई कविता (329 पंक्ति) आरम्भ कएल गेल 25 जनवरीकेँ ओ समाप्त-भेल 21 फरबरी, 1932 केँ। एकर सात खण्ड छैक ओ प्रत्येक खण्डक तीनटा गति छैक आ तीन-तीनक सातोटाक विन्यास भेल अछि लयवैविध्यमे। जँ आन कथूक हेतु नहि तँ एकरा हेतु कविताकेँ मूल्य देब उचित। बुद्धदेव बोसक मतेँ ई छल सुधीन्द्रनाथक मुक्त छन्द। जेना द्वितीय संस्करणक भूमिकासँ स्पष्ट अछि, ई कविता सुधीन्द्रनाथक प्रिय छल :

"···ऑर्केस्ट्राक प्रथम आलोचककेँ शीर्षक कवितामे स्वर संगतिक इंगितो धरि नहि भेटलन्हि जे पश्चिमी स्वरसंगतिपूर्ण संगीतक प्रधान लक्ष्य थीक। यद्यपि हुनका लोकनिक टिप्पणीमे सांगीतिक सामंजस्य तथा मानसिक अक्षुब्धताक अन्तर बुझबाक ओतेक प्रयास नहि पबैत छी तथापि हम हृदय सँ स्वीकार करैत छी जे निम्नलिखित कोनो कवितामे ओहि दृष्टिकोणक लेश मात्रो नहि अछि जकर अचूक स्फुरणे विशुद्ध काव्य थीक। किन्तु बहुरूपी कविता आर्केस्ट्रा शाब्दिक साहाय्यक अभावहुमे देह ओ मनक विवाहक साप्तपदीक प्रतिनिधित्व करैत अछि—आ जेना एकर सातो अंश एकटा सीढ़ी बनि गतिशीलताक शिखर पर पहुँचा दैछ तहिना प्रत्येक अंश क्षणभरिक लेल तीन दृष्टिकोणकेँ एतीकृत कय दैत अछि। अर्थात् प्रत्येक अंशमे वेरि-वेरि अबैत अछि नाटकीय दृश्यक उद्भावन, श्राव्य समूह-गानक अश्रुत आह्वान तथा एकटा खास श्रोताक समेकित आवगेक सदर्भसमूह। एहि समग्र कविताक त्रिपथी धारामे केवल एकटा समस्त दिनक अनुभवेटा प्रकाशित नहि होइत अछि प्रत्युत एतय—प्रायः पुस्तकक अन्य भागमे सेहो—वाह्य प्रकृति एवं आभ्यन्तरीण अस्तित्वक, पार्थिव एवं अपार्थिवक मिलनक सेहो इंगित भेटैत अछि।"

दू वेरि फेरि सुधीन्द्रनाथ एहने उच्चाभिलाषी भय प्रयास कएलन्हि जाहिमे वर्णनात्मकता वा नाटकीयता प्रदर्शित भेल गीतिकाव्यक सांचामे। 'सम्वर्त' तथा 'ययाति'क सफलता उच्चतर कोटिक छल। आर्केस्ट्राक आपेक्षिक असफलताक कारण छल व्यंग्यात्मक दूरीक आपेक्षिक कमी। यथार्थमे ई तीनू कविता, जकर रचना भेल एक-दोसरा सँ मोटामोटी एक दशकक बाद, केँ हिनक साहित्यिक जीवनक तीनटा प्रधान मोड़ मानल जा सकैत अछि। एकरा सभकेँ एक संग मिलाकेँ पढ़ला पर अधिकांशतः हिनक तात्पर्य स्पष्ट भय जाइत अछि।

ऑर्केस्ट्राक एहन कवितामे एकटा कविता अछि जकर उल्लेख ऊपर नहि भेल, किन्तु जे विशेषरूपेँ उल्लेखनीय अछि। ओहि कविताक नाम थीक 'शाश्वती' जे अधिक काल 'संग्रह' मे स्थान पओलक अछि। ओकर कतोक मुख्य पंक्तिक हम

अपन अकुशल अनुवाद प्रस्तुत करैत छी :

एक बेरि एहने वर्षाधौत रात्रिमे—
की सए जन्म पूर्व ?—
ओ आइलि एवँ हठात् रखलक अपन हाथ हमरा हाथमे,
मिलओलक अपन आँखि हमरा आँखि सँ स्वाभाविक स्निग्धताक संग।
ओहू राति आइये सन उद्धत वायु छल
खेलाइत ओकर स्वर्णाभ कवरीक संग;
सभ अभिलाष आ अगणित युगक साफल्य
आगां बढ़ल पता लगएबाक हेतु ओकर अवनत आँखिमे।
एक शब्दक कम्पन होइत संदिग्ध शीर्ष
बैसा देलक सातो स्वर्गकेँ;
एक क्षण रास्ताक पार अटकि गेल,
आ पलायमान काल रुकि गेल;
एक प्रतिश्रुतिक निस्सीम स्वातन्त्र्य
खसा देलक ध्रुवताराकेँ भूमि पर;
सांघातिक मूर्खता एक स्मृतिक
प्रलयकेँ लय आएल।
नदीक परिपूर्णता ओकर आवेगक प्रतिनिधित्व करैछ,
अतल गभीर सँ उठैत सीमाहीन समुद्रमे विला गेल;
ओकर हृदय प्रतिविम्बित भेल स्वच्छ आकाशमे
स्वाती एकटा रत्न ओकर राजतिलकक हेतु।
स्वप्निल आँखि नील ओकरे आँखि सन;
ओकर स्निग्धताक नीचांक खेतमे;
हमर जिह्वा पर फेरि 'हमर प्रियतमे';
किन्तु प्रेम करैत अछि ओ ककरहु अनका सँ आइ।
स्मृतिक चुट्टी जमा करैत अछि
मृत आनन्दक फसिल अन्धकारक गर्त्तमे;
ओ विसरि देअओ, आबएवाला कल्पहुमे
हम नहि विसरब, हम नहि विसरब।

प्रसंगतः हम कहब जे ई पंक्ति सभ तथा ऊपर जे सभ उद्धृत अछि संशोधित आर्केस्ट्रा सँ लेल गेल अछि जकरा ई तृतीय संस्करणक हेतु प्रस्तुत करैत छलाह। ई सुधीन्द्रनाथक दोसर पक्ष छल आ द्वितीय संस्करणक भूमिकामे ई अपन समर्थनमे कहलन्हि—"ओर्केस्ट्राक त्रुटि, असफलता, अशुद्धि आदि आइ हमरा कतबो लज्जित

करओ, जँ हम एहि कविताक पुनर्मुद्रण नहि करबितहुँ तँ अनावश्यक रूपेँ आत्म-सम्मान द्योतित होइत। ओही प्रकारेँ जँ संशोधन करबासँ विमुख भय जइतहुँ तँ औपचारिक विवेक एवं पाठकक प्रति अवज्ञा प्रकाशित होइत। कारण जे प्रकाशनक लक्ष्य थिकाह पाठक ओ पाठक बाध्य नहि छथि जे लेखकक प्रयासक त्रुटिक मार्जन कय देथि। एकरा विपरीत हम नहि चाहैत छी 'ऑर्केस्ट्रा'क सारकेँ हम आजुक अपन स्तर धरि पहुँचा दी।"

'क्रन्दसीक' संशोधन सेहो ई आरम्भ कय देने छलाह जे हिनक मरणोपरान्त प्रकाशित हिनक काव्य-संग्रहमे लेल गेल। सुधीन्द्रनाथक तृतीय पुस्तक हैफी हाउस केँ उत्सर्गित भेल। एहिमे प्लेटोक 'फोड्रस'क स्मृतिलेख देल गेल छल। एकर विज्ञापन (जेना ऑर्केस्ट्रामे तहिना एकरहु प्रायः ग्रन्थकारे प्रस्तुत कएने छलाह) एना छल :

ई कहब कठिन जे सुधीन्द्रनाथक पाठकक संख्या कतेक अछि। किन्तु प्रायः ई निर्विवाद जे बंगालक प्रथम पंक्तिक कवि मे हिनक स्थान छन्हि। कारण जे हिनक विरोधी समालोचक सेहो निःसंकोच हिनक भावनात्मक प्रामाणिकता एवं उक्ति वैचित्र्यकेँ स्वीकार कएलन्हि अछि। हिनक प्रशंसक लोकनि तँ हिनक पहिलुक रचना ऑर्केस्ट्राक सम्बन्धमे अशोभनीय अतिरँजन सँ विमुख नहि भेलाह अछि। हमरा लोकनिक लग कविक गुण वर्तमान संग्रहमे विशेष रूपेँ स्पष्ट भेल अछि। 'क्रंदसी' मे सुधीन्द्रनाथक ओहि बहुमुखी भावुकताक स्फुरण भेल अछि जकरा विषयवस्तु एवं रचनाक स्वर क बीच समरसता रखबाक हेतु ऑर्केष्ट्रामे फराक राखल गेल। प्रकृति एवं प्रेयसी एहि कविता सभमे कदाचिते आइलि हो। किन्तु सन्दर्भक जे आवेगपूर्ण स्फुरण एतय प्रचुरताक संग विद्यमान अछि ओ कम-सँ-कम बंगला कवितामे तुरन्त नहि भेटल। अतः अन्य गुणक हेतु नहि तँ एहि गुणक बल पर 'क्रंदसी'क स्वागत होएबाक चाही।

कविताक संख्या अछि पचीस जाहिमे सँ पाँचटा थीक उत्तरी अमेरिका-सह-यूरोपीय यात्राक पूर्वक। अन्य थीक बादक। ओहि पाँच मे सँ 'कुक्कुट' पर रचित कविता ओ थीक जकरा लय सुधीन्द्रनाथ श्रीगणेश कएलन्हि। सभ सँ पूर्वक कविता यथार्थमे ओ थीक जे 15 फाल्गुन, 1334 बंगाब्द अर्थात् 1928 क आरम्भमे 'तन्वीक' हेतु लिखल गेल। अतिरिक्त उन्नैसटा 1931 क प्रारम्भिक भाग ओ 1934क शेष भागक थीक। एहि प्रकारेँ कतोक कविता 'ऑर्केस्ट्रा'क कविताक समसामयिक थीक। विज्ञापन मे प्रचारित दाबाक औचित्य रहओ वा नहि, 'क्रन्दसी'क कविता अपेक्षया अधिक गम्भीर, अधिक सन्देह एवं निराशापूर्ण अछि। विषयवस्तु मे निःसन्देह विविधता छैक, किन्तु एतय एकटा एहन स्वर साम्य छैक जाहिसँ पुस्तकक स्वरूप निर्धारित होइछ। कतोक कविता अछि वैयक्तिक तथा कतोक अन्य अछि वाह्ययाथार्थ्यपूर्ण। बुझना जाइछ जेना भगवान्क सम्बन्धक

कतोक कविता दूनूक सापेक्ष महत्त्वकेँ स्पष्ट कय देने हो। एतहि सुधीन्द्रनाथक कविताक स्वाभाविक नैराश्य व्यापक ओ घनिष्ठरूपेँ अनुभूत भेल। 'सम्प्रति'-नामक एकटा छोट कविता सँ ई प्रायः नीक जेका स्पष्ट भय जाएत :

वर्षाक ई मनहूस दिन हम दिवास्वप्नमे बिताओल।
हृदय-कपाट केँ नीक जेकां उन्मुक्त कय
स्मृतिक लेल एकटा सुगम पथ बना देलक।
अन्ध आँखि सँ हम देखल
एहने एकटा दोसर दिन घेड़ल टेढ़-मेढ़ आकाश में;
वर्षाक विरामहीन क्रंदन मे
ओहि उच्चारणक स्निग्ध स्वागतस्वर सुनल।
खिड़की पर पछड़ैत झंझाक कोप
प्रतिध्वनित करैत छल हमर विनष्ट हृदयकक अक्षम क्रोधकेँ
जे छल निष्ठुर, उदासीन एवं मूक विधानक विरोध मे।
साँझ होइत वर्षा थम्हि गेल;
गोधूलीक म्रियमाण ज्योति
जीवनक शक्तिकेँ बटोरि हठात् चमकि उठल
निर्वाणक संकेतस्वरूप।
आ अन्धकार पसरि गेल
भीतर, बाहर—सर्वत्र एकर टेढ़-मेढ़ चद्दरि।

कोनो आशा नहि, एहने बुझना गेल
कोनो शब्द नहि जे कहि सकय एहि वन्दी पराजयक सम्बन्ध मे।
बुझना गेल, मृत्यु सहटल अबैत अछि
अपन फंदा केँ सिकुड़बैत श्लथ पैतड़ाक संग।
कुदकल जाइत मूस जेकां अपन भुरकी मे
सड़ल ऐठ-काँठ जे हम जीवन भरि जोगाओल
अपन कृपण झोरी मे।
किन्तु आब खेल समाप्त
जल्लादक फाँसी तैयार छलैक
शीघ्रे परिमार्जक अस्त्र उतरि आओत
अन्त करैत हमर भिक्षुकवृत्तिकेँ।

ठीक हताश नहि, वेदना सेहो—जुगुप्सा सेहो। थोड़ेके उद्धरण लिय;

1. भगवन्! भगवन्!! अहाँ की एकटा खाली नाम किकहुँ?
   की अहाँ ओतय नहि छी?

की अहाँ सत्ये
एकटा जंगली लोकक असत्य दु:स्वप्न मात्र थिकहुँ ?

("प्रश्न")

2. सर्व शक्तिमान्
सर्वशक्ति जे अहाँ वितल शताब्द सँ पाओल,
घुमा दिय, घुमा दिय हमरा अपन पुरखा लोकनिक अचल विश्वास,
जाहि सँ अपन पुरखा लोकनि जेकां
हमहुँ नि.संकोच सोचि सकी जे क्रीत, पराजित
अहाँ हमर घरक चाकर थिकहुँ

("प्रार्थना")

3. जुगुप्सा सँ भरल
आत्माविरहित हमर देह पड़ल अछि संसारक नरकमे।
शब्दहीन अन्धकारमे
हिंस्र निशाचर भकोसैत अछि।
अन्तहीन, अन्तहीन, हम जनैत छी, अछि हमर यातना असह्य, असीम।
तेँ बुझना जाइछ
आत्मरक्षा थीक निरर्थक, संकल्प केवल गर्वोक्ति।
जीवनक सार थिकैक पिशाचक भक्ष्य बनब,
सह्य करैत जाएब बिना विराम एवं प्रतिवाद क सँग
मृतकक सहवासमे ओ गीदड़क सदिच्छानुसार।

("नरक")

किन्तु ई कहब अनुचित होएत जे क्रंदसीमे कतहु निराशा, यातना तथा जुगुप्सा पर विजय प्राप्त नहि कएल गेल। अन्तत : एकटा कविता अछि जाहिमे ई भेल। एहि पुस्तकमे एकटा कविता अछि 'ऊँटपक्षी' जे अन्तमे लिखल गेल (22 अक्टूबर 1934 केँ)। जँ सुधीन्द्रनाथक दशटा सर्वोत्तम कविताकेँ चुनल जाय तँ प्राय: एकटा ई होएत। पाठक एकर तुरन्त स्वागत कएलक एतेक धरि जे हिनक मित्र सुरेन गोस्वामी, जे मार्क्सवादी छलाह, क अनुसार जाहि कोनो मापदँड केँ लेल जाय ई कविता उत्कृष्टतम उतरत। सुधीन्द्रनाथ स्वयं एकर अनुवाद कएलन्हि।

तोँ हमरा निकेँ सुनैत छह, तैयो तोँ चेष्टा करैत छह
मरुक तहमे अपनाकेँ नुका लेबाक।
एतय छाया सिकुड़ैत सिकुड़ैत मरि जाइछ।
मुइल क्षितिज बान्हिकेँ नहि राखि सकैछ
एहि दूत मरीचिकाकेँ आ कहियो समीप नहि,

ई निष्ठुर आकाश अछि स्तब्ध ओ नील ।
शिकारी कोनो छायामृगक पछोड़ नहि करैछ :
तोहरा चल गेला सँ ओकर सभ किछु चल जाइछ ।
बालुकण अछि उदासीन; तखन किएक दौड़बह,
जखन स्पष्ट पदचिह्न रास्ता देखबैत छहु ?
तोहर पूर्वेतिहासिक मित्र चल गेल छथि
आ एकाकी तोँ फराक ठाढ़ छह ।
फूटल अंडाकेँ, सोचि-सोचिकेँ,
तोँ ने बना सकैत छह, ने जोड़ि सकैत छह,
खटिआइत भूखक प्याला जेकां ।
तोँ शून्यमे दोहरा पात्रक काज करैत छह ।
बनि जाह बदलामे हमर इच्छानुकूल नाओ
एहि बालुक अनन्त समुद्रमे;
खतरा लेब तोरा स्वीकार नहि
यद्यपि तोँ भूमिक असत्यता जनैत छह ।
आबह, हमरा लोकनि एकटा नव निकास ताकि ली ।
काँट सँ घेड़ल, ज्वाला सँ जरैत,
जतय पानि खसैत हो बुन्द-बुन्द कय केँ, यद्यपि मधुर नहि :
भूमि उपजबैत हो केवल खजूर—एक वा दू ।

हम आकाँक्षाक कोनो लताकेँ नहि जनमाएब
जाहि सँ तोहर पिजड़ा झँपि जाओ,
आ ने कोनो फेरीवालाकेँ बजाएब जे गुनि सकय
तोहर निरर्थक पाँखिक मूल्य ।
नग्न पाँखि सँ हम बनाएब
एकटा पंखा कोनो साधु-सन्तक उपयुक्त,
किन्तु तन्तु सँ कहियो नहि उड़ाएब
धूरा जे उड़ओलक एक बेरि नक्षत्र सभ पड़ाइत-पड़ाइत ।
हमर शंका विजयी होएत :
तोहर रहस्यमय चीत्कार कूट साक्ष्य नहि देआओत :
किएक तँ तो कोइली नहि थिकीह
जे अनकर अन्न खएबाक हेतु उत्प्रेरित करह ।
ई विनाश हमर उत्तराधिकार थीक;
लटा देनिहारक एकटा दल पहिनहि चल गेल;

ओ अशर्फी बटोरलक, किन्तु छोड़लक एकटा अधेलो नहि,
आब दूनू गोटे ओकर ऋणक प्रतिशोध करी।
आ तें तोहर आत्मविभोरता बुझना जाइछ
अनुचित; की अन्धत्व शापकें ठकि सकैछ ?
आजुक समय स्वप्न देखबाक नहि थीक :
हमरा सँ फराक रहि तों अधलाह कें आओर अधलाह बनबैत छह।
तें हमरामे सँ प्रत्येक एकटा सुलहनामा पर मोहर लगा दी
जे एक-दोसराक लेल काज करब :
तों हमरा परलोकक दिशि धकेलैत छह,
हम मानुषी परीक्षाक प्रस्ताव करैत छी।

मध्यवर्गक आत्मकेन्द्रतित्वक प्रतीक स्वरूप शुतुरमुर्ग सर्वथा उपयुक्त भेल अछि, तथा कविता तृतीय दशकक संग प्रचुर मात्रामे संगति रखैत अछि। किन्तु सुधीन्द्र-नाथक कविताक अनुवाद कठिन अछि, कारण जे एकर शब्दावली पर पूरा बल छैक। एहन पंक्ति जेना—"अंध होले कि प्रोलय बन्ध थाके" कोना टिकल रहि सकैछ ?"

सुधीन्द्रनाथक चतुर्थ पुस्तक 'फाल्गुनी'क अधिकाँश कविता लिखल गेल 1933मे। केवल दूटा 1932 मे—और्केस्ट्राक अवधिमे—तथा अतिरिक्त दूटा 1937मे। 1934मे ई कदाचिते कोनो कविता लिखने होथि। अपवाद थीक 'क्रंदसी'क प्रथम कविता जे एखनहि उद्धृत कएल। स्पष्टतः 1935-39मे एकोटा नहि। किन्तु 1934मे ई सेक्सपेयर सँ किछु अनुवाद कएलन्हि। संगहि मलाँ सँ दूटा अनुवादक संशोधन कएलन्हि 1936मे जकर हम पता लगाओल अछि। तथापि ई कहब जे 1935-36मे ई अपेक्षया कम लिखलन्हि असत्य होएत, कारण जे 'परिचय'क हेतु ई वेश किछु गद्य लिखलन्हि। एकरा अतिरिक्त इयेट्सक नाटिका 'रिसरक्सन'क ई अनुवाद कएलन्हि। ई सभ थीक 'संकट' सँ पाँच-छओ वर्ष पूर्वक बात। यथार्थमे 'उत्तर फाल्गुनी'क प्रकाशन भेल एकर कछेड़ पर। तेरह वर्षक अवधिमे ई पुस्तक हिनक अन्तिम पुस्तक छल।

'उत्तर फाल्गुनी'क उत्सर्ग कएल गेल छल सुमंत्र महालनवीसकें जे हिनक मित्र छलाह। एहिमे उन्नैसटा कविता छल। और्केस्ट्रा एवं 'क्रंदसी'क तुलनामे ई कम महत्त्वक बुझना गेल। एहिमे ने और्केस्ट्रा जेका अनुभवक तीव्रता छलैक, ने क्रंदसी जेकाँ। संदेहात्मकताक प्राचुर्य, तथापि एहिमे उल्लेखनीय स्वर-साम्य छल। बुझना जाइछ जे एकर विषयवस्तु थीक प्रेम, किन्तु निश्चित रूपें बादक प्रेम, प्रायः नीचाँ दर्जाक अनुभव। स्वर निर्धारण होइत अछि प्रथम कविता द्वारा अर्थात् 'शर्वरी' द्वारा जे अन्तमे लिखल गेल। महत्त्वपूर्ण पंक्ति एना अछि :

हठात् शरत् संध्या वयसाहु कुट्टनी जेकाँ
बुढ़ापाक पसरैत चिह्नकें नुकओलक अत्यधिक प्रसाधन सँ···

तेँ हम कहल ओकरा चुपचाप ओहि संध्यामे—
खसि शिशिरक थपेड़ा सँ पियराएल पात;
वर्फ जमि जाओ बीहड़ संकेतस्थलमे;
बौआइत राजहंस शुष्क सरोवर केँ छोड़ि
सात समुद्र पार सुखद आश्रमक खोजमे चलि पड़ओ;
तथापि कोनो हानि नहि। मृत्युक सनातन परिवर्तनमे
स्मृति इजिप्टीय बीज-कोषमे कल्प धरि पाकिकेँ
लय आओत बाग-बगीचा कँ लतामे आश्चर्यजनक फूल।
काल विनष्ट करैछ, किन्तु काल अपन अस्तित्वमे विश्वासो रखैछ।
तेँ एकर गुफामे चमकत एकटा माटिक दीपक बाद दोसर
निर्वात, अकम्पित आभामे···माटिक दीप,
शताब्दी बीति जाइछ। फेरि ओहि नामी गुफामे
बादुर बनबैत अछि सुस्तेँ-सुस्तेँ अपन घर; कोणमे
उल्लू ध्यान केन्द्रित रखैत अछि मूस पर, कोणमे धूर्त गिदड़
नुकबैत अछि अर्धभुक्त मृतक; उनटल विग्रहक चारूकात
चालीक मेला लागि जाइछ; कखनहुँकेँ सन्तुष्ट दीप
शमित करैछ अपन हृदयदाह केँ कंटकाकीर्ण द्वार पर बैसिकेँ।
ओकरा सभक विष्ठा ओ निष्क्रियता मे भूतकालक पुष्ट चिह्न
डूबि जाइछ; नोनछराइन हबामे चूनक पोताइ मेटा जाइछ
आ पाथरक कंकाल दाँत खिसोटय लगैछ। शहरक बाबू लोकनि अकच्छ
भय,
कखनहुँ केँ अबैत छथि आमोद-प्रमोदक हेतु ओतय
संग लय बन्धुवर्ग ओ वारवनिताकेँ; भोजनक बाद चमकैत टौर्च
एक टक तकैत अछि देवालक दिशि जतय अपवित्र धड़
जतने अछि वैदेहीक जाँघकेँ; गोधूलीमे फाटल पत्तल ओ टूटल टीनकेँ
छोड़ि
शहरमे फिरि जाइछ। संध्यामे अन्धकार घनीभूत होइछ
छीटल कोइला ओ छाउड़ सँ—सद्यः समाप्त भोजक अवसाद।
तखन एकटा बिड़रो ऊठि हठात् साँध्यताराकेँ झाँपि दैछ,
पिशाचिनीक गोलमालमे अन्धविनाश मात्र टिकल रहि जाइछ सगरो
राति।

अन्य कवितामे सँ एकटा छल टैगोरक 'सोनाकतरी' परिवर्तित रूपमे—यथार्थमे स्वभावसिद्ध परिवर्तित रूप, कारण जे जतय टैगोरक कवितामे कर्ता ओ कार्यक बीच द्वैध वर्तमान छल तथा कर्ताक अस्थायित्वक तात्पर्य छल कार्य केर स्थायित्व

ओतय सुधीन्द्रनाथक कवितामे दूनूक परिणति छलैक अस्थायित्वमे।

मृत्यु अपन बतहा नाओ कें
लगा देलक फेरि ?
तोहर विदेशी वंशी-रव हम सुनैत छी
विजन वनमे ?···
जखन तों पहिल बेरि अएलाह
हमर बोझा भारी छल
तावत् धरि हम नहि जनने छलहुँ जे जीवनक सार थीक
केवल तोहरहि ताकब···
नहि देखने छलहुँ अन्तहीन समुद्रमे
कतहु-कतहु द्वीपमे रहैत लोक एकाकी;
व्यर्थ अछि ई उद्देश्यहीन घाट
अन्धकारमे खेबब व्यर्थ
नहि जानल छल जे हँसब ओ कानब
समान थीक, सनातन पिपासा थीक स्वप्न···
जनु कहह मित्र, जनु कहह
"लदल नाओमे स्थान नहि"
तरंगक गतिकें उझकाय दहक
हमर गतिहीन चरण पर।
निर्वात पाल पर ढारि दहक झंझावातकें
जाहि सँ प्रसन्न वारिधारा वेग सँ उतरि आबय
आ हमर देहक गर्दा धोखड़ि जाय।
चारूकात खतराकें तिरस्कृत कय
उठा लैह अपना नाओ पर, मित्र !

(मरणतरी)

नाओक विम्बक प्रयोग ई करैत गेलाह। ठीक एहने छल हिनक 'रनशर्ड'क कविताक परिवर्तन—"जखन तोहर चमचमाइत केशपाश भय जएतहु हिमधवल, ई सोझ ठाढ़ शरीर दंड जेकां अनमनीय, झुकि जएतहु धूराक दिशि···

आ तखन
की बूझि सकबह कृपणे प्रेयसि ! जे ओहि अन्निद्र अन्हार राति—
जँ हुनका दैह, जे तोरा चाहैत छलाह, अजस्र प्रकाश धारामे
तों दिनक अपन नमनशील देह क्षणो भरि
तँ रंचोभरि अन्तर नहि पड़तैक अन्तिम संकटमे

की तों बुझबह जे ओहि संकटमे हमर संयम
आ असंयम उदासीन देवताक हेतु समान अछि ?

(विलय)

छीजन, विध्वंस, क्षणभँगुरता। प्रेम सत्य भय सकैछ—किन्तु केवल तत्कालहि मे ओ संकटक सम्मुखीन भेला पर। 'उत्तर फाल्गुनी'क दोसर प्रतिनिधि कविता छल जकर शीर्षक छलैक 'दुःसमय'।

हमरा लोकनिक मिलन भेल अशुभ क्षणमे
जखन अन्तरीक्षीय संकट आबि रहल छल···
की तों जनैत नहि छह, निर्भीक प्रेयसि, जँ हमरालोकनिक
बाल्यस्वप्न आइ सत्यो भय जाय,
जँ ई ईर्ष्यालु अकर्मण्य लोकक समाज
माफो कय देअय दूनूगोटाक पार्थिव मिलनकेँ
तथापि सभ व्यर्थ थीक—हमरा लोकनिक अमर भूतकाल
हठात् एकटा भूकम्पमे विश्वासक जड़ि हिला देत···
तथापि फिरि जाएब सम्भव नहि
तोरो हम चाहैत छी शरीरेँ, मनेँ···
अन्धकार गाढ़ भेल जाइछ, लगमे तोरा छोड़ि केयो नहि
आकाश भयसंकुल बनि रहल अछि
बचा लैह अपना केँ लोलुप भवितव्यसँ सगर्व अवज्ञापूर्वक
हमरा हाथमे राखह अपन हाथकेँ निर्भीक प्रेयसि···

इएह छल सुधीन्द्रनाथक चतुर्थ कविता-संग्रह। तृतीय दशकमे ओ जे अनुवाद कएलन्हि तथा बादमे एकत्र कय पुस्तकाकार देलन्हि तकरा सम्बन्धमे एतवेटा कहल जा सकैत अछि जे एकर आरम्भ ओ कएलन्हि 1930 मे। पहिल किस्तमे हेन साहेबक जर्मनक अनुवाद छल। यत्रतत्र थोड़क फ्रेंचक अनुवाद ओ अन्य अनुवाद सेहो। बीच-बीचमे अँग्रेजीक अनुवाद। अन्तिम किस्तमे छल शेक्सपेयरक सौनेटक अनुवाद। एकरा सभकेँ नीक जेकां संशोधित करब हिनक अभीष्ट छल। एहि ठाम इहो उल्लेखनीय जे 1931 मे कोनो समय ई 'ओडीपस'क अनुवाद आरम्भ कएल—स्पष्टतः अँग्रेजी संस्करणक प्रायः चारि पृष्ठ कएलन्हि। ई प्रसंग रोचक अछि ई विचारैत जे किछुए वर्षक बाद ई एकटा दोसर नाटक इएट्सक 'पुनर्जीवन'क सफल अनुवाद कएल।

ऊपर हम ओहि गद्यक उल्लेख कएल अछि जकरा ई 'परिचय'क हेतु लिखलन्हि। 1938 मे एकरहि ई पुस्तकाकार देलन्हि। ई पुस्तक छल 'स्वगत'—निबन्धक हिनक प्रथम पुस्तक। ई उत्सर्गित भेल धूर्जटीप्रसाद मुखर्जी केँ। एहिमे भूमिकाक अतिरिक्त उन्नैशटा निबन्ध छल। एहि उन्नैश निबन्धमे दूटा छल टैगोर पर,

तीनटा अन्य बंगालक लेखन पर ओ शेष पश्चिमी साहित्य पर। दोसर संस्करणमे जकर प्रकाशन 1957 मे भेल ओ जकर उल्लेख एहि ठाम विशेषरूपेँ होएत,—सख्या घटाकेँ पन्द्रह कय देल गेल। पाँचटा बँगलाक निबन्ध हटा देल गेल ओ बदलामे एकटा आओर पश्चिमी निबन्ध दय देल गेल। एकटा उपयुक्त उपसंहार जोड़ि देल गेल। बंगलाक निबन्ध जोड़ि देल गेल एकटा दोसर पुस्तकमे जकर प्रकाशन भेल 1957मे। टैगोर सम्बन्धी दू निवन्धमे सँ एकटा छल टैगोरक छन्द विधान तथा बंगलाक मात्रिक छन्द पर ओ दोसर छल सामान्यरूपेँ टैगोरक कविता पर। अवशिष्ट बंगलाक तीन निबन्धमे सँ एकटा छल टेगोरोत्तर कालीन उपन्यास पर, दोसर टैगोरक बादक एकटा बंगलाक कवि पर तथा तेसर छल समीक्षात्मक बंगला मात्रिक छन्दक पुस्तक। अन्य निबन्धमे सँ केवल तीनटा मूलतः सम्पूर्ण निबन्धक रूपमे प्रकाशित भेल। अतिरिक्त छल समीक्षात्मक—'कविताक मुक्ति'क उल्लेख ऊपर कएल गेल अछि। तहिना 'परम्परा एवं टी० एस० इलियट'क तथा फौकनर एवं हौपकिन्सक। एकरा सभक अतिरिक्त 'एडिथ सिटवेल' तथा रौबर्ट फ्रौस्ट पर, डब्लू० बी० इएट्स पर, डी० एच० लौरेन्स तथा वर्जेनिया उल्फ पर; पौल मारेण्ड, अद्रि मौरो, फ्रान्स मोरीक, हरमन ब्लौक तथा जौन डौस पैसोस पर, मैक्सिम गोर्की पर; अर्थर कौण्डरमार्शल तथा गिन डौली पर, अल्डुअस हक्स्ली तथा एफ० डी० ओम्पैनी (दोसर संस्करणमे जोड़ल गेल); वर्नर्ड शा, लीटन स्ट्रैची, विन्दम लेविस तथा एज्रा पाउण्ड पर।

सुधीन्द्रनाथ एहि शब्दक संग 'प्रगत'क प्रवेश करओलन्हि—हुनक प्राक्कथन सँ हम दू अनुच्छेद उद्धृत करैत छी—

हमर मित्र लोकनि हमर लेखनकेँ दुर्बोध कहि एकर निन्दा करैत छथि। हमर शुभ चिन्तकक धारणा जे संस्कृत तथा अंग्रेजीक अनुचित सम्मिश्रण द्वारा हम जाहि अस्पृश्य शैलीक उद्भावन कएल अछि तकर प्रवेश बंगला कविताक नृत्यशाला धरिमे नहि होएबाक चाही, आ जेँ हेतु हमरामे आत्मविश्वासक कमी कहि श्रेष्ठलोकनि हमर भर्त्सना करैत छथि, तेँ हमहुँ ओहि युक्तिहीन निन्दाकेँ आधारहीन कहि अस्वीकार नहि कय सकैत छी। तेँ हम आरँभहिमे कहि दैत छी जे 'स्वगत' शब्द 'स्वागत'क टँकनाशुद्धि नहि थीक। कालिदासक ई मंच निर्देश इंगलैण्डक रास्ता सँ आबि माइकेलक समय सँ पूर्वहि बंगला नाटकमे प्रतिष्ठित भय गेल। जखन ओहि समयक विशालकाय चरित्र स्वाभाविक गतिहीनताक कारण अपन क्रियाकलापमे अपनाकेँ प्रस्फुरित नहि कय सकैत छल, तखन अपन अभिप्राय केँ एही निक्षिप्त माध्यम द्वारा श्रोता धरि पहुँचबैत छल।

दुर्भाग्यवश हमहुँ ओहि पंगुमेसँ एकटा थिकहुँ। जीवनक ओहि समयमे जखन साधारण लोक पैसा कमाय चाहैत अछि अथवा सामाजिक कार्य द्वारा बादक जीवनक हेतु पाथेय संग्रह करय चाहैत अछि, ओहि अशुभ घड़ीमे शनिक क्रुद्ध

भृकुटिक कारण हम छन्द-रचनाक भयानक चिह्न विकशित कएल। जन्मकुण्डली इहो प्रकटित कएलक जे ओहि समयमे हमरा पर वृहस्पतिक अनुकूल दृष्टि छलन्हि। तेँ बीमारी घातक रूप नहि लय सकल। अभ्यासक एक स्थितिक बाद लगाम पकड़ि लेल। किन्तु भाग्यमे एकटा हास्यक भावो रहैत छैक। ई देखिकेँ जे स्वास्थ्यसँ आब कोनो इष्टक सिद्धि नहि भय सकत, ई मनुष्यकेँ बीमारीसँ मुक्त कय दैत छैक। अतएव हमरा बेरिमे सेहो जावत हम छन्द नीक जेकाँ सिखने नहि छलहुँ, तावत हमर कवित्वक स्रोत पूर्णतः सुखा गेल। यद्यपि जे किछु बचल रहल ओकरा उन्नैशम शताब्दीक रोमानी लोकनि 'नैसर्गिक असन्तोष' कहल, किन्तु हम धरि एहि उपाधिमे आत्मग्लानि छोड़ि आओर किछु नहि पाओल अछि।

अनुवादमे ओतेक सामर्थ्य नहि जे ओ सुधीन्द्रनाथक गद्यक स्वाभाविक गुणकेँ प्रकट कय सकय। ई मिश्रित रहल होअओ वा नहि, ई आधुनिक बंगलाक वस्तुसँ भिन्न अछि—संज्ञा एवं विशेषणमे संस्कृतनिष्ठता, संयोजनमे सेहो, किछु क्रिया-पद खाँटी बंगला; औपचारिक किन्तु सुपरिचित। ई गद्य कठिन अछि, सहजबोध-गम्य नहि, तथापि रोचक। सघनताक कारण ई बहुमुखी यौगिक जेकाँ बुझना जाइछ। एकर पूर्वापर तर्कसंगत अछि। वाक्य रचना द्वन्द्वात्मक—एकटा तर्क विरोधी तर्ककेँ लय अबैछ, फेरि ओकर विरोधी। टैगोरक बादक बंगला सामान्यतः गतिशील, उन्मुक्त, एतय-ओतय दीप्तिपूर्ण, किन्तु अधिक काल अकथनीय भविष्यक तथा अल्हड़। सुधीन्द्रनाथक गद्य मेहनति कयकेँ लिखल गेल अछि। कविताक सम्बन्धमे ई स्वयं कहने छथि जे आवेगसँ हिनका घृणा छन्हि। ई हिनक गद्यक विषयमे सेहो कम लागू नहि होइछ। हिनक गद्य एहन उदाहरणसँ परिपूर्ण अछि जाहिमे उछ्वासपूर्ण 'उड़बाक आश्रय लेलन्हि'केँ 'उड़लाह'मे बदलि देल गेल। यथार्थमे ई आरोप जे सुधीन्द्रनाथ कठिन छथि हिनक कविताक अपेक्षा हिनक गद्यमे लागू होइत अछि। कवितामे थोड़ेक अस्पष्टताक उमेद लोक कएनहि रहैत अछि। किन्तु गद्य अस्पष्ट होअय ई असामान्य थीक। तथापि प्रारम्भिक चेष्टाक बाद एहिसँ रस आहरण कएल जा सकैछ। एतय हिनक कतोक प्रस्तावनाकेँ देखू :

(1) अद्रि मोरो एक वेरि कहलन्हि जे आन्ड्रअस हक्सले पश्चिमक वात-सूचक यन्त्र थिकाह। रुचिक वायु कनेक सिहकल की ओहो घूमि गेलाह। किन्तु ई सुदूर भूतकालक कथा थीक। युद्धोत्तर यूरोप अपन विवेककेँ गमाय अत्यधिक पोशाकी बौद्धिकताक अवलम्बन कय चुकल छल। सभ प्रतिभा मिलि एक स्वरसँ उद्घोष कय चुकल छल जे आत्मघाती नैराश्यकेँ छोड़ि आन प्रवृत्ति हुनका लोकनिक अनुकूल नहि। एकरा बादक विरड़ो सभ वस्तुकेँ उनटा देलक अछि। ई केवल विरोधी पताकाकेँ धूरामे मिला देलक अछि, ततवे नहि, प्रत्युत एकटाकेँ सात समुद्र पार नवीन मेक्सिकोक सुशान्त महासागरमे फेकि देलक अछि जतय

एकर कोनो उपयोग नहि। तथापि उपर्युक्त हक्सलेक तुलना आइयो ठीक बैसैत अछि। यद्यपि आब ओ प्रवाहक संग नहि दहाइत छथि किन्तु घनत्व-सूचक हुनक उपमा आइयो विद्यमान अछि। एखनहुँ हमरा लोकनिक फोंक खिन्नताक अभ्रान्त गुरु रूपेँ ओ विद्यमान छथि। कम-सँ-कम पश्चिमी मानसिकताक विकृति हुनक भविष्य-द्वाणीक अनुरूप अछि। आइ धरि आबि हुनक ओ यूरोपक बीचक अन्तराल मेटा गेल अछि। एखन अपना समयक एवं स्थानक ओ अद्वितीय प्रतिनिधि छथि। तेँ पाछाँ छूटि जएबाक डरेँ ओ आब आगाँ दौड़ल नहि जाइत छथि, कारण जे वर्तमान युगक प्रवृत्ति हुनक हाड़मे सन्हिआ गेल अछि। हुनका जनबाक आइ अर्थ थीक आजुक सभ वस्तुकेँ चीन्हि लेब। (गुरुचण्डाल)

(2)पेरिस कम्यूनक आस्फालन सँ अकछि गुस्ताभ फावेत हस्तिदन्तीय कोटरमे शरण लय सुरक्षा पाओल, कारणजे ओ सोचलन्हि जे यद्यपि हवादार शिखर पर जाड़क प्रकोप कठोर रहैत छैक, किन्तु चारूकातक तारामंडलक दीप्ति तँ रहैत छैक अम्लान ओ भीड़क पशुचीत्कारक संभावना विरल। किन्तु गणतंत्र सम्बन्धी भ्रम-निवारणक बादो राजतंत्र मे फावेतक संदेह बनले रहल, किन्तु जेँ हेतु ओ वर्तमानक संग एकर संगति नहि बैसाय सकलाह तेँ एकर भूतक तथा भविष्यक रूप सेहो हिनका सांत्वना नहि दय सकल। अतएव अपना शिल्प सँ हिनक वस्तुनिष्ठ अन्यो-न्याश्रय रहितहुँ ई श्रेयवादीलोकनिक अन्तिम उत्तराधिकारी नहि छलाह, प्रत्युत ई छलाह अत्याधुनिक रोमानी रचनाक अग्रदूत। अतएव छलाह आवेगहीन, किन्तु विनाशवादी। अनुद्वेलित किन्तु निर्वैयक्तिक कहएबाक योग्य नहि। तेँ यद्यपि हिनक बौद्धिक स्थिरता सुप्रसिद्ध छल, हिनक आध्यात्मिक चेला मोपाशा बताह भय मुइलाह। यथार्थमे आत्ममर्यादाक परिणति थिकैक सोऽहंकेर तीव्र अनुभूति जाहि स्थितिमे जाय आयाम ओ संगति अप्रासँगिक ओ व्यर्थ भय जाइछ। जेँ हेतु युक्तिबाद एक व्यक्ति सँ दोसराक बीच संगति बैसबैत अछि नित्सेक अतिमानव, एकमेवाद्वितीयं जेकां, औचित्यक विचार सँ उदासीन रहि जाइछ।

(3) यद्यपि विशिष्ट प्रतिभाकेँ यातना देल जाय इएह एक मात्र आशा कवियश:प्रार्थी लोकनि कय सकैत छथि तथापि साहित्यिक इतिहास मे प्रतिभाक महत्त्व निर्विवाद रहलैक अछि। हालक गवेषणाक अनुसार सेक्सपेयरक अवहेलाक चिह्नमात्रो अवशिष्ट नहि अछि। किन्तु एक समयमे उदीयमान लेखक लोकनिक लग भावोच्छ्वासपूर्ण व्याख्यानक ई एकटा प्रिय विषय छल उन्नैशम शताब्दीक सनकी कल्पनाप्रवणता केँ टोना-टापर कय अपसारित करैत आजुक विद्वान् लोकनि कहय लगलाह अछि जे जतेक थोड़ कालमे जेहन पूर्ण सफलता सेक्सपेयरकेँ भटेलन्हि तेहन सफलता आन किनकहु भेटलन्हि ताहिमे संदेह। किन्तु प्रतिष्ठित समीक्षक द्वारा जाहि प्रकारक अन्याय चेस्टर्टन एवं कीट्सक प्रति कएल गेल ताहि प्रकारक अन्याय एखनहुँ आत्मसंतोषी अकर्मण्य लेखक द्वारा आइयो कएल जाइत अछि। किन्तु बाल्या-

वस्थाहिमे चेस्टर्टन जे मोटामोटी नीक कविता लिखलन्हि ताहि दिशि आब हमरा-लोकनिक रुचि नहि अछि। हमरा लोकनिक रुचि एहि हेतु नहि अछि जे ओ नाल-पोल सन प्रवीण लोक कें वेकूफ बनओलन्हि। कीट्सक प्रति प्राचीन धारणा केवल कीट्सक कविताक गुणवत्ताक द्वारें नहि भेल अछि। प्रत्युत मेथ्यू आरनोलडक पश्चात्क पुश्त द्वारा कीट्सक अपरापर पत्र संग्रह कय सुस्तें-सुस्तें ई हृदयंगम करएबाक द्वारें जे ई महान् कवि स्वभावतः खामख्याली परिधिक बाहर छलाह। (जेनार्ड मैनली हौपकिन्स।)

यथार्थमे एहि उद्धरण सभसँ सुधीन्द्रनाथक निबन्धकें जानि लेब कठिन, कारण जे ई मात्र अनुवाद थीक। एहि सँ पाठककें हुनक मूल रचनाकें देखबाक प्रेरेणा भेटि सकैत छन्हि। हिनक सम्बन्धक विशेष परिचय रूपें कहल जा सकैत अछि जे यद्यपि हिनक शैलीक अनुकरणक दिशामे किछु प्रयास भेल अछि, किंतु सुधीन्द्रनाथक परम्परा नहि बनल। हिनक विषयवस्तु अर्थात् रुचिक सम्बन्धमे हम ऊपर टिप्पणी देल अछि। एहि ठाम एतबा जोड़ल जा सकैत अछि जे 'स्वगत'क निबन्धमे सँ प्रत्येकमे दू असमान कोटिक लेखन अछि, उदाहरणार्थ प्रायः प्रारंभिक 'ध्रुपद-खेयाल' रौबर्ट फ्रौस्ट एवं एडिथ सिटवेल केर तुलनामूलक मूल्यांकन थीक जाहिमे फ्रौस्टक दिशि झुकाब देखाओल गेल अछि। दोसर निबन्धमे डी०एच०लौरेन्स ओ भर्जिनिया उल्फ पर एक संग विचार भेल अछि। बादक एक निबन्धमे—जकर प्रारंभिक भाग हम एखनहि उद्धृत कएल—बैन्डम लेविस एवं एजरा पाउण्ड पर विचार भेल अछि। हमरा जनैत सुधीन्द्रनाथक साहित्यिक इतिहासबोध प्रायःहिनक सामान्य इतिहास-बोध जेकां स्वभावतः द्वन्द्वात्मक अछि।

ई सत्य जे 'स्वगत'क सम्बन्ध पश्चिमी साहित्य सँ विशेषरूपें रहलैक, किन्तु प्रसंगक आधार पर ओकर व्याख्या कएल जा सकैछ। पहिल बात ई जे 'परिचय' मे अधिक काल समीक्षा होइत छल पश्चिमी साहित्यक। दोसर ई जे पश्चिमी साहित्यक समीक्षक लोकनिमे सम्पादक प्रधान छलाह। तथापि प्रथम संस्करणक किछु बंगला साहित्य सम्बन्धी निबन्धमे तथा बादक हिनक निबन्धमे टैगोर तथा बादक कविलोकनि पर थोड़ विचार नहि भेल अछि। एहि सँ अधिक विचार भय सकैत छल, किन्तु बुद्धदेव बोस अथवा विष्णु दे क विपरीत सुधीन्द्रनाथक अभि-प्राय कोनो आन्दोलन चलाएब नहि छल। साहित्यिक इतिहासक संग अधिकांशतः हिनक सम्बन्ध प्रायः वैयक्तिक छल। किन्तु एहि पर अधिक बल देब प्रायः उचित नहि, कारणजे इलियट, इयेट्स, मौरिसक एवं ब्रौक प्रभृति पर हिनक निबन्ध कही तँ पश्चिमी साहित्यक मात्र मूल्यांकन नहि छल, प्रत्युत बंगलाक आयामक विस्तार सेहो। एकरा संग बंगला पर पड़ल सुपरिचित पश्चिमी प्रभावक पूर्ण संगति बैसि जाइछ। ओ सभ बंगला निबन्ध छल सम्बोधित बंगाली पाठक कें।

5

सुधीन्द्रनाथक जीवनक चारिम दशकक अन्त ओहने भयावह रूपें भेल जेना एहि शताब्दीक। हिनक लेखन घटैत गेल। 'परिचय'क महत्त्व आब ओतेक आवश्यक नहि रहलैक। एकरा अतिरिक्त पत्नीक संग हिनक असंशोध्य असामंजस्य वैवाहिक जीवनकें संकटापन्न कय देलक। लगभग एही समयमे भविष्यक हिनक द्वितीया पत्नीक संग हिनका भेट भेल। एहिसँ स्थिति आओर जटिल भय गेल, यद्यपि एकर साक्षात् कारण वा प्रतिफल ओ छलीह से नहियो भय सकैत अछि। एहि सभक अतिरिक्त छल युद्ध सम्बन्धी दुश्चिन्ता। यदि ई आबिये जाय तँ की होएत! हिनक मित्रमंडलीमे एहनो लोक छलाह जनिक मत जर्मनीक पक्षमे छलन्हि। किन्तु संगहि एहनो व्यक्ति छलाह जे निश्चित रूपें फासिस्ट-विरोधी छलाह। फलतः 'परिचय'क संध्या उत्तेजना सँ परिपूर्ण रहय लागव। सुधीन्द्रनाथ हिटलरसँ घृणा करैत छलाह—अपन पूर्वक सहिष्णुता छोड़ि चुकल छलाह—स्टैलिनक समर्थन सेहो नहि करैत छलाह। हिनक फासिस्ट विरोध हिनका स्टालिन विरोधी होएबासँ रोकि नहि सकल। खासकें तीनटा घटना हिनका झकझोरि देलक—ओ घटना सभ हिनका लग स्पष्ट कय देलक जे स्टालिन सेहो मनुष्यत्वक लेल संकट थिकाह। ओ घटना थीक सोभियट-जर्मन संधि, फिनलैण्ड पर सोभियटक आक्रमण, ट्रास्कीक हत्या। नतीजा भेल विसंगति—जावत हिटलर रूस पर आक्रमण नहि कएल तावत धरि युद्ध सँ फराक रहि मार्क्सिस्ट लोकनि स्टालिनक समर्थक बनल रहलाह। सुधीन्द्रनाथ अधिकाधिक मात्रामे वेचैन होइत गेलाह। जखन युद्ध आएल स्वयं भरती भय गेलाह।

ई नहि जे ओ स्वयं मार्क्सवादी छलाह। किन्तु अपन बुद्धिवादी दिमाग सँ ई सोचैत छलाह जे मार्क्सवाद न्याय प्राप्तिक हेतु सम्भावित उपाय थीक—जँ आदर्श नहियो तँ अन्य समाज सँ कतोक दृष्टिएं नीक। उदाहरणार्थ, हिनका आशा छल जे ई आक्रमण तँ नहि करत। 1938 मे जखन फासिस्ट विरोधी लेखक लोकनि कलकत्तामे राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कएलन्हि तखन ई केवल एकटा सभापतिये नहि बनलाह, प्रत्युत बाहर सँ आएल दू तीनटा प्रतिनिधिकें अपन पाहुन बन-

ओलन्हि। अपन भाषणमे ई दावा कएलन्हि जे बंगला साहित्य मानवीयता सँ ओतप्रोत अछि, कारणजे चण्डीदास सँ लय बरोबरि एकर नायक रहल अछि सामान्यजन। ई उत्साह क्षणिक नहि छल, एहि सँ पूर्व 1936 मे ई फासिस्ट विरोधी घोषणापत्रमे हस्ताक्षर संग्रह करओने छलाह तथा 1938 मे चीनक सहायताक हेतु द्रव्यसंग्रहमे संलग्न छलाह। एहि निर्णय तथा एकरा बादक हिनक निर्णयक बीच कोनो विरोध नहि छल। सोभियट रूसक विशेष मूल्यक हिनका ज्ञान छल, किन्तु ई नहि बूझि सकैत छलाह जे मात्र सोभियट रूसकेँ फासिस्ट विरोधक विषयमे तर्काधार किएल मानल जाय।

किन्तु हिनकामे कोनो कटुता नहि छल। जखन ई 'परिचय' केँ छोड़लन्हि एकर भार न्यस्त कएल अपन मार्क्सवादी मित्रलोकनि पर। फासिस्ट विरोधी लेखक संघकेँ येट्सक नाटकक अनुवाद अपन 'पुनरुज्जीवन' मंचित करबाक अनुमति देल। सभसँ बढ़िकेँ ई जे कम-सँ-कम अपन थोड़ेक मार्क्सवादी मित्रक संग हिनक स्नेह-सम्बन्ध जीवन भरि रहल। ई सत्य जे हिनका लोकनिक संग हिनक मिलन विरल होबय लागल। किन्तु एकर कारण विशुद्ध वैचारिकता नहि छल। 'परिचय' सम्बन्धी मित्र लोकनिमे सँ केवल मार्क्सवादी नहि—कदाचिते केयो हिनक द्वितीय विवाहक अनुमोदन कएने होथि। सुशोभन सरकार समेत किनको-किनको विचार छल जे प्रेम एक वस्तु थीक ओ विवाह दोसर, किन्तु जँ हेतु हिन्दू स्त्री केँ अनेक विवाह करबाक अधिकार नहि छैक (ई तलाक तथा हिन्दू कोड बिलक पूर्वक समय छल) हिन्दू पुरुषकेँ उचित जे ओ एहन असमानताक व्यवहार नहि करथि। केयो-केयो चाहैत छलाह जे सुधीन्द्र अपन प्रथमा पत्नीक संग मेलजोल कय लेथि—उदाहरणार्थ, सत्येन बोस, गिरिजापति भट्टाचार्य तथा यामिनी राय। यामिनी राय तँ इहो सोचलन्हि जे दूनू गोटामे मेलजोल करएबाक हेतु एकटा जहाजयात्रा संघटिक कएल जाय। एक वा दू गोटय, विशेषतः धूर्जटी पहिने असहमत छलाह। किन्तु बादमे सुधीन्द्रक कारण नीक जेकाँ जूझि गेलाह।

किन्तु ओ लोकनि छलाहे के? दूनूक बीच घोर असामंजस्य छल। सुधीन्द्रक व्यक्तित्व एवं जीवन-पद्धतिक संग हिनक पत्नीक कोनो मेल नहि छल। हिनका जीवन मे एहन बहुत वस्तु छल जाहिमे ई अपन पत्नीकेँ सहभागिनी नहि बनाय सकैत छलाह। किन्तु एतहि की ओकर अन्त छलैक? एकरा अतिरिक्त, की हिनक पत्नी अपनाकेँ परिवर्तित करबाक चेष्टा नहि कएलन्हि अथवा ई पत्नीकेँ अनुकूल बन-एबाक चेष्टा? कहल जाइत अछि जे ओ लोकनि चेष्टा कएलन्हि। सी०, हाजरा रोड जतय ई लोकनि परिवारसँ फराक किछु काल धरि रहलाह, दूनूमे ककरो हेतु खास उपयोगी नहि भेल। सप्ताहक अन्तमे हिनक पिता जे आबि केँ एतय रहथि हिनका लोकनिक बीच बढ़ैत उत्तेजनाकेँ अवश्य लक्ष्य कएने होएताह। की हिनक पत्नी ईर्ष्यालु छलीह ओ हिनक प्रचुर परिचित महिला मित्रमंडलीकेँ बर्दाश्त नहि

कय सकैत छलीह ? की ई अपन महिला मंडलीक प्रति असामान्य स्नेह देखबैत छलाह ? ई की कोनो समयमे प्रेम जेकाँ देखबामे अबैत छल ? किन्तु तत्कालीन पारंपरिक उच्च मध्यम वर्गीय हिन्दू स्त्री मनमौजी पतिक किछु अभ्यस्त छलीह, तेँ विच्छेदक हेतु आगां बढ़ि किछु करब पत्नीक दिशि सँ नहि भेल होएत। अथवा भेल होएत। एकरा विपरीत ओहि प्रकारक सुसंस्कृत लोक कतोक गृह-दृश्यक कारण सर्वदाक हेतु पत्नीकेँ कोना त्यागि देलन्हि ? तेँ अवश्य कोनो दुरतिक्रम्य कारण रहल होएत। जे हमरा लोकनिकेँ जानल अछि ओ मात्र एतबे थीक जे विच्छेदक समय अथवा ओकर किछु बाद सुधीन्द्र अपन छोट भायक हाथमे एकटा मोहरबन्द लिफाफ ई कहैत देलन्हि जे कोनो झंझट उपस्थित भेला पर एकरा खोलि एकर मजमून ओ हिनक पत्नीकेँ देखाबथि। किन्तु तकर अवसर कहियो नहि आएल। 1965 मे छवि दत्तक मृत्युक बाद ओहि लिफाफकेँ नष्ट कय देल गेल। ओकर मजमून की छल ? केवल सुधीन्द्र जनैत छलाह। प्रायः छवि सेहो।

अपन सासुक मृत्यु शय्याक लग जखन विच्छेदक बाद पहिल बेरि सुधीन्द्र गेलाह, ओ प्रतिश्रुति देलथिन्ह जे छविक कल्याणार्थ ओ व्यवस्था करताह। से ओ करबो कएलन्हि। विच्छेदक समय सँ लय अपन आमदनीक तृतीयांश हुनका दैत रहलाह। अपन वसीयतनामामे सेहो एही अंशक व्यवस्था कएलन्हि। दक्षिण कलकत्तामे हुनका ई एकटा मकान कीनि देलथिन्ह। एतहि ओ अवशिष्ट जीवन वितओलन्हि। की फेरि कहियो पत्नी सँ भेट कएलन्हि ? एतय वा ओतयक गोटेक शब्द सँ विरह-स्मृतिक प्रकाश होइत हो। किन्तु कोनो अपराधक नहि। अन्ततः विच्छेदक समयमे निश्चितरूपेँ हिनक धारणा छल जे विच्छेद अनिवार्य छल। जखन हाजरा रोडक मकान मे स्थिति विच्छेद-बिन्दु धरि आबि गेल, तखन ई छविकेँ अपन भाय-बापक घर कार्नवालिस स्ट्रीट पठाय स्वयं हाथी बगान फिरिकेँ चल गेलाह। किन्तु स्पष्टतः एना ओ कएलन्हि विश्व भारतीक छात्रा मधुरकंठी राजेश्वरी वासुदेवक संग शिष्टाचरणक दृष्टिएँ अधिक स्वतन्त्र भय मिलनक उद्देश्य सँ। हुनकासँ हिनका भेट भेल छल अपन मित्र सुमन्त्र महालनवीसक ओहि-ठाम। ओतय ई हुनका प्रति बहुत आकर्षित भेल छलाह। ओ युवती छलीह ओ आकर्षक। हुनकामे ओही प्रकारक गुण छल जकर अपना पत्नीमे हिनका अपेक्षा छलन्हि। ओ एखनहुँ एक अर्थमेँ सोझ-सपाट छलीह। ई सत्य जे दूनू गोटय दू घुश्तक छलाह, किन्तु से कोनो तेहन बात नहि छलैक। जकर मूल्य छलैक से छल स्वभाव ओ रुचिक सामंजस्य। केवल सुधीन्द्रे राजेश्वरी सँ प्रेम करय लगलाह से नहि प्रत्युत प्रतिभासम्पन्न गायिका, जनिका टैगोरक आर्शीवाद प्राप्त छल ओ जनिक एक-दूटा डिस्क निकलि चुकल छल, सेहो अधवयसू कवि-बुद्धिजीवीक संग, जे टैगोरेक उत्तराधिकारी ओ प्रतिद्वन्द्वी छलाह, प्रेम करय लगलीह। एकर फल भेल मूल्यवान् अनुभव एवँ खुशमिजाज सामाजिक जीवक सामयिक आकर्षण सँ

भिन्न रूपक। किन्तु ई भेल ठीक ओहि समयमे जखन वैवाहिक सम्बन्ध संकट मे छल। लोकके बुझवामे इएह अएलैक जे राजेश्वरीक हेतु ई अपन पत्नीक परित्याग कय रहल छथि। किन्तु की ई सएह कएलन्हि? अथवा अपन आ छविक सम्मिलित कारण सँ? यथार्थमे की ई एकटा प्रेमक त्रिकोण छल, उत्कट प्रेमक समयमे निर्वाहिक असफलता नहि? जे होअओ, ई संवेदनशील प्रसंग छल। जँ सुधीन्द्र एवं छविक शुभेच्छुलोकनि एहि सँ दुखी भेलाह तँ एहि हेतु हुनका लोकनिके दोष नहि देल जा सकैछ। संगहि केयो आशा कय सकैछ जे हिनक मित्र-लोकनिमे सँ एक गोटय हिनक स्थिति बुझैत छलाह। एकमात्र व्यक्ति जे हिनक विश्वासभाजन छलाह आ हिनक दूरक सम्बन्धिक छलथिन्ह—प्रसिद्ध सरैयाँ गोबर गुह। हुनका बुझल छल जे सुधीन्द्र दोसर विवाहक तैयारीमे छथि।

ई सोझ नहि छल। ई अपन वृद्ध पिता के मानसिक धक्का नहि देबय चाहैत छलाह। एकरा अतिरिक्त राजेश्वरीक परिवारक अनुमोदन प्राप्त नहि छलैक। यथार्थमे ओ लोकनि राजेश्वरीके अपना ओहिठाम बजाय ओ किछु दिन हुनका जेठ वहिनिक ओतय राखि रोकबाक चेष्टा कएल। जखन ई प्रयास असफल भेल, संगहि आओर निवारणात्मक यत्न सेहो, तखन सुधीन्द्रक एहि प्रतिश्रुति पर जे ई प्रथमा पत्नीक संग सभ सम्बन्ध तोड़ि लेताह ओ लोकनि अन्तमे सहमति देल। 29 मइ 1943 के लाहौर मे विवाह सम्पन्न भय भेल। सुधीन्द्रक परिवारक केयो सम्मिलित नहि भेलाह। गोबर गुहक पुत्र के छोड़ि, केयो बुझबो नहि कएलक। सुधीन्द्र अपन नवविवाहिता पत्नीक संग फिरि अएलाह तथा थियेटर रोड पर सुशील दे क फ्लैटमे रहय लगलाह। तखन अपना परिवारके सूचना देल। पहिने अपन अव्यवहित छोट भायके जे असल मे परिवारक मुख्य छलाह। हरीन्द्रनाथ असहमति नहि देखओलिन्ह प्रत्युत राजेश्वरीके हातीबागान लय गेलाह ओ सासुसँ हुनक परिचय कराओल। सासु सेहो स्वागत कएल। पारिवारिक भृत्य-मंडलीक कतोक लोकक कथन जे ओहि अवसर पर छविदत्त एकटा ओहार लगाओल गाड़ी-मे आवि बाहर सँ राजेश्वरीके एक नजरि देखलन्हि। प्रायः ई कथन मन गढ़न्त थीक। जे होअओ, परिवार द्वारा स्वीकृति तनाओके ढील कय देलक। एहिसँ अन्ततः सुधीन्द्रनाथके जमिके वैसबामे सहायता भेटलन्हि। किछु काल धरि सुधीन्द्र ओ राजेश्वरी सुधीन्द्रक सभ सँ छोट वहिनिक संग रहलाह। बादमे रसल स्ट्रीटक फ्लैट मे चल गेलाह-मकान संख्या 6, सूटे संख्या 6, नव जीवन आरम्भ भेल।

सुधीन्द्रनाथ छलाह 42 वर्षक। कम्युनिकेशन अफसरक रूपमे एयर एड प्रिकौशनमे काज करैत छलाह। हिनका सँ ठीक ऊपर अफसर छलाह सुशील दे। वयस एवँ खराब स्वास्थ्यक कारण ई सक्रिय युद्ध सेवाक अनुपयुक्त छलाह। एक वर्ष पूर्व हिनक पिताक देहान्त भेल छल (16 सितम्बर के)। यद्यपि ई मृत्यु

हिनका हेतु हानिक पराकाष्ठा छल जाहिसँ ई अत्यन्त शोकाकुल भेलाह, किन्तु मृत हिन्दूक ज्येष्ठ पुत्रक करणीय आवश्यक कृत्य नहि कय सकलाह। (हिनका स्थानमे सभ हिनक कनिष्ठ भाय कएल) तकर कारण छल होएत ए० आर० पी० क अधीन नौकरी जाहिमे खाकी वस्त्र ओ नियमित उपस्थिति अनिवार्य छलैक। हिनका एहि सभ कृत्यमे विश्वास छलन्हि वा नहि से अनुमान करबाक वस्तु थीक। हिनक विचारधाराकेँ विचारैत केयो एहिना सोचि सकैत छल जे एहि सभमे हिनका विश्वास नहि छल। जे होअओ, शोकानुष्ठानक एक-दू प्रसंग मे तँ ई योगदान कैये सकैत छलाह। कतोक वर्ष बाद हिनक माताक देहान्त भेला पर सेहो ई एहन कोनो कृत्य नहि कएलन्हि जकर आशा हिनका सँ कएल जा सकैत छल। फेरि सभ कर्म सौरिन्द्रनाथकेँ करय देलथिन्ह।

सुधीन्द्रनाथ बहुत नहि लिखैत छलाह। वर्षमे तीन कविता। 1938, 39 तथा 40 मे दर छल इएह। 1941 मे दू। 1945 धरि चुप्प, यद्यपि पहिलुका 'हेन' केर अनुवादक संशोधन कएलन्हि। ओहिना गद्य सेहो घटि गेल — 38, 39, 40 प्रत्येक मे तीन लेख। 49 मे एक, तकरा बाद प्रायः पाँच वर्ष धरि एकोटा नहि। संगहि 'परिचय' मे रुचि लेब छोड़ि रहल छलाह। स्थिति एहन भेल जे ओकरा छोड़बाक हेतु प्रस्तुत भय गेलाह। हिराण सान्याल ओहि समयमे संयुक्त सम्पादक छलाह। राजेश्वरीक संग हिनक विवाहक किछु सप्ताहक बाद 1350 व० स० (जून-जुलाइ 1943) मे दूनू गोटयक संयुक्त हस्ताक्षरसँ एकर अन्तिम अंक प्रकाशित भेल। प्रायः हुमायू कबीरक दिशि सँ एहि पत्रिकाकेँ खरीद-बाक प्रयास भेल। किन्तु एहि सँ जोरदार प्रयास भेल हिनक मार्क्सवादी बन्धु-लोकनिक दिशि सँ। एहि हेतु सुशोभन सरकार गप्प कएल। सुधीन्द्र हुनकहि लोक-निक पक्षमे निर्णय कएलन्हि, किन्तु पत्रिका सोझे बेचल नहि गेल। 1948 धरि ई 40 रुपैया मासिक दर सँ साँकेतिक रायल्टी लैत रहलाह। एही समयमे कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लागल ओ सुधीन्द्र लेनदेनकेँ बन्द कय देबय चाहलन्हि। एकरा अतिरिक्त विमलचन्द्र सिंहक दिशि सँ सेहो प्रस्ताव आएल। 5000 रुपैया मूल्य प्रस्तावित भेल। धनराशि 'इन्टर नेशनल हाउस' जकर संचालन पार्टीक कतोक सदस्य लोकनि करैत छलाह भुकतान कय देल (ओहि समय धरि रायल्टी रूपेँ जे राशि देल गेल छल तकरा काटिकेँ ?)

जे होअओ, 1943, 44, 45 मे सुधीन्द्रनाथ ए०आर०पी०क काजमे अपनाकेँ व्यस्त रखलन्हि। एकरा अतिरिक्त, हिनक एकटा नव घर-परिवार छल, नव मित्र-मंडली जकरा अन्तर्गत प्रायः सभ सँ महत्त्वपूर्ण, निःसन्देह सभसँ प्रमुख, छलाह एम० एन० राय। हिनका संग पहिनहि वीरेन रायक ओहिठाम हिनका भेट भय चुकल छल। ई हुनका 'परिचय' मे बजओलथिन्ह। राय कतोक बेरि अएबो कएलाह, किन्तु बजलाह कदाचिते। बादमे सुशील दे क फ्लैटमे तथा रसल स्ट्रीटमे जँ राय कलकत्तामे

छलाह (ओहि समयमे राय देहरादूनमे स्थिर भय रहय लागल छलाह)। एहि प्रकारेँ दूनू गोटयकेँ एक-दोसराकेँ निकट सँ जनबाक अवसर भेल। दूनूगोटय केँ गप्प करबाक ओ तर्क उपस्थित करबामे रुचि छलन्हि। समस्याक कमी तँ छलंके नहि। कतोक मित्र ओ प्रशंसक एहि घनिष्ठताक साक्षी बनलाह। स्व० एलेन राय एना कहैत छथि: 'केवल वस्तुस्थिति कहि देला सँ हुनका लोकनिक प्रति न्याय करब नहि होएत, कारण जे एकर सार्थकता छलैक कोनो महत्त्वपूर्ण अथवा नाटकीय वस्तुमे नहि, प्रत्युत ओहि वातावरण ओ सजीवतामे जे प्रत्येक अवसरकेँ उद्दीप्त कय दैत छल। ओ लोकानि जे रातुक अवसान धरि ऊष्मागतिकी, शिल्प तत्त्व, धर्मेतर नीतिशास्त्र पर तर्क करैत छलाह, आसन सँ उठि जाइत छलाह, चिन्तनक गति-शीलताक द्वारेँ शरीरमे छटपटी आबि जाइत छलन्हि, गप्प करैत टहलय लगैत छलाह, कोनो नव विचारक प्रादुर्भाव सँ हठात् ठहाका लगबैत छलाह—एक सहमति-पूर्ण, एक नवीन अन्तर्दृष्टि। ई नहि जे राय सुधीन्द्र केँ अपन मार्क्सवादमे, जकर नामकरण शीघ्रे ओ अतिवादी मानवतावादक रूपमे करबा लय छलाह, लय आबय चाहैत छलाह अथवा इहो नहि जे सुधीन्द्रनाथ रायकेँ अपन प्रतिबद्धता सँ फराक करय चाहैत छलाह। जँ हमरालोकनि हिनका लोकनिक बीचक पत्राचार, जकर एक अंश प्रकाशित भय चुकल अछि, केँ देखी तँ बुझि सकैत छी जे मतान्तर रहितहुँ दूनू गोटय एक-दोसराक मतकेँ कतेक महत्त्व दैत छलाह—सुधीन्द्र, अपन सन्देह पर जोर दैत ओ राय अग्रगतिमे अपन विश्वास रखैत। रायवादी होएबाक हेतु सुधीन्द्र अपन मार्क्सवादी मित्रलोकनिक परित्याग नहि कएलन्हि। जँ एहन मत प्रचारित अछि तँ ओ निराधार थीक। हम कहब जे स्टालिनक पक्षधर होएबाक कारण जखन सुधीन्द्रनाथकेँ कम्युनिस्ट लोकनि सँ वितृष्णा भेलन्हि, तखन ओ मानवेन्द्रनाथक उदार मतक प्रति आकर्षित छलाह। जेँ हेतु ई मार्क्सवादी नहि छलाह, तेँ जेना कतोक यूरोपीय बुद्धिजीवी कएलन्हि, सुधीन्द्रनाथक मार्क्सविरोधी होएबाक प्रश्न नहि छल। यथार्थमे रायकेर पत्रिका 'दि मार्क्सियन वे' मे छपल अर्थर कोस्टलरक लेख 'दि योगी एण्ड कमिसार'क समीक्षामे मार्क्सवाद-विरोध वा साम्यवाद विरोध रहबाक कारण, हिनक स्वर पूर्णरूपेँ आलोचनात्मक भय गेल अछि। जे ई कय नहि सकैत छलाह ओ छल दूनू मे सँ ककरो पक्षधर बनि जाएब। ई यथार्थ उदारवादी छलाह।

ई अपन स्थिति स्पष्ट कएने छलाह रायकेर पत्रिकाक प्रथम अंकक प्रथम लेखमे। एहि पत्रिकाक योजना ओ प्रकाशनमे ई राय केर सहायता कएने छलथिन्ह। ई एना कहने छलाह "ई बुझैत जे स्वाभाविक आचरण निर्वैयक्तिक होइछ, उदारवादी तर्कवादी भय अपन व्यक्तित्वकेँ स्वशिक्षाक अनुसार समेकित तर्कक आधारशिला पर स्थिर कय दैत छथि। ओ विरोधक परवाहि नहि करैत छथि, प्रत्युत ओकर स्वागते, ई विचारि जे सम्भावित रूढ़िवाद सँ इएह रक्षा करत। जेँ हेतु हुनक

प्रयोजन विकाश रहैछ, अग्रगति नहि, तेँ प्रश्नक विभिन्न पक्षकेँ तौलैत एकसर पड़ि जाइत छथि—एहन प्रश्नक जकर निर्णयात्मक उत्तर देले नहि जा सकैछ। यथार्थमे ई टोमस मानक विडम्बना सं फराक नहि अछि। एतय दिमाग जेना परस्पर विरोधी दू दृष्टिकोणक बीच तर्ककेँ फेंटैत हो। ककरहु प्रतिबद्धताक कमी खटकि सकैत छैक, किन्तु ओकरहु सत्यनिष्ठताक आदर करय पड़तैक।

'दि लिवरल रिट्रोस्पेक्ट' अर्थात् 'मार्क्सियन वे' क पहिल अंक जुलाइ-सितम्बर 1945 मे प्रकाशित भेल। 1945 ओ वर्ष थीक जखन फासिस्ट विरोधी लेखक-सम्मेलन एइट्सक रिसरेक्शन क हिनक अनुवाद (पुनरुज्जीवन) साहाय्य-प्रदर्शन रूपेँ मंचित कएल। एकर प्रकाशन पहिल-पहिल परिचयमे भाद्र 1343 व० सं० मे भेल छल। ई येट्सक तरीका सँ आशुतोष कौलेजक हौलमे मँचिल भेल छल। सफल सेहो भेल। एकर निर्देशन कएल विष्णु दे बहुत योग्यताक संग। यामिनी राय क्राइस्टक छद्मवेशक चित्रण कएलन्हि। उज्जर पर सं क्षाँपल छद्मचित्र, जकर परिकल्पना हुनक अपन छल, देखबामे उत्तम छलैक। सुधीन्द्रनाथक बंगला सोहनगर उतरल यद्यपि लोककेँ आशंका छलैक जे ई एहन नहि भय सकत। जे होअओ, ई मंचन प्रमाणित कएलक जे मार्क्सवादी लोकनि यथार्थमे सुधीन्द्रनाथक परित्यात्र नहि कएने छलाह। आलोचना होइत छल, कखनहुँकेँ कटु आलोचना घरि, किन्तु विरोध अथवा उदासीनता नहि।

सुधीन्द्रनाथ ए० आर० पी० मे 1945 सँ छलाह। 1946 मे, युद्ध समाप्तिक बाद, सहायक सम्पादकक रूपमे ई स्टेट्समैन' मे योगदान कएलन्हि। अँग्रेज मालिकक एहि दैनिकक सँग पहिनहुँ सम्बद्ध छलाह—वस्तुतः तृतीय दशकसँ सामयिक पुस्तक-समीक्षक रूप मे। जखन सितम्बर 1939 मे विश्वभारती द्वारा टैगोरक रचना-संग्रहक प्रथम खण्ड प्रकाशित भेल तखन एकर समीक्षा प्रस्तुत करबाक लेल हिनकहि नियुक्त कएल गेल। ई प्रकाशितो भेल 15 अक्टूबर केँ रविवासरीय संस्करण मे। शीर्षक छलैक—'टैगोर : अपराजित पथप्रदर्शक।' इएह ओ लेख थीक जे बढ़ाचढ़ाकेँ 'रवीन्द्र प्रतिभाक उपक्रमणिका' नामेँ अगहन 1346 वँ० सँ० (नवेम्बर-दिसम्बर 1939) क 'परिचयक' हेतु प्रस्तुत कएल गेल। पछाति ई हिनक द्वितीय निबन्ध-संग्रहमे संगृहीत भेल।

ई भेल एकटा। अन्यान्यो रहल होएत। किंतु जेँ हेतु समीक्षामे लेखकक नाम नहि रहैत छलैक ओ दुर्भाग्यवश ओतेक पुरान अभिलेख स्टेट्समैन क लगमे रक्षित नहि छैक। संगहि, जेँ हेतु ओहन कोनो मोसाविदा, प्रतिलिपि वा कतरन सुधीन्द्रनाथक कागत सभमे हमरा नहि भेटल अछि, तेँ ई सभ अनुमानक वस्तु भय रहि जाइछ। ई अवश्य जे जँ समकालीन पर्याप्त एवं निर्भर योग्य साक्ष्य हमरालोकनि संग्रह कय सकितहुँ एवं संभावित लेखक शैलीगत निरीक्षण-परीक्षण द्वारा संपुष्टि प्राप्त कय सकितहु, तँ एहि सँ उचित धारणा स्थिर भय सकैत। समीक्षक-रूपमे हिनक

संपर्कक अतिरिक्त, हिनक एहन मित्र लोकनि छलाह जे विभिन्न समयमे एतय काज कएलन्हि—मालकम मुगेरिज, लिनसे इमरसन आदि। जे होअओ, सहायक सम्पादक रूपेँ हिनक नियुक्ति एकटा विशेष घटना छल। ई अवश्य जे अंग्रेज लोकनिक एहि पत्रिकामे हिनक नीक समीक्षा भेनहुँ बंगला-लेखकरूपेँ ई संस्था हिनक आदर कएनिहार नहि छल। प्रायः जे निर्णायक वस्तु छल ओ थीक हिनक अंग्रेजी लेखन शैली। संगहि, विडम्बना ई जे ओहि समयमे जे कलकत्ताक अंग्रेज-बंगाली दुनियाँ छलैक तकर ई ज्योतिस्तम्भमे सँ एक छलाह। हमरालोकनिकेँ ठीक ज्ञान नहि अछि जे हिनका ओतय कोन काज देल गेल। बहुत सम्भव जे अन्य काजक संग ई द्वितीय सम्पादकीय लिखैत छलाह। की कोनो समय मे पुस्तक-समीक्षा विभागक प्रभारी रहलाह? हमरालोकनिकेँ ज्ञात नहि अछि। किन्तु ज्ञात होइत अछि (एलेन रायक नामेँ लिखल राजेश्वरी दत्तक पत्र सँ) जे हिनक कार्यावधिक अन्त जाकेँ (1948 मे ?) हिनका पर सम्पादकक नामेँ पत्रकक प्रभार छल। हमरालोकनि इहो जनैत छी जे एकरा लय हिनका प्रचुर परिश्रम करय पड़ैत छल-(फेरि रायलोकनिक नामेँ लिखल पत्र सँ) ततेक जे जखन ई घर फिरिकेँ आवथि तखन तेहन श्रान्त भय जाथि जे आओर किछु नहि लिखि सकथि। रायक पत्रिका क लेल एकटा लेखो धरि नहि। हम निश्चित रूपेँ जनैत छी, बुद्धदेव बोसक नामेँ लिखल पत्र सँ जे हिनका मतेँ पत्रकारिता साहित्यक विरोधी थीक। अन्ततः ई स्पष्ट भय गेल जे स्टेट्समैनक काज हिनका प्रिय नहि छल। ई प्रायः स्वीकार कय लेलन्हि दिल्ली सँ बहराएवाला पत्रिका 'थौट' क साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्पादकक पद। किन्तु अन्ततोगत्वा किछु गड़बड़ी उपस्थित भय गेलैक। ई ततेक उदास भय गेलाह जे इंगलैन्ड धरि चल जएबाक बात सोचलन्हि। कहल जाइत अछि जे लँडनक प्राच्य एवं अफ्रिकीय शिक्षा संस्थानमे बंगलाक अध्यापक पदक हेतु आवेदन धरि कएलन्हि। ई हमरा लोकनि एडवार्ड शील सँ ज्ञात करैत छी। प्रायः ई सूचना हुनका राजेश्वरी सँ प्राप्त भेल। भाग्यवश एकर कार्यान्वयन नहि भेल।

सहायक सम्पादक रूपेँ काज करैत ई स्टेट्समैनक 'पत्रिका' भागमे कतोक लेख प्रकाशित कएलन्हि। एहिमे सँ एकटा छल 'अतुल बोसक कला'। ई यामिनी राय पर सेहो लिखलन्हि। 1941 मे टैगोरक चित्रकला पर लिखब ई कहि अस्वीकार कएलन्हि जे ओ ततेक बृद्ध छथि जे दबलो स्वर मे हुनक आलोचना अनुचित होएत। एहि सँ स्पष्ट अछि जे हिनक रुचि विवेकपूर्ण छल। ओरियेन्टल स्कूलक ई साधारणतः विरुद्ध छलाह— ऊपर हमरा लोकनि देखियो चुकल छी—कारण जे ओ चित्रांकनक अपेक्षा प्रबोधक अधिक छल। अतुल बोस हिनका प्रिय छलथिन्ह कारण जे ओ सत्यनिष्ठासँ शिल्पक प्रयोग करैत छलाह। एहन छलाह यामिनी राय जनिका ई यथार्थमे निष्णात मानैत छलाह। 1939 मे ई यामिनी राय पर मोटा-मोटी पैघ लेख लिखने छलाह—'यामिनी राय ओ बँगालमे चित्र

कलाक परंपरा'। एकरे संक्षिप्त संस्करण 1943 मे लौंगमैन्स मिसेलिनीमे छपल छल। ई आलोचना करैत लिखलन्हि —"ओ अपन श्रमपूर्ण जीवनमे जे विरामहीन विकाश देखओलन्हि अछि तकरा रहितहुँ हुनक ओ समकालीन दृश्यक बीच जे आभिजात्यक बाधा रहल अछि तकरा तोड़बामे ओ सक्षम नहि भेलाह। हमरा सन्देह अछि जे हुनक उदासीनता ओतेक अपन चुनल वस्तु नहि थीक जतेक ई थीक प्रतिगमनक प्रति स्वाभाविक रुचि जे अपन आत्मप्रकाश करैछ पुनरुद्धारक स्वरूप सँ पोषित अन्धगाँधीवाद मे। सभ विचारला पर हमरालोकनिक नगरीक उथलपुथल आइ धरि आबि हमरालोकनिक भूमिमे जड़ि जमा लेलक अछि ओही प्रकारेँ जेना समतलक नीरवता ओ पहाड़क गरिमा। जेँ हेतु यामिनी रायक एकमात्र आकांक्षा रहलन्हि अछि जनसाधारणक सँग एकाकार भय जाएबा मे तेँ जखन ओ लोकनि पूर्व निश्चित मार्ग पर आगाँ बढ़ि रहल छथि तखन ई हुनका सँ विमुख नहि भय सकैत छथि। जनिका लोकनिक सम्बन्धमे हम सोचि सकैत छी तनिक मध्य इएह टा हुनक प्रतिनिधित्व करबामे योग्यतम छथि। हुनक आकांक्षाकेँ रूपायित करबामे सेहो। हमरा विश्वास अछि जे जँ ई अपन काज पूरा कय लेथि तँ हिनक काज अपूर्ण नहि रहत। स्थिति एहन अछि जे हम जतेक कलाकार केँ जानल अछि ताहिमे ई सभ सं सन्तोषप्रद छथि। हम दूनू गोटय एके भूतकालक दिशि उनटिकेँ तकैत छी ओ एके भविष्यक सम्मुखीन छी।"

चारिक दशक मे, विशेषतः युद्धक बाद 6, नम्बर रसेल रोडक सूटे संख्या 6 क्रमशः कलकत्ताक अंग्रेजी-बँगाली-मक्कामे परिवर्तित भय गेल। हिनक जीवन-शैली बदलि गेल ओ कम-सँ-कम वाह्यरूपेँ ई अपन युवावस्थाक कलकत्ता सँ पृथक् भय गेलाह। 'परिचय' सँ सम्बन्ध-विच्छेदक बाद हिनक रचनाक संख्या घटैत गेल। एहन बुझना गेलैक जे ई बँगला-साहित्यक दुनियाँ सँ फराक भय गेल छथि। हिनक समसामयिक लोकनि कदाचिते हिनका सँ भेट करथि। हिनका पीढ़ी सँ बादक लोक कदाचिते हिनका जनलक। एकरा अतिरिक्त हिनक मित्रलोकनि कदाचिते हिनका ओहिठाम आबथि। जनमंडलीक संग हिनक प्रचुर बौद्धिक एवं सैद्धान्तिक संपर्क छल, किन्तु प्रमुख रूपमे कदाचिते—विशुद्ध साहित्यिक तँ कथे नहि। अधिक काल ई अंग्रेजिये बाजथि। यद्यपि इमली बागान जाय माय सँ बरोबरि भेट करथि, धोती पहिरथि थोड़ अवसर पर। ई नहि जे पहिने ई अंग्रेजी नहि बाजथि अथवा पश्चिमी कपड़ा नहि पहिरथि अथवा पश्चिमी भोजन नहि करथि, किन्तु जीवन-शैली बरोबरि बँगाली छल। 1939मे कार्नवालिस स्ट्रीट छोड़ि केँ, रसेल स्ट्रीट चल जाएब (हम तत्काल 49 केँ छोड़ि दैत छी) वस्तुतः वाह्य संस्कृतिक परित्याग सेहो छल। सूटेकेर विस्तार, वेलिंगटन स्क्वायरक हूबहू स्मरण नहि करबैत छलैक—उपस्कर, पर्दा स्पष्ट जनबैत छल जे ई अंग्रेजी-बँगाली घर थीक। एहि सँ एकटा दोसर 'दत्तक' स्मरण प्रकटित होइत छल—प्रायः एक शताब्दीक तीन चतुर्थांश

पूर्वक। किन्तु अन्ततः हृदयसँ मधुसूदन जेना बंगाली छलाह तहिना छलाह इहो। ई अंग्रेजी तहिना स्पष्ट ओ साफ बजैत छलाह जेना बंगला—बिलकुल अंग्रेजसँ विपरीत। ई प्रतिदिन सुरुचिपूर्वक सूट ओहिना पहिरैत छलाह जेना चमत्कारक संग चौपेतल धोती ओ कुर्ता। एतहु अंग्रेजसँ विपरीत। हिनका देखिकेँ कोनो हीनबुद्धिक डब्ल्यू० ओ० जी० क भान नहि होइत छलैक—प्रत्युत स्वाभिमानी बंगालीक जे पश्चिमी लोककेँ अपन समकक्ष मानैत छलाह, जे पश्चिमी लोक केँ जेना इतराकेँ पश्चिमीकरणक नमूना देखबैत होथि।

वाह्यतः हिनक जीवन परिपूर्ण छल। किन्तु की भीतरो हिनक जीवन संकटापन्न छल, कारण जे हिनका सन्तान नहि छलन्हि? प्रतिभा बोस अपन जीवनवृत्तमे राजेश्वरीक उक्तिक उल्लेख कएने छथि जकरा अनुसार जीवनक अन्तमे (1976) राजेश्वरी अपन अजन्मा सन्तानक विषयमे नैराश्यपूर्ण कथा कहलथिन्ह। की ओ एहि समय पहिल बेरि गर्भवती भेलीह, किन्तु सन्तान जन्म नहि लय सकल? की सुधीन्द्रनाथक शून्यवादसँ एकरा कोनो सम्बन्ध छलैक? हमरा लोकनि अन्दाजे टा लगा सकैत छी। जे हमरालोकनि जनैत छी ओ मात्र इएह थीक जे हिनक सर्जनात्मक वृत्ति संकटापन्न छल। ई क्रमशः थोड़ लिखैत गेलाह—किछु दिन धरि तँ प्रायः किछु नहि।

छओ

1949 मे सुधीन्द्रनाथ स्टेट्समैन छोड़ि देलन्हि। अन्त मे उपस्थित मतवैभिन्यक कारण दिल्लीक 'थौट' मे प्रदत्त स्थानक ग्रहण नहि कएलन्हि। एस० ओ० एस० क आवेदनसँ सेहो कोनो फल नहि बहराएल। हुनक जीवनक विषयमे जतबा दूर धरि हमरा जानल अछि अंग्रेजीमे एकटा कविताकेँ छोड़ि किछु कालधरि ई कोनो कविता नहि लिखलन्हि। सेहो प्रायः दू वर्ष पूर्व। 'स्वतंत्रता दिवस' 'इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक ओपीनियनक' निदेशक एरिक दे कोस्टाक नामेँ उत्सर्गित भेल। ई स्वतंत्रता प्राप्तिक छओ दिन बाद लिखल गेल। भावोच्छ्वासपूर्ण एवं आवेगपूर्ण होएबाक बदलामे ई वस्तुस्थितिक वर्णन कएलक। 'हम जनैत नहि छी जे स्वतंत्रताक की अर्थ थिकैक। एखनहुँ हमरा देखब बाँकी अछि तरुआरि गलाकेँ। हरक फार बनाएब। एकरा अतिरिक्त स्वतंत्रता आएल ठीक जातीय दंगाक बाद जकरा स्मरण पटलसँ मेटाएब असंभव छल। ई सत्य जे हिंसाक बाद स्थिति बदलल, किन्तु निश्चित रूपेँ···

एहन चिह्न बहुत नगण्य जे ई पूर्वगामी बनय
ओहि स्वतंत्रता केर जकरा हम अपन बाल्यावस्थामे कहल
वरदान। किन्तु बढ़ैत दुर्बलता नहि थीक
हमर एकमात्र हानिः कतोक वर्ष फोंक बना देलक अछि
पुरनका दुनियाँ केँ; तथा स्वर्गक झुकि जएबाक संग
हमरा पएरक नीचाक भूमि तुनुक भय गेल अछि।
तेँ की एकर कोनो महत्त्व छैक जे घटनाजाल फूसि बना देअय
हमर आशा-आकांक्षाकेँ जे गाड़ि देल गेल अछि सफल युद्धक
बढ़ैत गदौसमे, क्रान्तिक परिपूर्णतामे ?

एहिमे कोनो आश्चर्य नहि ई विचारैत जे सुधीन्द्रनाथक इतिहासबोध कहियो उन्नत नहि छल। किन्तु एतय एकटा प्रशंसा अछि—करबाक योग्य प्रशंसा :

किन्तु जखन मध्यराति फेरि आवि जाइछ
तथा चाकचिक्यक स्थान लय लैछ दैन्य-दारिद्र्य
स्मृति फिरि जाएत दूर सनातन आलोड़नक घटना-चक्रसँ
ओ सांत्वना तकैत हृदयंगम करब
बूढ़-पुरान लोकक ऐतिह्यमूलक विश्वासकेँ। ओ स्वेच्छासँ,
जेना स्वतंत्रताक मांग थिकैक, आवाज उठाओत
एटम बमक गर्जनसँ ऊपर, ओ
मनुष्यक आत्माकेँ कहल जेल ओकरा द्वारा···
सभ वस्तु मटियामेट भय जाएत, किन्तु जँ
उच्चरित होएत ओ नाम शून्य कालमे
तँ स्वतंत्रताक स्वप्न बांचल रहि जाएत
आक्रामक दीप्तिक ध्वंसक बादो।

ई हिनक गांधीवादमे परिवर्तन नहि छल। छल केवल एक ऐतिहासिक क्षणक सत्यताक स्वीकृति। एकर अर्थ केयो द्वैधवृत्ति ग्रहण कय सकैत अछि, शून्यवाद नहि। जाहि कोनो अर्थमे लेब, हिनक स्थिति उदारवादिताक छल।

1949 मे ई स्टेट्समैन छोड़ि देलन्हि, किन्तु 1949 मे ई प्रधान पब्लिसीटी अफसर रूपेँ नव संघटित दामादेर वैली निगममे योगदान कएल। एहिमे केयो इतिहासक प्रेरणा देखि सकैत छथि किन्तु एकटा संयोग सेहो मानल जा सकैत अछि। एकरा अतिरिक्त जेना स्टेट्समैनमे तहिना दामोदर वैली निगमक पद हिनक सर्जनावृत्तिकेँ प्रेरणा नहि दय सकैत छल। ओ पद जकरा संग ई थोड़ेक प्रतिबद्ध छलाह ओ छल ए० आर० पी०क पद। ओ पद जकरा संग ई आओर अधिक प्रतिबद्धताक बोध कएल ओ छल जीवनक अन्तिम वर्षमे आएल यादवपुर विश्वविद्यालयक पद। किन्तु डी० वी० सी० मे स्टेट्समैने जेकाँ पूर्ण इमानदारी सँ काज कएलन्हि · एतेक धरि जे पांच वर्ष बितलाक बाद जखन नीतिमे व्यापक परिवर्तन देखलन्हि तखन पदत्याग कय देलन्हि।

1954 मे ई डी० वी० सी० सँ पदत्याग कएल। किन्तु एहि बीच अप्रैल-सितम्बर 1952 मे ई दोसर बेरि विदेशक यात्रा कएल। एहि बेरि अपन पत्नी राजेश्वरी क संग। पहिल यात्रा मे ई पुबरिया रास्ता पकड़ने छलाह। एहि बेरि पकड़लन्हि सामान्य पश्चिमी रास्ता। इटली, ग्रीस, एतेक धरि जे टर्की समेत यूरोपक विभिन्न देश देखलन्हि। तइस वर्षक बाद हिनका केहन लगलन्हि? की ई संयोगक बात थीक जे जर्मनीकेँ छोड़ि देलन्हि? एकरा बाद 1955 क यात्रा मे सेहो सएह कएलन्हि। जे होअओ 1952 क यात्रा लाभप्रद भेल, कारण जे जखन ई फिरिकेँ अएलाह तखन हिनक एकटा सर्जनशील अवधि रहल। ई अपन अन्तिम कविता लिखलन्हि 1945 मे ओ अन्तिम गद्य 46 में। ऊपर हमरोकालनि

हिनक 1947 क एकमात्र सर्जनात्मकता देखि चुकल छी। 48 में ई मात्र एकटा अनुवादक संशोधन कएलन्हि। 49, 50, 51 मे किछु नहि। 52 मे आओर संशोधन। हिनक अपना हिसाबें वेश किछु। किन्तु सभ छल संशोधन, मौलिक लेखन नहि। 53 मे हठात् ई तीनटा कविता लिखलन्हि—एकटा छल हिनक श्रेष्ठतम कवितामे सँ एक—संगहि किछु संशोधन ओ नव अनुवाद। 53 मे ई अपन पंचम कविता-पुस्तक 'संवर्त क प्रकाशन कएल। कतोक विचारें हिनक सर्व-श्रेष्ठ रचना जकर द्वितीय संस्करण 3 वर्षक भीतर भेल। 1954 मे और्केस्ट्राक द्वितीय संस्करण भेल। 54-55 मे अपन अनुवाद सभकें पुस्तकाकार देलन्हि। 54-55 मे आओर दशटा कविता लिखलन्हि जकरा अपन अन्तिम कविता-पुस्तकमे सम्मिलित कएलन्हि। 56-57 मे संशोशन कय 'स्वगत' क पुनः प्रकाशन—संगहि निबंध क द्वितीय पुस्तकक। निश्चित रूपें ई अवधि आएल सर्जनात्मक वृत्तिक सुदीर्घ शुष्क बर्षक बाद।

'संवर्त'क उत्सर्ग भेल अबु सयीद अय्युबक नामें। एहिमे 23 टा कविता छल। एहिमे सँ सात टा छल बाल्योचित कविताक पुनर्लेखन। ई छल सिग्नेट प्रेसक दिलीप कुमार गुप्त द्वारा प्रकाशित हिनक प्रथम पुस्तक। इएह हिनक अवशिष्ट पुस्तकक प्रकाशन बाद मे कएलन्हि। एखन धरि हिनक प्रकाशक छलाह भारती भवनक कुन्दभूषण भादुड़ी। हिनक प्रथम पुस्तक 'तन्वी'कें छोड़िकें, जकर प्रकाशन एम० सी० सरकार एण्ड सन्सक सुधीरचन्द्र सरकार कएने छलाह। 'संवर्त' क कविता सभ 16 वर्षक अवधि मे छिड़िआएल छल 27 जुलाई 1938 सँ 23 मइ 1953 धरिमे 27टा। एकर कतोक हिनक बाद अर्थात् 31 मइ कें ई एहि पुस्तकक प्रस्तावना लिखलन्हि—यथार्थ मे उल्लेखनीय रचना। केवल हिनक कठिन गद्यक दोसर प्रमाण रूपें नहि, प्रत्युत मलामिनक कविताक प्रति हिनक प्रतिवद्धताक प्रमाण रूपें सेहो। सम्बन्धित कतोक अंशक अनुवाद नीचां अछि :

"महाकवि लोकनि महाकाल एवं विपुल पृथ्वीक दत्तक सन्तान कहल जाइत छथि। हुनका लोकनिक लग हम हाथ पसारैत केवल बौना नहि थिकहुँ प्रत्युत जँ ओ लोकनि सुरुचिक स्रष्टा थिकाह तँ हम कला प्रेमियोक पदनाम पएबाक अधिकारी नहि थिकहुँ। कम-सँ-कम हमरा लेखनमे आधुनिक युगक मोहर स्पष्ट अछि। जें हेतु अपन व्यक्तिगत अनुभव ओ प्रभूत चेष्टाक बाद हम प्राचीन क्षण-वाद (जकरा अनुसार क्षण मात्र सत्य थीक) क आधुनिक संस्करण धरि पहुँचलहुँ अछि तँ ई नहि अस्वीकार कएल जा सकैछ जे हमर लेखन पूर्णतः क्षणभंगुर अछि। किन्तु क्षणभंगुरता ओ उदासीनता एके विशेषणक भिन्न रूप नहि थिकैक। जें हम बौद्धलोकनि जेकां शून्यवादी भय आचरण मे विश्वास रखैत छी, तें हमरा विचारें स्वतःपूर्णकर्ता समस्त विश्वक आधार थीक।

"जखन उपर्युक्त विश्वास साहित्यिक क्षेत्रमे प्रयुक्त होएत तखन अनुत्तर-

दायित्व, जकर दोसर नाम आवेग थिकैक, अपन अधिकार गमा देत। तथापि काव्य विषयवस्तु चुनबामे कवि स्वतंत्र नहि छथि। तैयो जें हेतु मूलप्रवृत्ति एवं पारिपार्श्व दृढ़निश्चय एवं अविराम चेष्टाकें प्रयोजनीय बना दैछ, तें ई आवश्यक नहि जे जनमितहि कोनो कविता पाठकक अपेक्षा राखय। जखन ई अन्तिम रूप लय लैछ तखन ई पाठकक विचारक वस्तु भय जाइछ। यथार्थमे मनुष्यक पैध-सँ-पैध सफलता अपूर्ण थीक। एहन कलाकृति जकर प्रत्येक अंश अतुलनीय होइक अथवा जकर संशोधन सोचले नहि जा सकैछ यथार्थमे विरल होइछ···

तथापि हमर सौन्दर्यबोधक अनुसार आधूतसँ आधार पैध होइछ। मनुष्यक हिसावें हम वाहरी दुनियांसँ प्रभावित छी। तथापि एहि पुस्तकक असामान्य भावना दुःखावह अछि। एकर खास शैलीकेर विकासक उल्लेख सेहो एतय नहि भेल अछि। यद्यपि विगत वीस वर्षसँ हम बुद्धिपूर्वक चाहलहुँ अछि जे हमर गद्य ओ पद्यमे सामंजस्य रहय, तथापि हमर इच्छा ओ योग्यतामे द्वन्द्व रहि गेल।

किछु होअओ, हमर लक्ष्य रहल अछि मलामी द्वारा वर्णित काव्य-पद्धति। हमहुँ स्वीकार करैत छी जे कविताक प्राथमिक तत्त्व थीक शब्द। एहि रचनाकें शब्द प्रयोगक एकटा क्रियाशीलन बुझल जएबाक चाही। कलाके कवितामे एहि हेतु प्रयोग भेल हो जे देखिऐक जे छोट वा पैघ, देशी वा उधार लेल, विशिष्ट शब्दावली धरि छन्द मे, शिथिलता विना अनने, प्रयुक्त भय सकैत अछि वा नहि। जें शब्द एवं छन्द दूनू परजीवी थीक, तें वर्तमान शब्द संयोजन एवं छन्दविन्यासक पूर्व आबि जाइत अछि कविक विचार ओ भावना जकर वाह्य आधार फेरि बनि जाइछ समसामयिक घटनाचक्र।

'संवर्त'क प्रधान विषयवस्तु छल युद्ध अथवा ओ कारण जे युद्धकें जन्म देलक। एकर उपस्थापन कएल गेल प्रथम कविता 'नान्दीमुख' द्वारा जे सभसँ पहिने लिखलो गेल। 'तोरा हेतु एकटा गीत'—एना एकर आरंभ भेल। एहिसँ हमरा लोकनि प्रेम कविताक आशा कय सकैत छलहुँ, किन्तु तुरन्त ई अधिकांशतः समाजपरक भय जाइछ:

तथापि वर्षा होबय लगैछ अनवरत हमरा हृदयमे :
सिक्त, धूसर तथा विदेह नगर
भूत जेकां उपद्रवकारी···
ध्यान उचटि जाइछ जहिना ई उतरि अबैछ;
पर्दा पर ई कोन छाया थीक ?
नाम की ? कोनो उत्तर नहि, केवल
धारासंपात अनवरत···
कखनहुँ कें बोध होइछ ओकरा हम जनैतछी।
ओहन रूप, रेखा, विजलओता चमकि गेल,
पकड़ा जाइछ चीनी पर्दामे।

स्पेनमे सेहो एहन भंगिमा
प्रतीत होइछ असामंजस्यक अंश रूपेँ;
भंग करैत ओकर शान्त विलासिता केँ ओतहु
एकटा विदेशी सेना उल्लसित अछि प्रमोद उद्यानमे आइ।
स्पेनसँ चीन धरि गोधूलिमे हेड़ाएल···
ओहो सभ प्रेम कएलक हमरहि जेकां
असीम समतल ओ राजकीय आकाशकेँ
तथा वायुसँ उद्वेलित तारामंडल केँ।
गिरोहक जीवनसँ उमठल
आकांक्षा कएलक आवेगपूर्ण बंधनक
सोचलक स्वेतचन्द्रमाकेँ पावि सकैत छी
लटकल इच्छावृक्षक नमरल शाखामे।
नगरमे केवल गरल पान कएल
सभ हमरहि जेकाँ।
किन्तु पसारिकेँ जाल शून्यमे
छोड़ि दैछ विडम्बनासँ मधुछत्ताकेँ
सतत जागरूक काल···
आन्हर मधु-माछी घनघनाइत अछि; समस्त दुनियांमे लटकल अछि
कालक महाजाल···
ओकर स्वतंत्रता पहिने हम पुनरुज्जीवित करी
अन्यथा नगर ओ समतल
भरि जाएत सड़ल लहाससँ···
शक्तिभरि हम अवश्य योगदान दी
उद्धत पवित्रीकरणक कार्यमे।

अन्तिम स्वर किछु स्वीकारात्मक अछि। स्मरण देअओवैत अछि 'ऊँट पक्षी'क जकर रचना बहुत पूर्व नहि भेल छल यद्यपि ई 'संवर्त'क अनुरूप नहि छल। तेसर कविता 'उज्जीवन' जे पुरना कवितामे सँ एक थीक ईश्वरविषयक अछि। प्रतिश्रुत अवतारविषयक। ओही स्वरमे जाहिमे अछि 'क्रन्दसी'क कविता सभ। एकर अन्तिम पंक्ति अछि :

ककर पुरोहित ?
डेग—ककर पदाघात
प्रतिध्वनित होइत अछि निःशब्दताक वीच ? आगमन···
ककर आगमन हठात् अनैत अछि
कोलाहलयुक्त व्यवधान प्रतिश्रुत भविष्यद्वाणीमे ?

तखन की ई दोसर थीक ?
ओ पाशविक शक्ति जकर स्वीकारसँ तोँ मृत्युहीन बनैत छह
की ई ओकर जागरण थीक ?
इजिप्टक मुर्दा
जे नुका कें राखल गेल माटिक नीचां कबरमे
अबैत छह तोँ नहि, ओ, आधा पशु, आधा मनुष्य
प्रतिक्षण पसरैत मरुभूमिक संग ?
अमर आत्मा मरि गेल, भय नङड़ा पीटैत अछि हृदयमे।

ई एकरा द्वितीय आगमन कहि सकैत छलाह इयेट्सक 'पुनरुज्जीवन' जेकां। ओकरा बदलामे व्यंग्य रूपेँ कहलन्हि 'उज्जीवन'—अबैत युद्धक शून्यवादी विचार। की क्राइस्ट-विरोधीसँ हिनक तात्पर्य हिटलरसँ छल ? 'संवर्त'क विशेष रूपेँ व्यक्तिपरक कवितामे सँ एकटा कविता अछि 'जसन' जे युद्धसँ बहुत पूर्व नहि लिखल गेल ओ जाहिमे ई मिथक प्रयोग कतोक सम्बद्ध अर्थक हेतु कएल। एकर गति शिथिल अछि, कनेक घुराओल-फिराओल, विषयवस्तुक दृष्टिएँ पूर्णतः व्यंग्यपूर्ण, बौद्धिक 'नायक'क निष्फलता।

परिश्रम कय हम हेलब सिखल अछि
कम-सँ-कम भाठामुहेँ देहकेँ भसिआ देब आब कोनो समस्या नहि,
नदियोमे अनेक मोड़-माड़ छैक;
कातोमे सँ केयो धकेलि देअय तैयो
जँ अहाँ हेलबाक ककहरा धरि नहि जनैत छी, बांचि जाएब।
ओकरा समुद्र अपना दिशि नहि खीचत।
सरपत अथवा झांखुड़
अथवा जलपड़ीक केशपाशक हरियर जालमे
ओझराएल नहि आन्हर फतिंगा जेकां।

प्रत्युत चकभाउर
फेकि दैछ ओकरा सुरक्षित कछेड़ि पर।
भयानक बाहुयुद्धमे
राक्षसकेँ मारिकेँ वएह पबैत अछि
आधा राज्य ओ राजकुमारीकेँ : एकटा उद्‌बोधक वातावरण
बंशपरंपरा बनएबामे सहायक होइछ; तथा अन्तमे एतय पड़ल
आनन्दमग्न भय सुनैत अछि स्वर्गक स्वागत गीत।
तथापि हम पानिमे कूदि नहि सकैत छी अपन डुबैत नाओसँ।
असफल कौशलसँ

टूटलाहा करुआड़िकेँ धएने फाटल पालकेँ जुगताकेँ स्थिर कएने
फाटल नक्शा दिशि देखि-देखिकेँ
विसरि जाउ हम एकसर छी, संगी-साथी
रहि गेलाह पाछां सुखद वन्दरगाह पर अथवा क्लान्तिमे,
ओहि लोकक रास्ता सेहो हेड़ाय गेल···
एना हम असहाय छी आइ, कोनो सन्तान नहि, एकाकी
वेरि-वेरि
सर्वशक्तिमान् इच्छा एवं सामर्थ्यक अन्तरालक बीच जकड़ि देने छथि।

पानि भरि जाइछ
छिद्रयुक्त नाओ मे, किन्तु हमर धारणा जे हम पार होइत छी···
अतल गर्त स्वेच्छासँ; यथार्थमे भाठामे
ओतेक पछुआइत छी जतबा जोआरिमे आगां बढ़ैत छी···
कोन आशामे हम तखन
टुटलाहा करुआड़िकेँ धएने छी, फाटल पालकेँ यत्नसँ गहने,
ध्यानसँ देखैत नक्शाक चेथड़ी केँ।
सोचू
एहि सभ कतोक कोकनल तक्था पर ओ अहंकारक असंभव दावा पर
एकर प्रत्युत्तर की सात समुद्र पारमे भेटत ?
ओ पुरातन पिपासा
जे संमुद्र नहि मेटा सकल, प्रायः मेटाएत
नदीक ओहि स्थलमे जतय जोआरि
ओ भाठा एकाकार भय जाइछ
जतय महाशून्य प्रतिबिम्बित होइछ, समुद्र ओ ओकर प्रतीकक पिता,
अनतिक्रम्य, स्वतः संपूर्ण, गतिशील।

शून्यवाद ? ओहिसँ बहुत दूर नहि। जेना सुधीन्द्रनाथ स्वयं 1947 मे कहबा लय छलाह अपन 'सौनेट' मे जे एहि पुस्तकमे संगृहीत अछि—'प्रायः ईश्वर नहि छथि: सृष्टि टूगर भय जनमल। एखनहु अनियंत्रित'।

किन्तु प्रायः एहि पुस्तकक शीर्षक कवितामे हिनक समस्त सन्देह ओ निराशा सफलतापूर्वक स्फुरित भेल अछि—कतोक दृष्टिएँ सुधीन्द्रनाथक सभसँ सफल कविता। 166 पंक्तिक ई कविता, जे आयाम तथा आकार मे एकर पूर्ववर्त्ती ऑर्केस्ट्रा ओ पश्चाद्वर्त्ती 'ययाति' सँ तुलनीय अछि, लिखल गेल सितम्बर, 1940 मे। जेना ई द्वितीय विश्वयुद्धक जन्म दिवस पर लिखल गेल हो। एकरहि सुधीन्द्रनाथ अंग्रेजीमे 'साइक्लोन' द्वारा संकेतित कएल—एकटा नाटकीय एका-

लाप जे मलामीक रचनाक स्मरण करबैत अछि—जकर अनुवाद ई स्वयं बादमे कएलन्हि। पंक्ति सभ असमान लम्बाइक अछि, किन्तु अछि तुकान्त। एक प्रकारें टैगोरक 'पयार' जेकां जकरा ओ पछातिक कवितामे अनलन्हि। छओ विभागक सांचा पर विचार करैत कहल जा सकैत अछि जे देवूसी एहि कविता पर सेहो एकटा स्वरलिपि लिखि दितथि। जाहि प्रकारें एकर कथावस्तु आगां बढ़ैत अछि से प्रशंसनीय थीक। किन्तु जे बात एकरा सम्बन्धमे सभसँ रोचक अछि ओ थीक एक वैयक्तिक एवं सार्वजनिक कथानकक संमिश्रण—ई अछि सुन्दर प्रेम काव्य किन्तु संगहि इतिहासक प्रत्यालोचना। सुधीन्द्रनाथ प्रायः यथार्थ ऐतिहासिक घटनाजाल केर विस्तृत उल्लेख कएल—हिनका पुश्तक केयो आन व्यक्ति युद्ध, जे हिनका जीवनक सभसँ सार्वभौम घटना छल, क सम्बन्धमे एहन तीव्र उल्लेख नहि कएलन्हि, किन्तु ई कएलन्हि अपन समस्त वैयक्तिक अनुभवक संग जे इतिहास कें जीवन्त बना दैछ।

'वदरियौन दिनमे हम एखनहुँ स्मरण करैत छी'—किन्तु ई कविता सोझ स्मरणात्मक नहि अछि। भूतकालकें उचितरूपें ध्यानमे राखल गेल अछि। एकटा मध्यवयसी व्यक्ति जनिक धोधि बढ़ि गेल अछि तथा जनिक केश पाछां हटि माथकें देखार करैत अछि, पुरना बातकें स्मरण करैत छथि—समय कठिन अछि कारण जे दैनिक भोजन सूचीकें विना कटने मासिक बीमा राशि देब असंभव। एकरा अतिरिक्त असंभव कय देलक अछि यदाकदा बचाओल पूजी कें लगा देब। समय कठिन अछि, कारण जे (क) बाहर / अन्हरायल क्षितिजक लोढ़निहार लड़ैत अछि। खुट्टी सभक बीच (ख) परती जमीन आबाद भेल। पुश्ननी घृणाक संग जकर लाभ लेत। आगामी शताब्दीक बाद शताब्दी धरि। (ग) सिंहासन पर / निर्वासित अथवा छिन्नमुण्ड 'सीजर' चढ़त / विवदमान आततायी सभ एकसँ दोसर अधिक दुर्दान्त / समय बिकट अछि किएक तँ युद्ध जारी अछि / तथा युद्धक पारिणाम होइछ :

आकाशक एकाकी पहरुआ आत्मरक्षामे
असमर्थ अथवा दोसराक रक्षामे; निकालिकें बाहर
स्वर्णाभ बाधाकें, पातालक अंधकार डुबा दैत अछि
चुट्टीक प्रजनन नगरकें।
बमवाही जहाजक फसरी दबाकें रखने अछि स्वर्ग कें
तथा आदिकविक ससरी बन्द अछि, जनिक ठोंठ मे
भावना फड़फड़ाइत अछि मरणासन्नक
अन्तिम स्वांस जेकां।
किन्तु कखन ओकर पवित्र उपस्थिति आबि जाइछ / भूताविष्ट शून्यके
पूर्ति करबाक लेल

हमरा ऊपर उतरिकेँ आबि जाइछ शान्ति
जकरा बुझब असंभव। ई निवास
चरबी ओ शोणित ओ कटुतापूर्ण, हमर पाशविक
तथा घृणित शरीर, तखन हठात् विमुक्त भय
समयक विष्ठा ओ स्थानीय दोषसँ
घुमिकेँ आवि जाइछ मूल पवित्रता पर।
तथा असंपृक्त भय परिवर्तनहीन स्वप्नमे
एकटा सक्रिय नाचक घोर दुःखान्त नाटककेर
हम पाओल एकटा आदर्श स्थिति जतय विराजमान रहैछ व्यवस्था
विना साहाय्यक सेनाकेर, हवाइजहाजकेर तथा बन्दूक केर।

केवल दिवास्वप्न अथवा ऐतिहासिक दृष्टान्तसँ पूर्ण ? जाहि समयक आवाहन ई मध्यवयस्क वक्ता करैत छथि ओ यथार्थमे प्रकट भेल तथा बुझवामे आएल जे किछु दिन मध्य यूरोप अशान्तिमुक्त रहत तथा जर्मनी भर्सइल सँधिप्रयुक्त अपमान पर विजय पाओत—कम-सँ-कम स्ट्रेसमैन ओ ब्रियड्सक लोकार्नो सन्धिक स्पष्ट उद्देश्य इएह छल। ई बात थीक 1929 क, किन्तु "तावत धरि प्रलयघन / प्रायः उमड़ि आएल / वज्रायुधक देवता तरुआरि पिजवय लगलाह" / कम-सँ-कम दूटा चिह्न स्पष्ट छल—मुसोलीनक उदय ओ समाजवादक भूमि सँ ट्रोस्कीक निर्वासन। किन्तु वक्ताक हेतु मूल्यवान् छल :

परंपरा
असंख्य सूर्यास्तकेर ओकर चमकैत केशपाशमे;
चान्द्रविकास पक्व अंगूर केर
ओकर सुनम्य शरीरमे; तथा लचकैत प्रकाश
घृणा केर प्रकट करैत हठात् ओकरा आंखिक
झबरल रोमावलीकेँ; रचना
गेटे केर, होलुरलिन—राइक केर, संगमे
कथा टोमसमैन केर स्तूपीकृत
शय्याकक्ष मे; वरफ केर 'सोनाटा' लेपटा गेल
लताकुंज मे, चमकैत छल
शतवर्णीय 'ओक' केर ऊपर उठैत मिलनक लेल
त्रिअंकी छत

आ ई सभ, "पार्श्व मे। संस्कृतिक स्वच्छन्द शय्यास्वप्नमे पर्यवसित।" स्वभावतः "एहन रातिक संदर्भमे 'नाजी' देखल गेला पर / हमर अटारीसँ केवल बौना विदूषक जेकां बुझि पड़ैत छलाह/कतबो ओ लाकनि संग मिलि चिकरथु। तथा अन्हराएल टौर्चकेँ डोलबैत पाछां-पांछा चलथु / स्वस्तिक केर"।

एहिठाम सुधीन्द्र नाथ ओकरे विस्तार करैत छथि जकर ई इंगित करैत छलाह। ई एक एहन कानून थीक जकरा अनुसार जँ ऐतिहासिक स्तब्धता ठीक थीक तँ हिटलर सेहो सत्य थिकाह—हम एक केँ दोसराक विना पाबि नहि सकैत छी। "कारण जे सत्य / आ असत्य, नीक-अधलाह, कुत्सित / आ सुन्दर परस्पर जोड़ल अछि / कारण, जँ एकटा म्लान होएत तँ दोसर सेहो/अवश्य विलीन होएत तथा जँ दूनू बांचत / तँ ऋण धन बनिजाएत ध्रुव जेकां / एकान्तर क्षेत्रमे"। ई आकार ग्रहण करैत छल हिनक मुख्य दृष्टिकोणरूपेँ। ई द्वन्द्वात्मकता मे विश्वासी छलाह किन्तु मार्क्सवादीक विपरीत प्रगतिशीलतामे विश्वास नहि करैत छलाह। एकरा बादक दोसर कवितामे जकर विषयवस्तु अछि संयुक्त शक्तिक विजय। असंदिग्ध शब्दमे ई दोहरवैत छथि (ऊपर हम कहि चुकल छी जे हिनक अंग्रेजी कविताक आशय सेहो वएह अछि)। कोनो प्रगतिशीलता नहि, केवल "वैयक्तिक निश्चयसँ संभव/जखन आनल जाय एकर प्रभाव घड़ीक लोलक पर/परिवर्तन केर गति बढ़त वा घटि जाएत"/एहि विन्दु पर कवितामे मध्यवयसी वक्ताक सम्बन्धमे एकटा अवश्यंभावी विवरण जुटि जाइछ : जँ हिनक पछिला प्रेम सत्य छल तँ हिनक वर्तमान कामातुरता सेहो सत्य थीक।

किन्तु "एहि छिटफुट संस्मरणसँ निश्चितरूपेँ तात्पर्य छल सठिआएल स्थितिसँ सँ असंपृक्त रहि जाएब। कारण जे

इतिहासक अध्याय परिपूर्ण अछि
आत्मगोपनसँ जखन पृथ्वी भोतिआएल
निशाचरी जेकां फराक रहि जाइत अछि
अनुभवातीत तारामंडलक भ्रातृत्वसँ।

एहि अध्यायक गुण थीक (क) "मनुष्यक गुण थीक अन्धकार राति/आत्माक" (ख) "भूत विषाक्त पाउजिक रूप मे" (ग) भविष्य "विनष्ट" (घ) विमुक्ति शुल्कहीन मृत्यु" (ड.) विश्वासक अनिश्चितता (च) अन्धविश्वास। आत्मगोपनक एहन अवधिक शून्यताक अन्तिम प्रतीक बनि जाइछ, कारण,

ओ अपन उचित उछ्वसन छोड़ैत अछि
जकरा वातावरण ने सोखि सकैछ, ने बढ़ा सकैछ;
तथा यद्यपि उत्क्रममापकक ऊष्मा
आगां बढ़बामे असमर्थ, जरा दैत छैक
ओकरा, ओकर अपवित्रता ओहिना रहि जाइछ
जेना मुइल दुनियांक शीत ज्वरसँ आक्रान्त
आत्मदर्शीक हृदयकेँ गरम नहि कय सकैछ

ई 'इतिहास' परिवर्तित भय रहि जाइछ : वृद्ध लेलिनक लहास रहस्यसँ आच्छादित/ संगहि मुस्कोभीक; अकुतोभय ट्रोस्की निहत। हथौड़ाक प्रहारसँ; विजयी स्टैलिन

बनि गेल/हिटलरक मित्र; स्पेनक मृतक; चीन टुटबाक समीप जाइत; कवंध फ्रान्स/ पीड़ासँ छटपटाइत। "ई भेल सामूहिक अनुभूति। आ वैयक्तिक?" हमरा जनबाक साधन नहि। जे ओ एखनहुं जीवित अछि अथवा बमसँ मेटा गेलि"। एहि कविताकेँ लय जेना वृत्त पूरा भय जाइछ, कारण जे ऐतिहासिक अनुभवकेँ विचारैत "वर्षाक दिनमे हमरा ओ आइयो मन पड़ैत अछि" एतय आबि समाप्त भय जाएत।

एहन शून्यवाद वंगला साहित्यमे विरल अछि। ई आकस्मिक नहि छल जे सुधीन्द्रनाथक बादक लेखनसँ प्रमाणित होएत। जेना ऊपर उल्लिखित भेल अछि '1945' एकर उदाहरण थीक। ई विजयशील भय जाइत युद्धक प्रति हिनक प्रारंभिक मान्यताकेँ विचारैत, किन्तु से नहि भेल।

विजयक आशा दैत तोँ कहलह जे नृशंस यद्यपि
नाजी लोकनि छलाह, ओहो लोकनि एक दिन मेटा जएताह जखन-
काल आओत,
तथा सत्ये, पराजित जर्मनी
संपूर्ण मृत्युक पीड़ामे छटपटाइत अछि जखन, पश्चिमी दुनियां जेना
प्रातःकालीन सूर्यक प्रतीक्षामे बैसल हो।
कम-सँ-कम रूसी सेना, प्रतिशोधी वन्या जेकां
घेड़ि लेने हो शोषित भूमिकेँ ओकर शक्तिहीनता केँ उजागर करैत
तथा विमुक्त पेरिस गद्दारक शोणितसँ विना पोछनहि अपन लज्जाकेँ
सुसज्जित पोशाकक स्थान मे चेथड़ामे लपेटल दुनियांक आगां प्रदर्शन
करैत
भय गेल आखिर समान भागीदार युद्ध एवं शान्तिमे,
अमेरिका उदार जहिना धनराशिमे तहिना जनशक्तिमे;
तथा इंगलैंड सेहो जकरा सुवर्ण-लुंठनक एकाधिकार छलैक
तैयारीमे लागल अछि कल्याणकारी राज्यक स्थापनामे शून्यसँ आरंभ
कय
ई सभ होइतहुँ जखन अहां विजयक कथा कहल तखन अभिप्रेत नहि छल
आजुक स्थिति जाहिमे लाभसँ अधिक हानि अछि
स्थितिकेँ शून्यमे जाय पटकि दैछ; ओ जकर उद्घोष
करैत छी शान्ति कहि, ओ थीक केवल थाकल सदिच्छा—
हमर विशेष संकट
की एकरे लेल हम दूटा सार्वभौम युद्धक यातना सहलहुँ—खुशी भेलहुँ
असंख्य 'पुनरुज्जीवन' केँ देखि, लाख-क-लाख मृतककेँ
गाड़ि देल छोटछीन कबरमे सड़बाक लेल? तथा की ओ समय आबि
गेल जे फहराबी

हमरालोकनि विजयपताका लोकक जय-जयकारसँ मुखरित
तानाशाहक गलीमे ?
स्वर्ग विलोपित अछि; चारूकात अन्धकारक साम्राज्य।
अहूं छी विलुप्त सर्वदाक हेतु महाशून्यमे।
के उत्तर देत जे आजुक ई शून्यता
आदमक पतनक पुंजीभूत अभिशाप नहि थीक ?

एकर अर्थ एम० एन० रायक संग सश्रद्ध असहमति कें द्योतित करैत हो···जेना कहल जाइत अछि, जनिक उद्देश्यसँ एकर रचना भेल।

'संवर्त' क द्वितीय कविता थीक 'ययाति' जे कतोक वर्ष पछाति लिखल गेल। ई उल्लेखनीय कविता अछि, विशेषत: शिल्पक दृष्टिएँ। एकटा वस्तु जे कविताक क्षेत्रमे सुधीन्द्रनाथ करबाक चेष्टा करैत छलाह ओ छल जतेक संभव हो कविताकें गद्यक समीप आनल जाय ओ हमरा जनैत 'ययाति' मे ओ पूर्ण सफलता पाओलक। एहि कविता मे 108 पंक्ति छैक—न्यूनाधिक 5 विभागमे बांटल। एकर पहिल विभाग देखबामे अतुकान्त अछि, किन्तु भीतरसँ तुकपूर्ण। दोसर ओ चारिम तुकान्त, किन्तु तेसरमे कोनो तुक नहि। पांचममे एककें छोड़ि दोसराक संग तुक छैक। एक संग कठोर ओ गतिशील, ई मालमीक आदर्शक समीप अछि अर्थात् ई जे कविता केवल शब्दक सहायतासँ लिखल जाय। यथार्थ मे ई सुधीन्द्रनाथ द्वारा 'ला अपस-मिदि' क अनुवादक स्मरण करा दैत अछि जे अनुवाद ई कतोक मास बाद कएलन्हि, यद्यपि ई अपन गुरुक कथनसामर्थ्य एखनहु हासिल नहि कय सकल छलाह। वस्तुत: विवरणमे ई कविता रिवोदेक एवं टैगोरक अनुसार छल—जेना बुद्धदेव बोस अपन समीक्षामे स्मरण देअओने छथि; 'ले बेत एरे' तथा निरुद्देश यात्रा'क कौशलपूर्ण सम्मिश्रण। एहिमे केयो पश्चिमी जटिलताक प्रभाव पावि सकैत छथि, कारण जे टैगोरक अलंकार-विधान बंगला पर पड़ल पहिलुक प्रभावजन्य छल जकरा ओ नीक जेकां पचा लेने छलाह। ओ सुधीन्द्रनाथक आगमनक पूर्वहिं बंगला साहित्यक परंपरा बनि चुकल छल। जे होअओ, सोनाक नाओ पर निरुद्देश यात्राक बिम्बक संग करुआड़ि पर बिहुँसैत विदेशिनीकें मिलाएब (1929 मे सुधीन्द्रनाथक अनुभवक कोनो स्मृति ?) तथा भयावह, किन्तु प्रसन्न समुद्रयात्राक ठोस बिम्ब केवल साहित्यिक इतिहासक प्रतीक नहि थीक प्रत्युत उत्कृष्ट काव्य सेहो। संगहि सत्यपरक आत्मकथा सेहो। 'संवर्त'क कवि चालिस भय चुकल छलाह। 'ययाति' क रचयिता अनतिदूर भूतमे पचास। ई दूनू दू विभिन्न दिशाक दू मोड़क प्रतिनिधित्व करैत अछि। एकटामे दीर्घीकृत स्मृति ओ छुच्छ नीरसताक बीचक द्वन्द्व अछि, दोसरमे अछि व्यंग्यसँ परिपूर्ण भावुकता।

पचासक बाद वन प्रस्थान, पूर्वीय बुद्धिमानक अनुसार
अनिवार्य अछि, ओ विज्ञानक मदतिसँ
पश्चिमी औसति जीवनकेँ बढ़ा लेलक अछि
हालमे, तथापि मृत्युक भय अदम्य छैक
युवावर्गमे, बुढ़ापासँ आत्मा पड़ा जाइछ
आ प्रतिश्रुत उद्धार सभठाम अनागत।

'ययाति'क आरंभ एहीसँ भेल अछि। एकर प्रथम भाग वार्धक्य एवं भयक विसंगति एवं निरर्थकताक द्विविध विषय पर अतिरिक्त विवरण दैत अछि—"एकर अर्थ जे / मृत्यु स्पष्ट अछि सभ वस्तुमे आइ / किन्तु एकरा हेतु खेद करब निरर्थक" / कम-सँ-कम ग्रंथकार द्वारा पश्चात्तापक कोनो काल नहि, कारण जे ओ जनैत छलाह जे / "एहन दुर्घटनाक / केवल संभावना नहि छल प्रत्युत छल अनिवार्यता" / एहि विषयवस्तुकेँ दोसर भागमे आओर पल्लवित कएल गेल अछि तथा एकरा संग विरोध देखएबाक हेतु ऐतिह्यपूर्ण सफलता संकेतित कएल गेल अछि। एहि ठाम जलयात्राक विम्ब चुनल गेल अछि जकरा विस्तृत कएल गेल अछि तेसर भागमे। "एकटा वेड़ा / हमहुँ भसा देल हुनकहि जेकां आइ / प्रायः इएह थीक हमर एकमात्र परिचयपत्र / एहि यात्राक वर्णनक उपरान्त "आ तुरन्त अन्त भेल / दुर्भावना ओ प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण व्यापारीक वाद-विवाद / अंग्रेजी सूतक गट्ठर ओ अमेरिकाक बोझा / गहुमक लेल / " आब

प्रकृतिक समर्थनक संग हमर स्वप्नक
शहर निर्मित अछि प्राचीन देवालसँ
जतय गभीर शीतल संध्यामे थाकल नेना

प्रतिविम्ब होइत अछि सुकुमार नाओक संग श्यामल पुष्करिणीमे

चतुर्थ भागमे आओर अधिक आत्मकथा अछि :

किन्तु जेँ कोनो सार्वभौम रामवाण सन्तुष्ट नहि कय सकैछ
भ्रान्तिक भूखकेँ, रिमवौड स्वयं असफल भेलाह
विगत शताब्दी धरिमे, शान्तिपूर्ण स्थान पएवा मे,
यद्यपि, प्रायश्चित्त करैत
उपनिवेशवादीक पापक, ओ पड़ा केँ चल गेलाह अफ्रिकाक तट पर
(जतय कविता ओ साकी ओतबे कल्पनातीत अछि
जतबा मदिरापान आत्मघाती)/ओहम ओतबे बूढ़ जतबा बीसम शताब्दी
बंगालक खाड़ीमे उबडुम करैत, कोनो नायक नहि, तथापि स्तूपीकृत
विनाशक द्रष्टा
जन्महिसँ, युद्ध आ क्रान्तिसँ सम्पूर्ण ठंढा
मनुष्यत्ववादीक प्रार्थना ओ क्रमविकासक सांत्वनाक प्रति,

भूतक प्रति अधिक अरुचि अग्रगतिक प्रति प्रत्यागमनक अपेक्षा।
कारण, भूतक आतुरता सँ प्रेरित
ओ भविष्यसँ तिरस्कृत हमरालोकनि लटकल छी
बिचला प्रवहवायुमे, सभ केयो द्वीपवासी, चाहे चिन्ही वा नहि
एहि शून्यक क्रम विकासकेँ। एखनहुँ वर्तमान खतरा चिकरि रहल अछि
अनुमानत: निस्तेज छन्द जेकाँ
जतय 'लभ'क तुक 'उभ' संग वैसैछ, कखनहुँ केँ 'ग्रोथ' क संग सेहो।
तथा छोटछीन मनोदशा बरोबरि नुका लैत अछि
आत्मानुभूति केँ। आ आव ओहि काव्यात्मक दृष्टिकोणकेँ
हम छोड़ि देल भ्रान्ति बूझि, ई दोगला थीक
असफलताक चिह्न सेहो एहि सर्वनाशक विरुद्र आवाज उठएबामे—
अपने स्वप्नक फरेब।

अन्तिम भागमे जे रचयिता दू विवाहक बीचक असामंजस्यक संकेत दैत छथि तकर विरोधी युक्ति एहि ठाम देल गेल। संगहि यदाकदा लेखनक निरर्थक प्रयासक सेहो। "तथा कखनहुँ केँ सर्जनावृत्ति उसकबैत अछि / जे महाशून्यो तँ दग्ध तारा-सभक भूतसँ भरल अछि/पुरान अभ्यासक द्वारा विसरैत छी जे केवल निस्तब्धता/ अक्षत स्वच्छताकेँ पाबि पहुँचैत अछि अमर कविता तक"/तकरा बाद ई दृष्टिकोण "समस्त ब्रह्माण्ड पसरल, शान्त-सुस्थिर / शून्यक संग अथवा ई अशरीरी ब्रह्म ध्यानलीन" / आ अन्तमे प्रार्थना—"हम एहि साकड़ अनन्तक भूलभुलैयाक योग्य भय सकी / स्वप्न एवं जागरणमे हम स्मरण राखी इच्छावृक्षकेँ / जकर जड़ि ने ऊपर छैक, ने शाखा नीचां जे कदाचित देखल जाइछ / जकरा चारूकात घेड़ने अछि समुद्र अथवा मरुस्थल ?"

1953 मे रचित आओर दूटा कविता अछि—उन्मार्ग तथा प्रत्यावर्तन। एक प्रकारेँ पहिल 'ययाति' क प्रसारण थीक तथा दोसर दूनूक। संगहि '1945' क। प्राय: 'ययाति' थीक बादक कविताक कारणस्वरूप—अंशत: अन्तिमो कविता धरिक। बिम्ब सभमे बारंबार आवयवाला एकटा अछि नाओ तथा नाविक। 1953-56 मे ई बिम्ब बारंबार आएल तकर एकटा वाह्य कारण थीक 1952 तथा 1956-57 मे दू वेरि जे ई यूरोप यात्रा कएल से समुद्र मार्ग सँ सएह (यथार्थमे अन्तिम कवितामे सँ एक वा दूटा ई समुद्रमे जहाज पर लिखलन्हि)।

'समावर्त'क परिशिष्ट, जकर लेखन ई वाल्य रचनाक रूपमे कएने छलाह, रोचक अछि। केवल एकर प्रमाणरूपेँ नहि जे आरंभमे ई कोन रूपक कविता लिखलन्हि, प्रत्युत एहू हेतु जे जकरा ई "सौन्दर्यानुभूतिक सत्ता" कहैत छथि, दोसर शब्द मे अपन प्रामाणिकताकेँ बिना गमओने एकरामे जे परिवर्तन आएल तकर प्रकाशरूपेँ। हिनक कोनो पांडुलिपिकेँ देखि लेलासँ स्पष्ट भय जाएत जे

पठनीय बनएबाक हेतु ई कतेक कष्ट स्वीकार कएलन्हि। अपन विवेकके जतेक दूर धरि ई प्रसारित कय सकैत छलाह तकरा हेतु ई उल्लेखनीय छथि। प्राय: ई 'भेलरी' सँ सहमत छलाह जे कविता कहियो समाप्त नहि होइछ तथा जकरा समाप्त कविता कहल जाइत अछि तकर कारण थिकाह प्रकाशक। एक दृष्टिएँ ई अपनहुँ के पछाड़ि देलन्हि—संशोधन करैत काल प्राय: प्रत्येक शब्दक बदला दोसर शब्द देलन्हि—अन्तरा पंक्ति। जे होअओ, बाल्यकालक एहि कविता सभमे सँ प्राचीनतम 1924 मे लिखल गेल छल अर्थात् हिनक ज्ञात रचनाक लेखनसँ एक वर्षक भीतर। यद्यपि एहिमे सँ कतोक 'तन्वी' क कवितासँ पहिलुका थीक, किन्तु ओकर सामान्य स्वर एवं विषयवस्तु वएह छैक। एहिमे सँ अन्तिम 'पथ' जे मूलरूपे एहि सँ बहुत पैघ छल असाधारणरूपे तथ्यपूर्ण एवं संयत अछि। संगहि किछु बीजगर्भित।

'समावर्त' क सम्मान 'अखिल बंगाल रवीन्द्र साहित्यिक सभा' द्वारा वर्षक सर्वश्रेष्ठ कवितारूपे कएल गेल। नव पीढ़ी क एकटा कवि एकरा प्रबंधात्मक कहल। आ एही कालखंडक समीप नवका पीढ़ीक कविलोकनि हिनकासँ संपर्क बनाएब आरंभ कएल। किछु गोटय तँ हिनकहि 'फ्लैट' मे हिनक कविताक पाठक आयोजन कएल। एकटा विशेष मतवादक, विशेषत: राजनीतिक (राय सम्बन्धी), आधार पर जे संपर्क स्थापन आरंभ कएल गेल छल, आब आबिके साहित्यिक रूप लेलक। 1954 मे ई अपन 'आर्केस्ट्रा' क द्वितीय संस्करण प्रकाशित कएलन्हि। कतोक मास बाद ई अपन अनूदित कविता सभके एकत्र कय 'प्रतिध्वनि' नाम दय पुस्तकरूपे छपओलन्हि। 'प्रतिध्वनि'—शीर्षक हिनक अनुवाद सम्बन्धी सिद्धान्तक संकेत दैत अछि। हिनक दू समसामयिक, बुद्धदेव बोस ओ विष्णु दे प्रचुर अनुवाद कएलन्हि। एहिमे सँ प्रथम व्यक्ति जँ अनुवाद कएलन्हि तँ दोसर व्यक्ति कायाकल्प। भूमिकामे सुधीन्द्रनाथ अपन स्थितिक विशदीकरण कएलन्हि :

"हमरा विचारे जे हेतु कविता भाषा एवं अनुभूतिक सम्मिश्रण थीक, हम स्वीकार करैत छी जे कविताक अनुवाद असंभव छैक। यद्यपि अंग्रेजीक व्याकरण-सम्बन्धी सुविधा, फ्रेंचक शाब्दिक गुणवत्ताक प्रति आकर्षण अथवा जर्मनक वाक्य-रचना अथवा समासबाहुल्य बंगालमे दुर्लभ नहि अछि तथापि एक दिशि ई तीनू ओ दोसर दिशि बंगलाक बीच स्वर्ग ओ नरकक अन्तर अछि। कम-सँ-कम जनिका लोकनिके अनुभव छन्हि ओ जनैत छथि जे पश्चिमक कविक 'स्वीकार' के हमरालोकनि 'अस्वीकार' सँ बुझैत छी। हमरा लोकनि प्रतिदिन एहन शब्दक प्रयोग करैत छी जे पश्चिममे अगबे अतिशयोक्ति कहाओत। अतएव 'मैकबेथ'क कतोक अनुवादक जेकां हम ई दावा नहि कय सकैत छी जे नीचांक पद्य कतोक विदेशी कविताक केवल शाब्दिक अनुवाद नहि थीक प्रत्युत तालयाश्रित अनुकृति सेहो। एहन प्रयास असंभव। यद्यपि एहि तथ्य धरि पहुँचबामे जे भावना ओ भाषाक अच्छेद्य समीकरणके पाएब कविक एकमात्र कर्त्तव्य होइछ, हमरा

जीवनक आधा अंश लागि चुकल अछि। अपन अपरीक्षित आत्मविश्वासक प्रथमे स्थितिमे हम जानल जे जँ हेतु बंगला अनुवादक पाठक वंगाली होएताह तँ ई अनिवार्य जे नियम-कानूनक जाँच हुनके मापदंडसँ कएल जाय। अर्थात् बंगला अनुवादक लयबद्धता अंग्रेजी आएम्बिक पेन्टा मिटरक अनुसार हो वा नहि, ई तुरन्त विचारणीय नहि। जँ कानकेँ तृप्त नहि करय तँ ई वैविध्य निरर्थक। बिम्बक अनुवाद मे सेहो हूबहू नकल कएला सँ घटिया रूपक स्वाद भेटत। ईप्सित भावनाक उद्रेक नहि करबाक कारण श्रोताक अनुमोदन सेहो प्राप्त नहि कय सकत।

एकरा अतिरिक्त वंगला जीवित भाषा थीक। तेँ यद्यपि एकर जन्म गाओमे भेलैक तथापि केवल संस्कृतसँ नहि प्रत्युत अरवी, फारसी, हिन्दी, उर्दू, पोर्चुगीज, फ्रेञ्च, अंग्रेजी तथा अन्यान्य भाषासँ निःसंकोच उधार लय, ई आइ बहुत दूर धरि शहरी भय गेल अछि। तेँ एकरा नवीन वैचारिकताक अनुकूल बनाएब सरल भय गेल अदि। अधिक आवेगपूर्ण वनएबाक दिशामे अनुवाद एकटा साधन थीक।··· प्रायः बहुत गोटय सहमत होएताह जे जेसुक जीवनी लिखैत काल बंगला बाइबुलक शैली ओहने अनावश्यक जेहन क्रिसमसक बदलामे जन्माष्टमीक प्रयोग। तखन एकटा सामान्य नियम स्वीकार्य जे केवल ओहिठाम जतय विम्वक परिवर्तनक संग अभिप्राय नहि वदलि जाइक, परिचित एवं सार्वभौम प्रतीक व्यवहृत होअय, अन्यत्र नहि।···

अर्थात् भावना ओ अभिव्यक्तिक विसंगति एतहु असफलताक प्रमाण थीक। ऐन्द्रिय वस्तुकेँ केयो कवि जे स्थान अपना कवितामे दैत छथि ओ अनूदित भेला पर तत्काल मूलैक वस्तु रहि जाइछ। यथार्थमे भीतरी ओ वाहरी दुनियांक बीच कार्य-कारण सम्बन्ध निकालव कुत्सित बुद्धिक काज थीक। जँ एक बेरि दूनूक सह अस्तित्वक युक्तियुक्तकतामे विश्वास हेड़ा दी तँ अधिक-सँ-अधिक स्वीकार्य होएत जे दूनूक दुनियां समानान्तर छैक। किन्तु जँ कनेक सोचल जाय तँ कोनो पक्का आधिभौतिक लोक निःसन्देह रूपेँ स्वीकार करताह जे साहित्यिक सृष्टि चयनात्मक थीक तथा अयत्नलब्ध अनुभव सेहो अस्वीकार्य। रुचिसँ अनुप्राणित भेला पर शब्द प्रायः दिमागमे तखन भावात्मक परिणतिक सृष्टि करैत अछि जखन काल-खंड वा स्थान खंड सँ उद्भूत दृष्टिकोण अवचेतन मे उतरि जाइछ। अनुवादमे आवेगक अप्रत्यक्ष प्रतिक्रिया प्राथमिक भावनाक स्थान लय लैत अछि। एकमात्र जे अन्तर पछाति तथा कविताक प्रथम रचनाकालक बीच रहि जाइछ ओ थीक एकर तत्त्व सभक सम्बन्धमे असंगतिक अवकाशक अभाव। एहन उत्तम काव्य दुर्लभ अछि जकर आशय युगान्तरमे वदलैक नहि अथवा कोनो विशेष पाठकक दृष्टिकोणक आयाम स्वच्छन्द विचरण नहि करैक। एही कारणसँ ई स्वाभाविक जे एक कविताक एकसँ अधिक अनुवाद होइक। एके अनुवादककेँ ओ सभ बेरि समान बुझबामे नहि अओतैक।"

ई छल सुधीन्द्रनाथक अनुवाद सम्बन्धी सौन्दर्यबोध। कवि जीवनक व्यावहारिक पक्षमे :

जखन हम विदेशी काव्यक अनुवाद आरंभ कएल तखन हमरा दिमागमे सौन्दर्यबोधक लेशमात्र नहि छल। तत्काल प्राप्त प्रशंसासँ काज करबामे प्रोत्साहन भेटल। जावत धरि मौलिक अज्ञान तिरोहित नहि भेल, तावत, यद्यपि ओकर संशोधनक प्रयोजन बुझना नहि गेल, रागात्मक सिद्धान्तसँ स्वतंत्र एहन त्रुटि-विच्युति, जेना छन्दक शिथिलता, शब्दक अनुचित प्रयोग, वाक्यक आभड़खूभड़, बिम्बक विसंगति आदिक सुधारकार्य चलैत रहल। यथार्थमे ई परिश्रम व्यर्थ नहि जाइछ। अनुवादमे व्यक्तित्वक जे कोनो स्थान होउक वान्हल-पीटल सीमा जँ एक दिशि स्वच्छन्दता पर अंकुश रखैत अछि तँ दोसर दिशि एकर अनुपालन आत्मसंयमक स्थापनापन्न बनि जाइछ। कम-सँ-कम प्रयोगक जतेक अवसर हमरा अनुवाद देलक अछि तकर आधा सेहो अपना लेखनसँ हमरा नहि प्राप्त भेल। तेँ प्रशंसासँ हमरा जे उत्साह भेटल तकर समाप्ति भेलैक काठिन्य सँ जुझवाक प्रबल लोभमे।

'प्रतिध्वनि' इन्दिरा तथा सुशीलकुमार दे केँ समर्पित भेल। एकर तीनटा भाग अछि : अंग्रेजी, जर्मन ओ फ्रेञ्च। अंग्रेजी भागमे सेक्सपेयरक 23 सोनेटक अनुवाद अछि, एकटा डी० एच० लौरेंसक, 2टा जौन मैसफिल्डक, 1टा कविता सी० फिल्डक जे जलालुद्दीन रूमीक एकटा कविताक रूपान्तर थीक; एकटा ह्यूमेनाइक ओ एकटा सेफ्रेद सैसूक। जर्मन विभागमे 16टा हेनक अनुवाद, 2टा गेटेक, तथा 1टा हैन्स केरोसक। फ्रेञ्चमे अछि 6टा मलामीक अनुवाद तथा एकटा बेलीरीक। एहि पर विवाद चलि सकैत अछि जे सेक्सपेयर, हेन तथा मलामी-वेलीरीक अनुवाद पूर्णरूपेँ प्रतिनिधि रचना थीक की नहि। किन्तु ओलोकनि भिन्न-भिन्न रुचिक कवि अवश्य थिकाह आओर एकटा अनुवादक जँ हुनका लोकनिक रुचिकेँ प्रामाणिकताक सँग अभिव्यक्त कय सकथि तँ किछु अवश्य भेल। जे होअओ, जँ दुद्धदेव बोसक बोदलियरक अनुवाद, विष्णु देक इलियटक अनुबाद उल्लेखनीय थीक तँ सुधीन्द्रनाथक मलामी वेलिरीक सेहो। यथार्थमे हिनक सेक्सपेयरक सेहो कम सफल नहि भेल अछि—बिम्बक एहन रूपान्तर तँ दुर्लभ अछि—अथवा हेनक स्वरक एहन विश्वसनीय प्रतिरोपण। किन्तु जे मूल्यवान् अछि ओ थीक मलामीक व्यंजना तथा वेलेरीक संगीत एवं तर्कक दुर्लभ सम्मिश्रणक उपयुक्त प्रणाली अपना भाषामे ताकि लेब। फ्रेञ्चक कतोक उक्तिक बहुत काल अंग्रेजीमे अनुवाद नहि कएल जाइछ। एकर कारण बुझबाक योग्य अछि। एतेक छोट वस्तुक अंग्रेजीमे अनुवाद श्रुति सुखद नहि होइछ एहि हेतु जे दुर्भाग्यवश 'तुक' बैसएबाक काल ई दरिद्र बुझना जाइछ। कहबाक आशय ई नहि जे दशाक्षरीय विधानमे बंगला टिकि जाएत, किन्तु एहिमे अंग्रेजीसँ

एकटा सुविधा छैक—बंगलामे तुक बैसाएब कोनो समस्या नहि। तथापि 31 दश पंक्तिक रचनामे जटिल छन्दोबद्धता कायम राखब ओ संगहि ओतेक दूर धरि त्रुटिविहीन दशाक्षरीय कठोरताक पालन करब दुर्लभ उपलब्धि थीक। जँ हम बंगलाक सर्वोत्तम अनुवादक संग्रह प्रस्तुत करी तँ 'आदिनाग' एकटा होएत। आ तहिना रहत 'फनर' क दिवा-स्वप्न। कतेक प्रकारेँ मलामीक ई सर्वश्रेष्ठ रचना थीक ओ सुधीन्द्रनाथक एकटा महत्त्वपूर्ण अनुवाद। अलग्जाड्रिनक रूपान्तर 18-अक्षरीय छन्दमे करब उचिते। एक पंक्तिसँ दोसर पंक्ति धरिक प्रवाह ततेक अबाध रहल अछि जे कखनहुँ एकस्वरताक भान नहि होइछ। स्वरक परिवर्तन, द्रुत आरोह-अवरोहक क्रम, मन्द्रक क्रमवद्धता त्रुटिविहीन अछि। संगीतात्मकता जे योग्यता 'देबूसेँ' अपना रचनामे प्रयुक्त कएने छथि तकरे निर्वाह भेल अछि। एकरा अतिरिक्त फ्रेञ्चमे बिम्ब जाहि प्रकारेँ साफ ओ सुघड़ अछि तहिना अछि एहू ठाम—पाठ ओहिना सोझ। अंग्रेजीक जतेक अनुवाद हम पढ़लहुँ अछि ताहिसँ बढ़ियां। सुधीन्द्रनाथ एहि कविता पर एकटा विशद टिप्पणी सेहो देलन्हि अछि जाहिमे मलामी तथा शंकराचार्यक बीच निकट साम्य देखओल गेल अछि: "ई सत्य जे एकेश्वरवादमे मलामीक आदर्श शंकर नहि छलाह, प्रत्युत हिगल छलाह। किन्तु जेना बहुत गोटय सोचैत छथि शंकर छद्म शून्यवादी छलाह तहिना हिगलक अनुसार अछि विशुद्ध आत्मा ओ अनुद्वेलित शून्य। तहिना मलामीक चेला लोकनि केँ बुझबामे अबैत छन्हि जे 'परात्परतरक सुवर्णमय आधार भ्रमसँ घेड़ल अछि।

प्रायः मलामी-भलारेक अनुवादकेँ हिनक सर्वोत्कृष्ट, कम-सँ-कम सभसँ महत्त्वक रचना मानल जएबाक कारण थीक हुनकालोकनिक संग हिनक रागात्मक साम्य। यद्यपि हेनक संग हिनक बहुत साम्य नहि छल, हिनका द्वारा हेनक अनुवाद वाग्वैदग्ध्यसँ परिपूर्ण ओ असाधारण रूपेँ रोचक अछि—निश्चित रूपेँ हेनक ई सर्वश्रेष्ठ बंगला अनुवादक थिकाह। सेक्सपेयरक सोनेटक सेहो ई सभ सँ नीक अनुवादक थिकाह वा नहि ई विवादपूर्ण भय सकैत अछि, किन्तु एहि मे कोनो सन्देह नहि जे ई सेक्सपेयरक स्वरकेँ इमानदारीक संग पुनरुत्पादित कएलन्हि अछि। ई सन्देह रहित जे सुधीन्द्रनाथ अपना समक्ष बड़ पैघ मापदंड रखने छलाह ओ यत्नसँ ओकर निर्वाह कएलन्हि। निःसन्देह सुधीन्द्रनाथ हमरा-लोकनिक सर्वश्रेष्ठ अनुवादक मे सँ एकटा थिकाह।

सात

'समावर्त' आएल 1953 मे, 'आर्केस्ट्रा'क द्वितीय संस्करण 1954 मे, 'प्रतिध्वनि' 1955 मे, 'समावर्त'क द्वितीय संस्करण 1955 मे तथा 1956 मे हिनक अन्तिम काव्यपुस्तक 'दशमी' (10टा कविता)। एहि बीच बंगला साहित्यिक दुनियांक संग हिनक सम्बन्ध पुनः स्थापित भय गेल जकर श्रेय छन्हि हिनक युवक प्रशंसक लोकनिकेँ। संगहि हिनक समवयसी बुद्धदेव बोस ओ विष्णु दे केँ। एखन धरि आबि बुद्धदेव बोस हिनक साहित्यिक बन्धु भय चुकल छलाह। ओ सुधीन्द्रनाथक तेहन प्रशंसक भय गेल छलाह जे जखन ओ यादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता मे तुलनात्मक साहित्यिक विभाग खोललन्हि तखन हिनका अंशकालीन अध्यापक पद पर आमंत्रित कएल। ई एकटा विचित्र बात छल, कारण जे सुधीन्द्रनाथ एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण नहि छलाह जे उपाधि भारतमे कालेजमे अध्यापकक हेतु न्यूनतम योग्यता थीक। किन्तु एहि पद पर योगदान करबाक पूर्व ई 'लोकमत संस्थानक' कलकत्ता शाखाक निदेशक रहि चुकल छलाह। 1955-56 मे ई तेसर बेरि भारतसँ बाहर यात्रा कएल। एहि बेरि सेहो अपन स्त्री राजेश्वरीक संग। एहि क्रममे ई गेलाह फ्रांसीय उत्तर अफ्रीका, ब्रिटेन, हौलैंड, फ्रांस, स्पेन, इटली, जूगोस्लाविया, ग्रीस तथा इजिप्त। प्रायः तीन वर्ष पूर्व कएल गेल हिनक द्वितीय यात्रा जेकां एहू यात्रासँ हिनका प्रचुर लाभ अवश्य भेल होएत, कारण जे अन्य बातक अतिरिक्त, जेना ऊपर स्मारित कएने छी, फिरती रास्तामे ई दूटा कविता लिखलन्हि। ई भेल 1956 क आरंभमे। 1954 मे ई दूटा कविता लिखि चुकल छलाह तथा 1955 मे एकटा तथा फरवरी-मार्च 1956 मे अन्य पाँच कविता। एहि कविता सभ केँ ई 'पेपर-बैक' मे प्रकाशित कएलन्हि एहि विज्ञापनक संग—"ई कविता सभ सुधीन्द्रनाथक अग्रिम पुस्तकमे संगृहीत होएत। फलतः 'दशमी'क पुनर्मुद्रण नहि होएत।"

'दशमी' समर्पित भेल अवनिभूषण चटर्जीक नामेँ। कविता सभ छोट अछि तथा भावोत्तेजक—कम-सँ-कम थोड़ेक। की मलामीक आदर्शक पूर्तिक दिशामे ई यत्नशील छलाह जे बुद्धिपूर्वक शब्दक संयोजन तेना होअय जे तात्पर्य व्यक्त

होएबाक अपेक्षा ध्वनित होअय ? प्रथम कविता 'प्रतीक्षा' जे सोझ-सपाट अछि तथा जकर स्वरूप हिनक पूर्वक कविताकेँ स्मारित करैत अछि एक प्रकारेँ विषयवस्तुक उद्‌घोष करैत अछि (प्रसंगत: एकर पहिल शब्द 'पाति, खसबाक़ अर्थमे स्वतंत्र रूपेँ विद्यमान, 'सद्य: अथवा अन्त:' केर संग जोड़ल नहि, बंगलाक हेतु विशिष्ट प्रयोग थीक)।

ककर पएर पड़ैत छैक खसैत पात पर?
ओ, हम जनैत छी, कहियो नहि फिरत:
तखन ई उठल तरहत्थी पलाशमे किएक ?
जंगलसँ बाहर अन्तर्धरि प्रसारित कोकनल भूखंड;
कोनो इंगित नहि फसिल समेटबाक स्वर्ग मे,
जे कहबाक छल बहुत पहिनहि कहि देल गेल।
परिपूर्ण महाशून्यक नि:शब्दतासँ
एकाकीपन आब अछि अबाधित;
भूत ओ भविष्य वर्तमानमे निमज्जित;
शून्यमे नेतिवाद स्वत: स्पष्ट,
सोऽहं केर भय आत्मकल्पना मात्र,
हताशक विश्रामभूमि, संकल्प निरर्थक नियंत्रण···

कोनो काज नहि प्रतीक्षा करबाक ककरो लेल:
की निश्चित विनाश नीक नहि अपना सत्यक हेतु ?
विदेशी दुनियांमे मनुष्य सतत एकाकी रहैछ।
कल्पनामे आरंभ, शंकामे अन्त,
जीवन अकच्छ अछि विश्वास सभसँ :
की हम अपनाकेँ तैयो नहि चीन्हब ?

हिनक अनुप्रास विधान जकर अनुवाद नहि भय सर्कछ तकरा जँ छोड़ियो दी, तैयो वर्तमान कविताक लयात्मकता असाधारण अछि—एक दू ठाम तँ पूर्णत: नवीन। द्वितीय कविता 'नौकाडुबि' विषयवस्तुकेँ बिम्बमे विकसित करैछ :

शरदक साम्राज्य प्रसारित धनखेतीमे
क्षितिज लग उज्जर भेड़ीक हाँज
चरि रहल अछि निश्चिन्त, चरवाह कदाचिते फुदकैत हो
सोहनगर वन-झांखुड़मे।

खाली बखारीमे अन्त करैत, उठैत हाटसँ आरंभ करैत
ई के थीक खाली पएर, एकाकी ?
स्वर्णिम स्वप्न लेने दूनू आंखिमे, सौदाक दोष ओ दाम

एकाएक भय जाइछ हल्लुक।
किन्तु दिन फुदकिकेँ आगा बढ़ैछ; तीव्र गतिएँ म्लान होइत
खेतक हरियरी शून्यमे विलीन;
उल्लसित वातावरणमे कालिमाक नुकाएल प्रवाह बहराइछ
ओ पृथ्वीकेँ डुबा दैछ।
यायावर तखन बनि गेल नाविक, आब एकमात्र संबल
एकटा डुबैत छोट नाओ :
ओकर समस्त दुनियां उबडुब करैत बाढ़िमे
सभ वस्तु अस्तव्यस्त।
यथार्थमे अन्तिम श्वासावरोधक दवाइ नहि
शून्यक सीमा अलंघ्य;
दुर्घटनाक प्रपंचमे पड़ल शुभग्रह-नक्षत्र
ओ डुबल चुम्बक
सभ एकाकार।
तथापि जखन ओ नाविक अन्धकूपमे खसत
तखन स्मरणक एक झलक आवि
ओकरा अपन बोध करओतैक, तखन पंचभूतमे मिलि
ओहो भय जाएत स्वयं प्रकृति।

ई अस्तित्ववादसँ बहुत फराक नहि बुझना जाइछ, कारण जे अवश्यंभावी विनाशक सोझां आत्मान्वेषणक प्रयास प्रधान मानवीय गुण थीक। किन्तु विनाश ओ मूल्यक सम्पूर्ण अराजकता पर बल दय, बारम्बार बल दय, सुधीन्द्रनाथ बहुत समीप आवि जाइत छथि ओकर जकरा ई स्वयं शून्यवाद कहैत छथि। एकटा शब्द जे बारम्बार हिनक पछातिक कवितामे अबैत अछि ओ थीक 'नास्ति' फ्रेञ्च (nenat)। एहिठाम 'त्राता' क सेहो संकेत अछि, पैगम्बरक, कृष्णावतारक, जेना बुद्धदेव वोस उपर्युक्त कविताक व्याख्या करैत स्मारित कएने छथि—जंगल मे "फुदकैत चरवाह"। किन्तु ओ कहियो अओताह नहि, संसार 'टुगरे' रहि जाएत, पिशाचे टा उन्नतिशील होएत। 'उद्घोषक' सभ चिह्न मृगमरीचिका भेल रहि जाएत :

हठात् फुसफुसाहटि शून्यमे
कोनो आरंभ कतहु।
की भविष्यद्वाणी फेरि पूरा होएत,
नहि भोतिआएत रास्ता एहि बेरि ?···
तथापि मृगमरीचिका भोतिआओत आइ :
हम बुद्धिक बदलेन करैत छी भ्रान्तिसँ;

लेभड़ा दैत छी अविलोपनीय पर रोशनाइकेँ
इजिप्टक बीआ मरुद्यानकेँ खाय लैछ।
अप्रापणीय संभावनाक विकृति असंभवतामे :
तखन छिन्न पांखिक फड़फड़ाहटि किएक ? [असंगति]

ई थीक नवम कवितामे सँ। किन्तु सातम 'उपस्थापन' मे ई अपन विचारकेँ स्पष्ट करैत छथि। एकर शैली 'ययाति' क आभ्यन्तरीण लयबद्धताक स्मरण करा दैत अछि :

केवल वर्तमान क्षण सत्य थीक हमरा लेल, अर्थात् हमारा विचारेँ
हमर इन्द्रियग्राह्य वस्तु भय जाइत अछि
जकरा पर ओकर प्रभाव छैक पुरान, तेँ ओ दुनियां सेहो। तथापि
समय नहि दौड़ैत अछि भूतसँ भविष्य धरि : तथा यद्यपि एकर साक्ष्य
विद्यमान अछि पेटमे, नाड़ीमे, ओहि गुप्त प्रदेशमे
अति संवेदनशील जेकां वुभुक्षितो लोकक ओतय प्रवेश नहि छैक।
किन्तु विज्ञान कहैत अछि जे कालक लक्ष्य स्पष्ट छैक
एकटा निश्चित व्यापक उत्क्रम मापमे; तथा के एहि दुनियांमे
अन्धविश्वासी भय स्वीकार नहि करत जे
आजुक पापक स्पष्ट चिह्न अंकित ओकरा मुंह पर
राति अछि फेनाएल अन्धकार मूर्तिक चक्रवातसँ, भविष्यद्वाणी थीक
केवल पश्चात्ताप असफलताक हेतु, बाप-पुरखाक घर
भूतक डेरा भेल ? तथापि बीतल समय फिरि नहि अबैछ कहियो,
मनुष्यक ज्ञान सीमित ओकर पदचिह्न धरि, पैधसँ पैध कल्पना
पलायनशील अथवा अनुमान बुद्धिवादसँ लादल।
तखन किएक बढ़बाक प्रयास सीरा मुंहेँ, विशेषत: यात्राक अन्तमे
जखन व्यक्तिगत विश्वासेटा प्रतीक्षा करैछ ? निश्चित जे
एहिमात्र क्षणक उल्लास प्रमाणिक अछि, किन्तु दूर
अपनहि आबि जाइछ समीप वर्तमानमे,
इतिहास बनि जाइछ
जीवन्त बिम्ब जेकां, स्वर्ग कूदि जाइछ
वेंगक इनारमे,
पहिलुक जीवनक दाय फिरि अबैछ संगतिक पुनरावृत्तिमे।
तथा किएक वियोगमे, मिलनमे, बदलैत पोशाकमे
सिखओ आत्मविश्वासक अभिमानमे दोलायमान लोकक
सन्तान-- पृथिवी अपन क्रान्तिमे लागल अछि
असहाय पएरक नीचां, ऊपर लटकल स्वर्ग,

पाछांमे भविष्यद्वाणी करैत शून्य एकटा भूमिका लय अबैछ, सोझांमे
हेलैत अछि गरिमा स्वच्छ जादूक शीशामे—एक पंक्तिमे
ओ सभ लेसैत अछि सांध्यदीप निर्गमनद्वारमे, जाहिसँ
पथिक विसरय नहि फिरबाक रास्ता सहारामे।

एकटा बिच्छिन्न होइत मोटर गाड़ी थीक ई वर्तमान—दुनियां भरल अराजकतासँ। ई दृष्टिकोण जे यथार्थ क्षणमूलक थीक पुरना एहि मतक विकास थीक जे सत्य एवं असत्य, नीक ओ अधलाह पारस्परिक अछि—अर्थात् ई मत जे जँ एकटा बढ़त तँ दोसरो बढ़त तथा ई जे ऐतिहासिक प्रक्रियाक विराम नहि छैक। जे 'संवर्त' मे देखबामे आएल ओ छल एक प्रकारक व्यंग्योक्ति, किन्तु बीतल व्यंग्योक्ति। केवल इएह नहि जे प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर थीक, धारणा धरि जमा नहि होइछ, कारण जे भूत ओ भविष्य केवल छायाभास थीक। एकमात्र वस्तु जकर अस्तित्व छैक ओ थीक वर्तमान क्षण। ई सोचब गलती थीक जे काल एक बिन्दुसँ दोसर बिन्दु धरि जाइत अछि। सुधीन्द्रनाथ क्रमविकासमे कहियो विश्वास नहि करैत छलाह। यथार्थमे ई ओ स्थल थीक जतय याथार्थ्यक प्रति हिनक विशुद्ध बुद्धिवादी दृष्टिकोण रहितहुँ (अथवा ओही कारणवश) ई अपन मार्क्सवादी मित्र लोकनि तथा पछाति एम० एन० रायक संग असहमत रहि गेलाह—किन्तु अपन पहिलुक कवितामे भूत एवं भविष्यकेँ जोड़ि देने छलाह ई देखबाक हेतु जे भूत वर्तमानसँ अधलाह नहि छल अथवा वर्तमान भूतसँ नीक नहि अछि। कम-सँ-कम ई एकटा कारणता अवश्य देखलन्हि। किन्तु अपन अन्तिम कविता मे ई ओकरा सभक सम्पूर्ण परित्याग कय देलन्हि। तेँजँ क्रमविकास नहि, तँ कार्य-कारणता सेहो नहि। तखन बँचते की ? शून्य।

हिनक 'क्षण' ओ 'शून्य' मे बौद्धमतक लेश अछि। सुधीन्द्रनाथ स्वयं हमरा लोकनिकेँ एकर स्मरण करओने छथि। ई ओ स्थल नहि थीक जतय मूल स्रोतकेँ खोधल जाय। प्रायः हिनक पिता बौद्ध दर्शन पर लिखने होएताह—ई अध्ययनक स्वतंत्र विषय रहल हो ('परिचय'क जवानाक एकटा मित्र प्रबोध बागची बौद्धदर्शनमे प्रवीण छलाह)। किन्तु महत्त्वपूर्ण बात ई थीक जे ई एतय धरि कोना पहुँचलाह—कोन अनुभवक आधार पर, दोसर शब्दमे कोन वैचारिकताक माध्यम सँ। कदाचित् घुमाफिराकेँ एकटा उत्तर हिनक एकटा अन्तिम गद्य रचना मे प्राप्त भय सकय हिनक द्वितीय गद्य पुस्तकक भूमिका मे :

एकटा पैघ गणितज्ञ एक बेरि हमरा कहलन्हि जे हमरा जँ गणित मे उपयुक्त प्रशिक्षण प्राप्त भेल रहैत तँ हम एहिमे किछु कृतित्व देखा सकितहुँ। हमरहु सन अयथार्थ विनम्र लोक तुरन्त स्वीकार करत जे ई अभ्युक्ति कोनो शकुन विचारक आधार पर नहि कएल गेल, प्रत्युत मित्रतामूलक सत्यनिष्ठाक आधार पर। किन्तु बाल्यकालसँ हम युक्तिवादक भक्त रहलहुँ अछि। स्थिति एहन रहनहुँ जँ हेतु

लोक हमरा विश्वस्त कएलन्हि अछि जे भगवानकेँ लोकक प्रति अपार प्रेम छन्हि, तेँ हुनका युक्तिवाद सिखबाक हेतु अरस्तूक सहायताक प्रयोजन नहि छलन्हि। तहिना हमहुँ एहि मतक समर्थक नहि छी जे कवि ओ तार्किक स्वभावतः एकठाम बैसि भोजन नहि कय सकैत छथि···

दुर्भाग्यवश हम ने कवि थिकहुँ ने ऋषि, प्रत्युत थिकहुँ मात्र कला प्रेमीक पद-चिह्न पर चलनिहार। तेँ हमरा लेखनमे संबद्धताक चिह्न अद्यापि विरल अछि। एकरा अतिरिक्त एकसँ अधिक विचारकक मतेँ हम स्वधर्मत्यागी थिकहुँ। ई आक्षेप कतबो अविश्वसनीय हो, हमरा हेतु ई अस्वीकार करब कठिन जे स्थान ओ कालक संग संगति रखबामे असमर्थताक कारण हम एकात्मकतामे जाय चिर शरण लेल अछि। यद्यपि तत्काल एकरा लय विवादक प्रयोजन नहि छैक, हमर आत्मानुभूति एकेश्वरवादसँ भिन्न अछि। जेँ ओकरा कारण वह्नि दृष्टि धरि प्रभूत आत्मप्रतिक्रियाकेँ पहिनहि स्वीकार कय लैछ, तेँ पूर्वापर सामंजस्य मात्र मानसिक व्याधिक मारक नहि थीक प्रत्युत जीवित रहबाक एकमात्र उपाय सेहो। अर्थात् आत्मानूभूत विश्वव्यवस्थामे हमरा लोकनि मात्र उपाय नहि थिकहुँ। हमरा लोकनि थिकहुँ भयानकता जनक, मिथ्याक पृष्टपोषक ओ कदर्यता क स्रष्टा सेहो। एक बेरि एकरा स्वीकार कय लेने मृत्युक ओतबे मूल्य जतेक जीवनक। अनात्मक परस्पर सम्बन्धोक। एही प्रकारक कारणसँ पश्चिमी दर्शनक प्रगति सेहो आइ दुविधाक सम्मुखीन अछि। डेकार्टीकेँ मूल धरि लय जाय आजुक अस्तित्ववादक वयस कम कय देलासँ यद्यपि हमर इतिहासबोधकेँ धक्का लगैत अछि, तथापि साल्र जेकां हमहुँ एक समय मे सोचैत छलहुं जे मनुष्य-क बाह्य समस्याक समाधान संभव छैक मार्क्सक तर्कवादक अनुसरणसँ। किन्तु तखनहुँ वामपंथी लोकनिक उद्देश्य एवं साधनक बीचक विसंगति हमरा कष्ट दैत छल। हमरा भान होइत छल जे ई संघर्ष कहियो समाप्त नहि होएतैक।

कम-सँ-कम हम शीघ्रे अनुभव कएल जे एक बेरि जँ हम वर्गसंघर्षकेँ स्वीकार कय ली तं श्रमशील वर्गक दुनियांमे प्रवेशक हेतु एकमात्र रास्ता रहि जाएत भावुकता। तेँ हम सतत तकबाक चेष्टा कएल जे की मार्क्सवादक अन्तर्गत उन्नत लोकक नीचाँ खसब ओहिना आवश्यंभावी जेना अनुन्नत लोकक उन्नत होएब। हमर चिन्ता हमर स्वार्थपरताक वाणी नहि थीक। ई हालहिमे लिसेंको, कदाएव आदिक अस्थिर प्रामाणिकतासँ साबित भय चुकल अछि। जखन कखनहुँ हमर विश्वास मेटएबा पर भेल, बुडापेस्टक गलीमे घुमलासँ एकर भूत आश्वस्त कएलक जे दस-बीस मिलियन रूसीक असामयिक मृत्यु तथा ओहि देशक सामान्य उन्नति निःसन्देह युगपत् भेल। तथापि जेँ हेतु एतय कार्यकारणक सम्बन्ध नहि तेँ ख्रुश्चेभक राज्य निम्न वर्गक शोषणसँ ओहिना पोषित अछि जेना पहिलुक अंग्रेजी साम्राज्य। किन्तु एहि घटना ओ विपत्तिकेँ नीक जेकां

जनितहुँ, कहल जाइत अछि जे सात्र तथापि कहैत छथि जे असल लेखकक आत्मा थीक अग्रगति। अतएव ओ बारंम्बार ई सोचबाक हेतु वाध्य छथि जे श्रमशील वर्ग अग्रगामी थीक, साम्यवादी पार्टी जेना श्रमशील वर्गक प्रतिनिधि संस्था हो, ऐतिहासिक उद्देश्यक जेना पूर्ति भेल हो साम्यवादक पवित्र भूमि सोवियट भूमि तथा ओकर पछुलगुआ गणतंत्रमे। जँ एहि प्रकारक विश्वास 'ल-मे-सले'क ग्रन्थकर्ताक अनुकूल अछि तँ ई स्वीकार करैत हम लज्जित नहि छी जे पहिल परिचयसँ हम नहि बूझि सकलहुँ जे मार्क्सक सिद्धान्त संश्लेषणात्मक नहि अछि, प्रत्युत विश्लेषणात्मक—केवल प्रयोगटामे नहि अपितु योजनामे सेहो।

तर्कवादी संश्लेषण केवल नामक लेल संगति थीक। यथार्थ मे एकर कारण ई अछि जे एहि घातक द्वन्द्वयुद्धमे दूनू पक्षक विनाश निश्चित छैक तथा प्रत्येक स्तर पर स्वयंभू निरंकुश शासक क बीच सांघातिक युद्ध होएव निश्चित। अर्थात् मार्क्सक समान आशावादी पैगम्बरक हेतु स्वभावतः नीक तथा अधलाहक सार्वकालिक तर्क स्वीकार करबाक योग्य नहि अछि। जे हेतु पैगम्बरक जातिक लोक अन्तिम उत्तराधिकारी रूपेँ विधाताक अति प्रिय छथि, तेँ अन्यान्यो अवश्य छथि ई हृदयंगम कय जे एहि मर्त्यलोकमे पाप एवं दंडक द्वन्द्वकेँ केयो रोकि नहि सकैछ जे एखन धरि वातावरणक हेतु प्रतिकूल रहल अछि। एकरा विपरीत मार्क्सवादी कार्यकर्त्ता अपन प्रयोगक आधार पर ऐतिहासिक विकासक अग्रदूत रहलाह अछि। जे हेतु अग्रगतिक पथकेँ छोट बनएबाक हेतु कृतसंकल्प छथि लक्ष्यकेँ छोड़ि आओर कथूमे हुनका लोकनिक रुचि नहि। हुनका लोकनिक लग ततबा समय नहि जे कुरुक्षेत्रक अन्तमे अर्जुन जेकां शोको धरि कय सकथि। किन्तु जँ एकान्त आत्मकेन्द्रित नहि रहितथि तँ बुझितथि जे हम अन्यायक शिकार भेल छी। जँ ओ चाहथि जे आत्मग्लानिक अन्त आत्मघातमे नहि होअय तँ ओ एहन चेष्टा करथि जे हुनक क्रिया मे कम-सँ-कम अत्यधिक कदर्यता नहि आबय।

प्रायः इएह कारण थीक जे शून्यक समक्षो, आत्मान्वेषण चलैत रहैछ। ई रोचक जे सुधीन्द्रनाथ 'नीड' ओ 'मृग'क बिम्बक प्रयोग कएने छथि।

> ···हमरा ओतेक समय नहि अछि जे नव कुरसी जोड़ी। आजुक बाजारमे निर्माण-सामग्री सेहो दुर्लभ छैक। इएह कारण थीक जे वर्तमान घरक मरम्मति धरि अपूर्ण रहि गेल। अर्थात् जँ हम अन्धविश्वासकेँ ई विचारि छोड़ि दी जे असल विश्बास समाजमे अनुपलब्ध छैक तँ शून्यताक आगमनकेँ केयो रोकि नहि सकत। एहना स्थितिमे शून्यवादी दोषी नहि थिकाह। प्रत्युत हुनक साहस अनुकरणीय थीक, जहिना साधुक हेतु तहिना बुद्धिमान लोकक हेतु। अतएव अन्धविश्वाससँ मुक्ति पाएब सत्याचरणक चरम लक्ष्य थीक। पैघ आशासँ विहीन स्थितिमे हम कोनो दुर्घटनाक संभावना नहि देखैत छी। प्रत्युत एकरा हेतु प्रयास करब उचित बुझैत छी। अस्वी-

कारात्मक आलोचनाक स्थितिमे सहानुभूतिक हेतु अवसर नहि रहैत छैक। जँ हेतु अभ्यास दूददर्शिताक शत्रु थीक, निःसन्देह युक्तिपूर्ण विचार-विमर्शमे सेहो हमरा विश्वास नहि अछि। तथापि ई स्वीकार करबामे हमरा दुविधा नहि अछि जे यद्यपि दोष देबाक हेतु हम उद्यत रहैत छी, किन्तु गलती सुधार-बामे अपटु। सौभाग्यसँ हम जनैत छी जे हमर खोंता छोट एवं उजड़ल-पुजड़ल अछि। अतएव अनन्त ओ सनातन आकाश हमर एकमात्र आशास्थल। कारण, कालपुरुषो ओतय लटकल छथि। मृत्युक भृत्ये ग्रीक लोकनिक मृग थीक जे जंगली जानवर सभकेँ खीचि लेव असंभव जानि परस्पर विरोधी दर्शन ओ काव्यक निर्णायक बनि गेल अछि।

भीमकाय शिकारी दैवी शापसँ फेरि अन्ध एवं अशरीरी भय गेल अछि। ओकरा शिकार खेलएबासँ विमुख देखि हम बिना लज्जित भेने लक्ष्य भेदनमे अपन असमर्थता स्वीकार कएल अछि···कारणजे एहि विस्तृत विश्वमे घृणाक कानूनक अछैत हमर कथा कोन, हमर स्रष्टाधरि विनाशक दिशि द्रुत धावमान छथि। यद्यपि हमरा बादो हुनक छाया बहुत गोटाकेँ स्पष्ट देखबामे अओतैक, तथापि अन्यान्य नक्षत्रक प्रभाव सर्वत्र स्पष्ट अछि। किन्तु एकमात्र आशा इएह जे ब्रह्मांडक तुलनामे मनुष्य जीवन ततेक छोट अछि जे बौना सभक सनकीपनासँ विश्वक ने कोनो हानि होएतैक, ने कोनो लाभ। यद्यपि एहि अमर बटवृक्षमे हमरा लोकनिक खोंता अति नगण्य थीक, ओहि वृक्षक पक्षिपोषक फलसँ सीमाहीन स्वर्ग बंधनमुक्त भय जाइछ।···

इएह ओ नीड़ थीक जकर चर्चा करैत हम हुनका पबैत छी हुनक अन्तिम रचना 'दशमी'क विशेषतः अन्तिम कवितामे। एहि कविताकेँ ओ निशान्त नीड़ कहने छथि, उजड़ल खोंता। सुधीन्द्रनाथक अपन अनुवादक अनुसार 'घुमक्कड़'। ई प्रायः हिनक सभसँ सोझ कविता बुझबामे आओत यद्यपि ई थीक हिनक सभसँ गूढ़ कवितामेसँ एकटा मलामिक आदर्शक समीप रहबाक कारण।

वृक्ष, रक्ताभ ओ पीताभक भयानकता, हिलबैत अछि मुकुट:
सूगा मड़राइत अछि, खोंतासँ हटिकेँ
वर्ष अधिक फूलि गेल, नीच सूर्य डूबि गेलाह
ओ हड्डी पुरान रहितहुँ प्रभावयुक्त।
केवल वायु चिकरैत विलापक स्वरमे—
एकटा नास्तिक गबैत रहस्यपूर्ण प्रार्थना
जखन काल विलुप्त पूजाक बीच तांडव नृत्य करैत अछि
दोहरबैत अपन सनातन हास्यकेँ;
घरमुहां गायकेर धूरासँ मुक्त आकाश
जातिवाचक संज्ञासँ ऊपर उठि जाइछ—

वृक्षक महत्त्वाकांक्षा तथा सूगाक खोँता भोतिआय गेल।
तखन हठात् अतल गर्तसँ ऊपर दौड़ि
अन्धकारक स्रष्टा औनाय देल,
वायु मारात्मकताक संग वढ़ल, तथा निद्राक आयाम
सुनिर्दिष्ट साम्राज्य विघटित कएलक।
नहि, कथमपि नहि, राति स्पंदनहीन, नहि : एकर विषमज्वर
प्रकट होइछ उज्ज्वल घाममे, यंत्रसँ बल पहुँचवैत
दूरकेँ समीप लय अबैछ; सूक्ष्म कवच जेकाँ
समय आन्दोलित वृक्षक
एकटा नाओ तैयार कय लैछ सम्पूर्ण आत्मविश्वात्तक हेतु। किन्तु
विरड़ोमे पड़ल सूगा
भोतियाय जाइछ जावत धरि 'शून्य' विजय दर्पमे औनाय नहि दैत छैक।

मूलक अन्तिम दू पंक्तिमे जे स्वीकृति मूलक प्रश्न अछि ओ अनुभव केँ तीव्र वना दैछ। वाक्यार्थक दृष्टिएँ : "तखन किएक एकाकी सूगा भोतिआएले रहि जाइछ / ककरा ई असुहृद् अन्धकार लोभवैछ"।

ई लिखल गेल 31 मार्च 1956केँ। जुलाइ 1956मे ई यादवपुर विश्व-विद्यालयमे नव संघटित तुलनात्मक साहित्य विभागमे योगदान कएलन्हि अंशकालीन परिदर्शक अध्यापक रूपमे। हिनका भार छल मुख्यत: 18म शताब्दीक यूरोपीय साहित्यक तथा उत्तरकालीन 19म शताब्दी तथा आरंभिक 20म शताब्दीक पश्चिमी कविताक। मधुसूदनक सेहो। ई सप्ताहमे दू दिन पढ़वैत छलाह। जेना हम कहि चुकल छी एकर श्रेय छलन्हि बुद्धदेव बोसकेँ। एहिसँ दूनू गोटय उपकृत भेलाह। कारण, सुधीन्द्रनाथक हेतु ई प्राय: कायाकल्प छल। पढ़बाक लेल हिनका अपन विचारकेँ केवल सजवहि नहि पड़लन्हि प्रत्युत अपन प्रिय क्षेत्रक फेरिकेँ अध्ययनो करय पड़लन्हि। पढ़एवाक अर्थ इहो भेलैक—तत्काले विद्यार्थीक प्रति-क्रिया जाना। जवहिसँ प्रभूत मात्रामे हिनका उत्साह प्राप्त भेल। बुद्धदेव बोसक लेल ई छल एकटा यथार्थ विज्ञ लोक ओ अपना भाषाक प्रमुख कविकेँ अपना विभागमे लय आनव। संगहि पूर्वक घनिष्ठताकेँ सुदृढ़ बनाएव। साधारण व्यवहारक दृष्टिएँ एहि नियुक्तिमे किछु अनियमितता रहनहुँ, विश्वविद्यालयक हेतु ई नियुक्ति सौभाग्यपूर्ण भेल। विद्यार्थी लोकनिक हेतु ई सुयोग अभूतपूर्व छल। पहिल बात तँ ई जे तुलनात्मक साहित्य सन वस्तु हुनका पहिने प्राप्त नहि छलन्हि। ताहूमे सुधीन्द्रनाथ दत्तक संग बुद्धदेव बोस द्वारा पढ़ाओल जाएब! ओ लोकनि एक दिशि सुनलन्हि यूरोपीय तर्कसम्मत परंपराक इतिहास, दोसर दिशि मलामि-सँ आरंभ कय आधुनिक कविताक व्याख्या। जनिका लोकनिकेँ हिनक अध्यापन स्मरण छन्हि हुनका लोकनिक कथन जे हिनक व्याख्यान केवल सुस्पष्ट नहि होइत

छल, प्रत्युत व्यापक सेहो, कारण जे हिनक साहित्य चर्चा जहिना दर्शन एवं इतिहाससँ संबद्ध रहैत छल तहिना सौन्दर्यतत्वसँ सेहो। एक बेरि ई 'कविताक प्रयोजन' पर गोष्ठीमे संक्षिप्त भाषणमे देलन्हि। ताहू सँ ई स्पष्ट होइत अछि।

सुधीन्द्रनाथ 56-57 मे एक वर्ष अध्यापन कएलन्हि। तकरा बाद ई चारिम बेरि बाहर चल गेलाह। किन्तु 57 मे ई अपन प्रथम निबन्ध-पुस्तक 'स्वगत'क द्वितीय संस्करण प्रकाशित कएल। जेना ऊपर कहलहुँ अछि अपन द्वितीय पुस्तक। ई दूनू एक संग प्रकाशित भेल। हमरा लोकनि 'स्वगत'क प्रथम संस्करण ओ द्वितीय संस्करणक बीच अन्तरकेँ देखि चुकल छी। एहिसँ बंगला साहित्य सम्बन्धी निबन्ध निकालि लेल गेल ओ जोड़ि देल गेल पश्चिमी साहित्य सम्बन्धी एकटा निवन्ध। बादमे आशयकेँ स्पष्ट करबाक हेतु एकटा उपसंहार जोड़ि देल गेल। एकर अन्तिम अंश छल :

आइ बंगाल केवल महान् साहित्यिक स्तरे टा नहि गमओलक अछि प्रत्युत एहू मे सन्देह जे एहन स्तर एकरा कहियो प्राप्त छलैक। एहन अभागल देशमे रहितहुँ जँ केयो कलात्मक वैशिष्टयमे अभिरुचि राखय तँ ओकरा समुद्रपार जाय पड़तैक। अतएव वर्तमान पुस्तकमे विदेशी लेखकक प्रवेश निरर्थक नहि अछि। आधुनिककेँ एतय अपेक्षया अधिक महत्त्व देल गेल अछि, कारण जे प्राचीनक प्रति हमरा लोकनिक दृष्टिकोण अधिकांशतः रूढ़िगत अछि। आशय ई जे जँ हेतु एकक बाद दोसर पृष्ठमे एकर समीक्षा नहि भेलैक तेँ मौलिक साहित्यक सिद्धान्त आधुनिक सम्बन्धमे लागू होइत अछि। ई सत्य जे ओहि परीक्षामे कतोक दिग्गज उत्तीर्ण नहि होएताह। किन्तु हिनका लोकनिक सम्बन्धमे महत्त्वपूर्ण बात ई थीक जे समान मापदंडक प्रयोग सर्वत्र होइछ। दुर्भाग्य तँ ई जे हुनकहु लोकनिक उदाहरण हमरा नहि सिखा सकल जे सौन्दर्यक सर्जन कोना कएल जाय अथवा 'तत्त्वमसि'क सिद्धान्तक खंडन कोना हो। तथापि जँ हेतु हम लिखबाक हेतु प्रस्तुत छी, अभ्यासक स्थान प्रकृतिक बाद छैक। किन्तु जेना हमर असमर्थता अस्तित्वजन्य अछि, तहिना ओकरा सभक आदर्शो निर्वैयक्तिक छैक। जेना कविताक उद्देश्यक हेतु तहिना सामाजिक कार्यक हेतु एकटा पक्षपातरहित आदर्शक प्रयोजन छैक। एहि आदर्शक खोजमे हमर अप्रत्यावर्ती यात्रा प्रायः सम्पूर्ण व्यर्थ नहि होएत।

तथापि महाप्रस्थाने टा एहन वस्तु थीक जकरा बाद प्रत्यावर्तन नहि होइछ। अन्यत्र जँ परोपकारक इच्छा प्रत्यावर्तनकारीकेँ असुविधामे नहि दय दैक तँ हमरालोकनि ओकरा सनकी कहबैक। यद्यपि ई लज्जाक बात जे ओहन प्रयत्न कएलहु पर हम टिकाउ काव्यक निर्माण नहि कय सकैत छी, यथार्थ पश्चात्ताप हमरा एहि हेतु अछि जे हमर दैनिक जीवनमे अधिगृहीत पैघत्वक सिद्धान्त प्रभाव-हीन भय रहि गेल। एकर अर्थ ई नहि जे बूढ़-पुरान हिन्दू जेकां हमहुँ अपन जीवन मरणोपरान्तक जीवनक हेतु लगा देब। प्रत्युत तकरा विपरीत। जतेक अधिक

हम अपनाकेँ जनैत छी ततेक अनुभव करैत छी जे दुनियां हमर विपरीत नहि अछि—बाहरी विश्व अछि सोहाओन ओ उदार। तथापि एहिमे हमरा सन्देह नहि अछि जे एकटा नीक कवि एकटा नीक लोकसँ श्रेष्ठ थीक। एकटा नीक लोक श्रेष्ठतम साहित्यक सृष्टि कय सकय ई संभव। तथापि शरीर, मन ओ भाषाक शुद्धता बिना महान् कविताक रचना करब संभव नहि। आशय ई जे जेना साधुक स्वभाव थीक इच्छा एवं अनिच्छाक बीच सामंजस्य लाएब तहिना कविक हेतु अनिवार्य अछि क्रीड़ा, कार्य एवं चित्तवृत्तिक बीच संगति बैसाएव। जेँ हेतु एहन संगतिक स्पंदनोधरि हमरामे परिलक्षित नहि होइत अछि, हमरा मंगल विधानक चारणोधरि बनबाक कोनो अधिकार नहि अछि।

'स्वगत'क द्वितीय संस्करणमे भूमिका ओ उपसंहारकेँ छोड़ि निबन्धक संख्या अछि पन्द्रह तथा 'कुलय ओ काल-पुरुष' मे उन्नैस। एहूमे एकटा प्रस्तावना छैक जाहिसँ हम उद्धरण देल। एहि 19 मेसँ पाँचटा अछि टैगोर पर। 'टैगोरक प्रतिभाक उन्मेष' (1939) जे थीक रवीन्द्र रचनावली भाग एकक समीक्षा तथा ऊपर निर्देशित 'दि स्टेट्समैन'क हेतु समीक्षाक परिवर्धित रूप। 'टैगोर शस्य' थीक रवीन्द्र रचनावली भाग 2 तथा 3क समीक्षा। सँगहि 'छन्दक मुक्ति ओ टैगोर' (1933) तथा 'सूर्यक क्रान्ति' (1936)। 'सूर्यास्त' (1941) जे टैगोरक देहावसानक दू दिनक भीतर लिखल गेल। अवशिष्टमेसँ तीनटा अछि आधुनिक बंगला लेखन पर। 'कथन ओ अनुभूति (1946), मुख्यतः बुद्धदेव बोस पर। 'अन्तःशिला' (1933), धूर्जटीप्रसाद मुखर्जीक एही नामक उपन्यासक समीक्षा। 'चोरावाली' विष्णु दे केर एही नामक काव्य-पुस्तक पर। एकटा बंगला छन्द पर (1933) जे थीक अमूल्य धन मुखर्जीक 'बंगला छन्देर मूल सूत्र'क समीक्षा। अतिरिक्त दशटा अछि विविध विषय पर—सोझ-सोझ साहित्यिक विषय पर नहि। 'कला एवं स्वतंत्रता' (1937), मनुष्य-धर्म (1932), 'एकेश्वरवादक आक्रमण' (1934), एस-एलेजेंडरक 'सौन्दर्य एवं मूल्यबोधक अन्य स्वरूप'क समीक्षा, 'विज्ञानक आदर्श'(1937), पेनलूबक प्रशंसा, 'उत्थानसँ पतन' (1937), यूरोपीय संभ्यताक भविष्य पर एक निवन्ध जाहिमे स्ट्रैंगलर पर विशेष रूपेँ विचार भेल अछि, विपरीतमे एकटा आधुनिक भारतीय दार्शनिक ब्रजेन्द्रनाथ शील, 'अठारहम शताब्दीक पृष्ठभूमि'(1940), मार्जोरी विलेक 'ग्रैंड बिगरीक' समीक्षा, 'विक्टोरिया कालीन इंगलैंड'(1939), एही विषय पर दू पुस्तकक समीक्षा, 'बर्बर सभ्यता'क समीक्षा(1938), पेट्रिक कार्लेटनक 'गाड़ल साम्राज्य'क समीक्षा, 'पिता एवं पुत्र (1937), फ्राइडक 'मोजेज तथा एकेश्वरवाद'क समीक्षा, 'प्रगति एवं परिवर्तन'(1938), स्वगते जेकां ई निबन्ध सभ प्रायः परिचयक हेतु लिखल गेल।

'कुलय ओ कालपुरुष' सुधीन्द्रनाथक जीवनकालीन अन्तिम पुस्तक छल तथा ई उचिते जे हिनक प्रथम पाठकमेसँ एक अर्थात् धीरेन्द्रनाथ मित्रक नामेँ ई उत्सर्गित

हो। ऊपर हम एहि उत्सर्गकेँ उद्धृत कय चुकल छी। प्रस्तावनामे ई अपन स्थितिक बर्णन कय चुकल छथि। केवल लेखकक रूपमे नहि, प्रत्युत बुद्धिजीवीक रूपमे सेहो। टैगोर विषयक हिनक समालोचना लेखकक रूपेँ हिनक मत स्पष्ट कय चुकल अछि। हिनक कतोक समसामयिकक सम्बन्धमे सेहो। किन्तु हिनक अन्यान्य लेख सेहो कोनो प्रकारेँ गौण नहि अछि। सुधीन्द्रनाथक गद्यकेँ केवल हिनक सौन्दर्यबोधक द्योतक रूपेँ ग्रहण करब उचित नहि होएत। उदाहरणार्थ हिनक आरंभिक निबन्ध 'मनुष्यक धर्म'केँ लिय। आरंभ एना भेल अछि :

मनुष्यक स्वभावमे एहन परस्पर विरोध अछि जे एकरा विषयमे भविष्य-द्वाणी करब असंभव भय जाइछ। प्राय: एही कारणसँ जखन कौपरनिकस पृथ्वीकेँ घमंडसँ विरहित करय चाहलन्हि तखन एकरा सूर्यक अधीन कय देलन्हि। हठात् मनुष्यत्वक प्रकाश समस्त यूरोपकेँ व्याप्त कय देलक। इहो सुनलाक बाद जे ब्रह्मांडक तुलनामे मर्त्यलोक कणमात्र थीक, प्रबुद्ध पश्चिमी लोक पराजयक कोनो लक्षण नहि देखओलक, आने प्राचीन सभ्यताक परलोकभयसँ अभिभूत भेल। मध्ययुगीन परलोकचिन्ताकेँ दूर फेकि सहसा ओ टेरंसक शब्दमे कहि उठल---"हम मनुष्य थिकहुँ, मनुष्यजीवनक सुलभ दोष हमर विपरीत नहि थीक"। एहि आदर्शक गुणद प्रयोग जाहि साहस एवं त्याग पर निर्भर छैक, तकरा बुझनिहार लोककेँ पश्चिमक बादक उन्नतिमे किछुओ रहस्यमय देखबामे नहि अओतैक। मानुषी जीवनमे मात्र मनुष्य सनातन थीक, मनुष्य समाजमे मनुष्य मात्र सेवनीय थीक, मनुष्यत्वक लक्ष्य थीक मनुष्यक कल्याण—ई स्वाभाविक जे ओ जाति जकर कला ओ साहित्य, विज्ञान ओ दर्शन, जीवन ओ मरण एहि सत्यक सत्यतासँ अनुप्राणित छैक, नि.सन्देह उन्नति करत। ओ विजय गमाओल स्वर्गक रहस्यपूर्ण प्रलोभनक द्वारा पथभ्रष्ट नहि भेल। तेँ एकर सिंहनादसँ समस्त संसार जागि उठल। ओ मुकुट कोनो अयथार्थ स्वप्नसँ निर्मित नहि छलैक। तेँ संयमी प्रकृति धरि प्रसादवर्षण कएलक। ओकर सदाशयतामे अन्तिम सत्य ओ जीवनक प्रत्यक्ष उद्देश्यक वीचक द्वन्द्व मेटा गेलैक। अतएव अज्ञातक एहि मिलनमे बुद्धिकेँ कोनो दुर्लंघ्य अयौक्तिकताक भय नहि छलैक। अथवा फेरि हिनक एकरा बादक निबन्ध 'पिता-पुत्र'क आरंभकेँ लिय :

वैयक्तिकता पर विश्वास करब आजुक स्थितिमे असंभव अछि। उच्च गणितक सहायतासँ ई प्रमाणित कएल जा सकैछ जे सूर्यमंडलक केन्द्र-बिन्दु थीक पृथ्वी। किन्तु कोनो देशक प्रधान कोनो व्यक्तिकेँ आत्मनिर्णयक अधिकार नहि देत। किन्तु केवल पचीश वर्ष पूर्व ई सिद्धान्त मनुष्य-सभ्यताक सामान्यचिह्न छल। किन्तु ओहू समयमे अधिकारी लोकनि कतहु गरीबकेँ दबएबामे त्रुटि नहि रख-लन्हि। भाग्यनिर्णय तँ दूर रहओ, असीम विरोधी बलक सोझां व्यक्तिकेँ ईश्वर प्रदत्त गुणक विकास करबामे बाधा छलैक। किन्तु ओहि समयक तानाशाहधरि

कलंकसँ डेराहत छल। बिना कोनो विशेष परिस्थितिक बहाना लगओने, ओहो लोक आगाँ बढ़ि लोकक अधिकारक हनन नहि करैत छल। व्यवहारत: अधिकांश लोक दुर्दशकेँ सामर्थ्यवान्क बहिया बुझैत छल, तथापि सार्वजनिक मंच पर प्राय: प्रत्येक व्यक्ति नि:संकोच स्वीकार करैत छल जे जेँ हेतु हमरालोकनि इच्छाशक्तिक भंडार थिकहुँ तेँ आवश्यक जे हमरालोकनिक चरित्र उत्तम रहय।

एहिठाम थोड़ेक 1937क 'विज्ञानक आदर्श'सँ :

कबिक उपयोगहीनता पहिनहि स्पष्ट भय गेल अछि। कम-सँ-कम हिगलक समयसँ लोक बुझैत आएल अछि जे दर्शन एकटा खाली पात्र थीक। वर्तमान युग थीक विज्ञानक। वर्तमान अलौकिकताक जिम्मा छन्हि अभियन्ता लोकनिक हाथमे। आजुक सूक्ति निवास करैत अछि गणितज्ञलोकनिक मुंहमे। सत्यक वेदी पर स्वार्थकेँ तिलांजलि देबाक हेतु लोक साधु-फकीरक कुटीक दिशि नहि दौड़ैत अछि प्रत्युत मेला लगबैत अछि जायकें पदार्थविज्ञानीक प्रयोगशालामे। तथापि आजुक दुनियां अन्धविश्वासक ओहिना शिकार अछि जेना पहिने छल, जाहिना पुरना इजिप्तवासी लोकनि पुरोहितकेँ अभ्रान्त बूझि समाजकेँ विनाशक रास्ता पर चढ़ाओल तहिना वैज्ञानिककेँ अतिमानव बूझि हमरहुलोकनि विनाशक रास्ता पकड़लहुँ अछि।

इत्यादि। हमरालोकनि उदाहरणकेँ आओर बढ़ा सकैत छी। वस्तु ई थीक जे सुधीन्द्रनाथ अपनाकेँ कलाप्रेमी कहने होअथु, किन्तु हिनक विचार पूर्वापर सम्बद्ध अछि तथा साहित्यिक विचारक संग गांथल। मतलब ई जे दोसर शृंखलाक निबन्ध पर बिना विचार कएने हमरालोकनिकेँ कोनो एक शृंखलाक निबन्ध पर किछु नहि कहबाक चाही।

एहिठाम टैगोरक सम्बन्धक पांचम निबन्ध शीर्षस्थानीयक सम्बन्धमे सुधीन्द्र-नाथक मतक निचोड़ प्रस्तुत कय दैत अछि, यद्यपि कतोक अन्यान्य अवसर पर ई पूरकक इंगित देने छथि। यथार्थमे अंग्रेजीमे लिखित हिनक अन्तिम निबन्धमेसँ एकटा, जकरा ई ओहि वर्षमे लिखलन्हि जाहिमे हिनक प्राणवियोग भेल, टैगोर पर छल। यद्यपि जे लोकनि शतवार्षिकीक हेतु लिखओलन्हि ओलोकनि टैगोरक जीवन सम्बन्धी किछु विवरणकेँ प्रभूतमात्रामे विवादास्पद पओलन्हि। जे होअओ, हिनक ई 'गीतिकारक रूपमे टैगोर' हिनका देहावसानक बाद अबु सईद अय्युब 'क्वेस्ट'मे छपओलन्हि। आइ ई ओ० यू० पी० पुस्तकमे अछि :

यद्यपि पैंध कवि लोकनि शरत्कालीन लतामंडपक पात जेकां प्रचुर नहि होइत छथि तथापि आइ धरि हुनक संख्या ओतबे नहि अछि जतबा हम जनैत छी। समसामयिक प्रति जँ हम किछु उदार होइ तँ ई नहि कहि सकब जे पैंघत्व केवल प्राचीने लोकमे छल। तथापि अपवादसँ नियमक पुष्टिए होइछ। बंगालक प्रमुख चित्रकार यामिनी रायक ई मत जे जे वस्तु संसारमे अन्यत्र चरितार्थ होइछ ओ

हुनक मातृभूमिमे नहि तकरा संग हमरालोकनि सहमत होइ बा नहि, तथापि स्वीकार करय पड़त जे जे दूर्वांयुक्त कतोक एकड़ भूमि हुनका दृष्टिएँ असामान्य भेनहुँ एकटा व्यापक नियमक अन्तर्गत आबि जाइछ किएक तँ ई रवीन्द्रनाथकेँ जन्म देलक। कारण ई थिकैक जे टैगोर एकटा एहन बंगाली लेखक थिकाह जे प्राचीन पैंध लेखकक तुलनामे ठहरि जएताह। एकर कारण ई जे केवल हिनके प्रयाससँ हमरालोकनिक साहित्य जकर आरंभ प्रायः एक हजार वर्ष पूर्व भेल, अपन आंचलिक शैली एवं ग्राम्य प्रवृत्तिकेँ छोड़ि वृहत साहित्यिक गणतंत्रक अंग बनि गेल ओ सार्वभौम रुचि एवं मापदंडक विषय बनल। टैगोरक बादक साहित्यकारलोकनि युक्तिपूर्वक मानि सकैत छथि जे मृत्युक बादो एक दिशि जँ ओ अपन समनामा सूर्यदेव जेकां आधुनिक उपग्रह सभसँ अधिक चमकैत छथि तँ दोसर दिशि कतोक दोसर आधुनिक लोकनि हुनके प्रणालीक नियमानुसार ओ विकासक्रमेँ अपना-अपना कक्षमे देदीप्यमान छथि। एही प्रकारेँ आरंभ होइत अछि—जेई बंगलामे कहने छलाह तकरे पुनरावृत्ति। उदाहरणस्वरूप, अपन 1939क समीक्षा 'रवीन्द्रप्रतिभाक उपक्रमणिका'क आरंभ ओहिना कएल। "महान कवि विरल होथु वा नहि, आजुक सांस्कृतिक संकटोमे कतोक महान् कवि विद्यमान छथि ओ जँ हम आधुनिक कविलोकनिक प्रति अपना अनादरक मात्रा जँ किछु कम कय ली तँ महानता केवल सुदूर भूतेटामे नहि भेटत प्रत्युत आधुनिको कविमे महान् भेटि जएताह। किन्तु तथाकथित अकाट्य नियमक अपवाद होइत छैक। तेँ उपर्युक्त सामान्य सिद्धान्तक अछैतो, कम-सँ-कम भारतवर्षमे विद्यमान कवि लोकनिमे एकटा एहन कवि छथि जनिक तुलना प्राचीन कविलोकनिसँ कएल जा सकैत अछि।" अथवा ई लिय : "एहन बंगाली जे पचाशसँ नीचां छथि तनिका पर प्रधान प्रभाव टैगोरक अछि। जे लोकनि एहिसँ अधिक वयसक छथि, किन्तु छथि विवेकी, तँ ओ अवश्य स्वीकार करताह जे वर्तमान बंगाली संस्कृति मात्र टैगोरक कृति थीक।" (कवि रहस्य) अथवा : "टैगोर आजुक बंगालक कामनापूर्तिकारक गणेश थिकाह। निःसन्देह ओ हमर पर्व-पार्वणक अधिष्ठाता थिकाह। हुनक आशीर्वाद विना हमरालोकनिक वाणिज्य-व्यवसाय धरि उन्नतिशील नहि होइछ। (सूर्यवार्ता)

किन्तु एकर ई अर्थ नहि जे टैगोर पर लिखैत काल ई अपन आलोचनात्मक प्रतिभा अथवा ऐतिहासिक दृष्टिकोणकेँ विसरि गेलाह। अपन पुरना 'छन्दमुक्ति ओ रवीन्द्रनाथ'मे ई हुनक सद्यः पूर्ववर्ती माइकल मधुसूदनदत्तक प्रति हुनक विरोधभावनाक कथा उठओने छथि : "अपन जीवनक उत्तरार्धमे एकसँ अधिक बेरि रवीन्द्रगाथ एहि हेतु क्षमायाचना कएने छथि जे ओ अपन किशोरावस्थामे माइकेलक प्रति अनुदारता देखओलन्हि। किन्तु कहियो ओ हुनक ऋणकेँ स्वीकार नहि कएलन्हि—ओहिरूपेँ जेना बिहारीलालक स्वीकार कएलन्हि। एहि संक्षिप्तताक कैफियति एहि बातमे छैक जे बिहारीलालक संग हुनक सम्बन्ध

छल दीप एवं फतिगाक बीचक सम्बन्ध जेकां। कहबाक अर्थ ई जे टैगोरक मात्रा-छन्दक विकासक संग बिहारीलालक अस्तित्व मेटा गेल। किन्तु माइकेलक संग एहि प्रकारक विलोपनक कल्पना करब असंभव। जखन हुनक अक्षरवृत्ति रवीन्द्र-नाथक हेतु अनुकरणीय प्रतीत होइछ, तखन एकर एकटा स्वतंत्र अस्तित्वे नहि भय जाइत छैक, प्रत्युत आइधरि एकर उपयोगिता रहि जाइत छैक एहि दृष्टिएँ जे ककरासँ बचबाक चाही"।[1] अथवा हिनक अन्तिमसँ :

> वैचारिकताक संग टैगोरक अत्यधिक सरोकारक कारण सर्वत्र नीक फल नहि भेल। यद्यपि यूरोपक हालक घटनाक सुनल-सुनाओल विवरण एकर पुष्टि अवश्य कएलक, किन्तु अत्यधिक आत्मनिर्भरता हिनक प्राथमिक शैलीकेँ कमजोर बना देलक। छन्दकेँ बना देलक कखनहुँ अत्यधिक कोमल ओ कखनहुँ अत्यधिक कर्कश। तथापि जँ आगन्तुक रचना प्रचुर प्रशंसा पबैत गेल तँ एकर कारण ई जे विचारशील व्यक्ति, हुनक अन्तिम मत चाहे जे रहल हो, बंगलाक प्रत्येक लेखक हुनक यथार्थ गुणसँ फराक हुनक रचनाडंम्बरसँ अकच्छ छलाह। किन्तु टैगोरक प्रशंसक लोकनि ई कहि जे हुनक अनिन्द्य छन्द सुरुचि ओ अध्यात्म कणविहीन विषयासक्तिक छद्मरूप छल ईश्वरचन्द्र गुप्तक प्रति अन्याय कएल। हुनकहु लोकनिकेँ स्वीकार करयक हेतु बाध्य होबय पड़लन्हि जे नैतिकता एवं बौद्धिकताक चरम उदाहरण उपस्थित करबाक अतिरिक्त ईश्वरचन्द्र गुप्त प्रमाणित कयलन्हि जे हमरालोकनिक गद्य, जकर सृष्टि आरंभमे बाइबल प्रचारक, लेल अंग्रेज पादड़ी द्वारा भेल, विभिन्न धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष अनुभवक समर्थ बाहक भय सकैत छल।

जेना ऊपर कहने छी सुधीन्द्रनाथ 1957 मे संयुक्त अमेरिका हेतु प्रस्थान कएलन्हि। कारण छल शिकागो विश्वविद्यालयक निमंत्रण। संग छलथिन्ह पत्नी राजेश्वरी। ई पूबक रास्ता पकड़लन्हि। एहि प्रकारेँ चक्कर लगाकेँ घटना प्रायः फेरि ओही ठाम आबि गेल। किन्तु शिकागोमे सात मास रहि ओतय ई की कएलन्हि? एडवार्ड शीलक ओ० यू० पी०क पुस्तकक प्रस्तावनामे एकटा संक्षिप्त विवरण अछि। सुधीन्द्रनाथ अपन आत्मकथा पर काज कएलन्हि—सावधानी-पूर्वक प्रतिदिन छओ घंटा। सप्ताहमे पाँच दिनक भीतर ओ० यू० पी०क फर्माक अनुसार 74 पृष्ठक प्रस्तुति। "असमाप्त आत्मकथाक प्रारंभिक अध्याय" ई हिनक

1. अनुवाद : केतकीकुमारी डायसन ओ० यू० पी० पुस्तकमे (हम किछु फेरबदल कएल अछि। एक शब्दकेँ छोड़ियोदेल अछि जकरा हम अनावश्यक बुझल) मात्रा छन्द वा मात्रा वृत्त बंगलाक परिणात्मक छन्द जाहिसँ कतोक अक्षरक गुरु उच्चारण तथा कतोकक लघु उच्चारण कएल जाइछ। एकरा विपरीत अक्षर वृत्तमे सभ अक्षरक गणना होईछ समान रूपेँ। लेखक।

असमाप्त 'संसारक गोधूली'क सोड़हम अध्यापक अपने देल उपशीर्षक छल। बुझना जाइछ जे एकर आरंभ शीलक आग्रह पर कएने छलाह। शील छलाह हिनक यथार्थ आतिथेय जे समाजशास्त्रीय विभागमे ओतहि छलाह। सुधीन्द्रनाथक लेखन सोझ चलैत रहल। आरंभ भेल आरंभहिसँ स्मृतिक प्रथम दाढ़केँ अनुसरण करैत। तकरा बाद विवरण चल गेल माता-पिता, पितामह-पितामही तथा दू पित्ती, एक पिताक छोट भाय ओ दोसर पिताक जेठ भाय। तकरा बाद दू पितियौत—दूनू पित्तीक दू पुत्र। फेरि पारिवारिक भवन, प्राचीन कलकत्ताक संग गांथल बाल्य-कालक किछु विवरण। तकरा बाद माताक परिवार—मातामह, हुनक भाय लोकनि, माताक भाय लोकनि ओ पितियौत लोकनि। फेरि कनिष्ठतम मातामह-भ्राताक सम्बन्धमे थोड़ेक ऐतिहासिक उद्घाटक विवरण दय विराम। केवल असमाप्त आत्मकथाक दृष्टिएँ नहि, प्रत्युत आरंभिक बीसम शताब्दीक ऐतिहासिक ओ सामाजिक अभिलेखक रूपेँ ई प्रचुर मूल्यवान् अछि। प्रसँगवश जखन इंगलैंडक 'एडकाउन्टर' सँसारक महानगरक सम्बन्धमे शृंखलाबद्ध लेख प्रकाशित कएलक तखन कलकत्ता पर (1957) लिखबाक हेतु हिनका नियुक्त कएलक। हिनक लेख महत्त्वपूर्ण पूरक सामग्री उपस्थापित करैत अछि।

सुधीन्द्रनाथक अंग्रेजी शैली हिनक बंगलाक शैलीसँ भिन्न नहि अछि। जे किछु ई रूढ़िभंजक परिहासक स्वरमे 'कुलय ओ कालपुरुष' अथवा 'स्वगत'मे अर्ध-विरामक सम्बन्धमे कहलन्हि ओ हिनक अंग्रेजीक सम्बन्धमे सहो लागू अछि। दोसर शब्दमे ई समान रूपेँ तर्कपूर्ण या व्यंग्यपूर्ण छथि। जखन ई किछ कहैत छथि तखन ओकर विपरीत सेहो सोझां उपस्थित भय जाइछ। ई प्रक्रिया बोझिल भेनहुँ सुखद प्रतीत होइछ। अतः एहिमे कोनो आश्चर्य नहि जे प्रायः 74 पृष्ठ लिखवामे हिनक छओ सात मास लागि गेल। जेँ हेतु ई अंग्रेजीमे अछि ओ छपल अछि (यथार्थमे ओ० यू० पी० पुस्तक एहीसँ शीर्षक लेलक) एहिसँ हम अधिक उद्धरण नहि देब। किन्तु हिनक अंग्रेजी शैलीक उदाहरण स्वरूप एहिठाम एकटा अंश देब जकरा द्वारा हिनक 'संसारक गोधूली'क तात्पर्य पर प्रकाश पड़ैत अछि :

अपन दर्पपूर्ण युवावस्थामे जखन हम अपन पत्रक हेतु शीर्षककेँ तकैत छलहुँ तखन ऋग्वेदसँ एकटा अंश लेलहुँ जे प्रकाशक स्तुति छल। देवनागरी अक्षरक नीचां प्रज्ज्वलित दीप शिखा देलिऐक। फेरि जोड़ि देलिऐक गाथि केँ डी जाहिसँ एकटा घटिया सन्तुलन बनि गेल। जेना अन्तिम विवरणसँ स्पष्ट छल, हम गेटेक अनुकरण कएल—अधिक-सँ-अधिक आधा बुद्धिपूर्वक। सुरुचिक एहि हीन अभावक पाछां आभिजात्यक, चाहे ओ कतबो जाली रहल हो, एकटा चिह्न हासिल करब मात्र नहि छल। एक दिशि जतय हम कलकत्ताक एहन अगणित परिवारक नकल कएल जे हमरा परिवारसँ प्राचीन नहि छल, ओतय दोसर दिशि हुनका-लोकनिक विपरीत हम एकटा आभ्यन्तरीण अन्धकारसँ तेना अभिभूत छलहुँ जे

ओकरा ने त्यागि सकैत छलहुँ, ने स्वीकार। कम-सँ-कम हमरा हेतु वाह्य दुनियांक धूमिल वातावरण, जाहिमे हमर वाल्यावस्था बीतल, वादमे एकटा गभीर छायाक परिणाम जेकां बुझना गेल। हम एखनहुँ नहि बूझि सकैत छी जे एहि सभक परिणाम की थिकैक—हमरा पितामे तर्कवाद ओ रूढ़िवादक सम्मिश्रण, पितृव्य धीरेन्द्रनाथक सम्मानबोध ओ व्यभिचार, हमरा मायक निर्दयताक संग-संग दयालुता, यात्राक पूर्व ज्योतिषीक परामर्श, आर्थिक दृष्टिएँ जातिक व्याख्या, तर्क द्वारा तर्ककेँ काटि ओकर अवमूल्यन। नीचां स्तर पर सेहो विप्रतिषेधक वृद्धि भेल। अतएव ककरो अस्वस्थ भेला पर केवल डाक्टरकेँ वजाएव पर्याप्त नहि छल। पछुआड़सँ कठवैद्य सेहो आवथि जाहिसँ स्वास्थ्य लाभक एकोटा रास्ता वंद नहि रहि जाय। यथार्थमे कठवैद्यक आदर वेशी छल। इटलीक एकटा औषधि-विक्रेताक सम्मान हमरा घरमे विशेष छल। ई तखनहुँ जखन ओ अपने औषधसँ स्वयंकेँ मारि देलन्हि।

जर्मनीक दार्शनिक स्पेंगलर प्रायः हमर समस्याक समाधान कय सकथि। किन्तु हमर दिमाग पूर्वी एवँ पश्चिमी तत्त्वक तेहन अस्थिर सम्मिश्रण भय गेल अछि जे हम दृढ़ भय कहवामे असमर्थ छी जे सभ्यताक अपक्षयक वादो वैचारिक नवशक्तिक आदान-प्रदानसँ संस्कृति वांचल रहि जायत।

सुधीन्द्रनाथ जून 1958 मे शिकागो छोड़लन्हि ओ न्यूयार्कमे रहलाह अगस्त धरि। तकरा वाद लंदन चल गेलाह। एतय वहुत दिनक वाद कलकत्ताक अपन अनेकानेक मित्रसँ भेंट कएल—जौन औडेन, सिडवाद सिनक्लेयर, औस्टर स्किल बेक, मालकौम मुगरिज तथा सिप्रियन ब्लेगडेन। ई तथा राजेश्वरी थोड़ेक आओर यात्रा सम्पन्न कय अन्तमे सितम्बर 1959मे दू वर्षक अनुपस्थितिक बाद कलकत्ता फिरलाह। रोममे अपन मित्र सुशील ओ इन्दिरा देसँ भेंट कएलन्हि ओ कहलथिन्ह जे कखनहुँ केँ हृदयगति वन्द भय जाइत अछि। किन्तु अपन स्वभावानुकूल किछु मखौलिक संग। जखन यादवपुर आवि अपन काज पकड़लन्हि तखन ई स्फूर्तिसँ परिपूर्ण छलाह। एतय सप्ताहमे दू दिन आवि मनोयोग दय केवल काजेटा नहि करैत छलाह प्रत्युत कखनहुँ केँ धूर्जटीप्रसाद मुखर्जीकेँ संगो लेने अवैत छलाह जाहिसँ युवक समाजविज्ञानी लोकनि हिनकासँ सँपर्क कय सकथि ओ ई हुनका लोकनिसँ। विशेषतः एहि हेतु जे कैंसरक आक्रमणक कारण ओहि एकाकीक किछु आमोद-प्रमोद भय सकय। अध्यापनक अतिरिक्त सुधीन्द्रनाथ लिखबो कएलन्हि—अँग्रेजीमे टूटा निबन्ध, उपर्युक्त टैगोर सम्बन्धी लेख तथा 'हूगो तथा अन्य' शीर्षक लेख जे 'क्वेस्ट' मे छपबो कएल। फेरि तत्कालीन अँग्रेजी नवलेखन साप्ताहिक देशक हेतु, बूढ़लोकनिक दृष्टिमे 'क्रुद्ध नवकालोक'। राजेश्वरीक संग बुद्धदेव बोसक त्रैमासिक 'कविता'क शतसंख्यीय एवं द्वितीय अन्ताराष्ट्रीय संख्याक हेतु समकालीन फ्रेंच, इटालियन, जर्मन कविताक अँग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएलन्हि।

'और्केस्ट्राक' नवीन संस्करण एवं 'क्रन्दसी'क द्वितीय संस्करणक हेतु संशोधन-परिवर्तन मेहो कएल। 31 दिसम्बर 1959 कें जर्मनीक कवि हान्स एगोन होल्थुसेनक कविताक बंगला अनुवाद 'मृत्युक समय'। हिनक नोटबुक पर टी० एस० इलियटक 'जरल नौर्टन'क 16 पंक्तिक दूटा प्रारंभिक अनुवाद सेहो हिनक मृत्युक बाद पाओल गेल।

ई 59 वर्षक भय चुकल छलाह। किन्तु देखबामे कम बुझना जाइत छलाह। जे केयो 1960क आरंभिक मासमे देखने छलाह, हिनका उत्साहक चरम सीमा पर पओलन्हि। ई गप्प करैत छलाह, तर्क करैत छलाह, प्रत्येक भावभंगिमा अथवा व्यवहारमे अननुकरणीय सौजन्य टपकबैत छलाह। अभ्यन्तरमे ऊष्णताक प्रचुर भंडार किछु नव-पुरान मित्रलोकनिक प्रति, सँगी कविलोकनिक प्रति, सामान्य परिचित लोकनिक प्रति। परिवारक प्रति तँ अवश्ये। यादवपुरक गलियारीक ओ प्रशस्त स्थान अथवा कविता-पाठक कालेज स्ट्रीटक कक्ष वा मित्रक बैसिकी अथवा 6, रसल स्ट्रीटक अपना घरक दछिनबारि ओसारा जहिना एक दिशि सौहार्दक केन्द्र बिन्दु रहल तहिना बौद्धिकताक सेहो। आसक्ति जेना प्रबलतर भेल जाइत हो। हिनक अव्यवहित छोट भाय जनिका संग हिनक मिलन बहुत दिनसँ नहि भेल छल हठात् हिनका अपन ओहिठाम पओलन्हि। हिनक सभसँ छोट भाय, जनिक नामे ई आममुखतारनामा कएने छलाह ओ जे अधिक काल आबथि, आब आओर अधिक आबय लगलाह। कखनहुँ कें ई अपन औफिस सेहो जाय लगलाह। उद्देश्य प्रायः वसीयतनामा पर विचार करब अथवा ओहने सन कोनो बात। एक-दू बेरि तँ मात्र खोज-पुछारीक हेतु। एक बेरि तँ, यथार्थमे मरबासँ एक दिन पूर्व, ओतय जाय दू-अढ़ाय घंटा प्रतीक्षा कएलन्हि।

काल अनुकूल बुझना जाइत छल। ओही दिन संध्याकाल ई राजेश्वरीक संग एकटा मित्रक ओहिठाम भोजन पर गेलाह। विलम्बसँ अपना ओहिठाम फिरलाह। अहल भोरमे बेचैनीक सिकाइत कएलन्हि। एकटा सिगरेट जरओलन्हि, किन्तु पीबि नहि सकलाह। राजेश्वरी डाक्टरकें बजाओल। किन्तु जावत डाक्टर आबथि ताबत हिनकप्राणवियोग भय गेल छल मस्तिष्कक रक्तश्रावसँ, 25 जून, 1960कें।

उपसंहार

कविक परिचय हुनक झोंकाह प्रवृत्तिसँ होइत छैक। जीवनानन्द दास जेकां, अमिय चक्रवर्ती जेकां, बुद्धदेव बोस जेकां, चारू अपना पुश्तक प्रौढ़ कवि। सुधीन्द्र-नाथ दत्तक सेहो अपन झोंक छल। जीवनानन्दक परिचय होइत अछि मुख्यतः प्रायः हुनक रूपकालंकारक आधार पर जाहिमे हुनक अविस्मरणीय प्रत्यक्षबोध निहित अछि। अमिय चक्रवर्तीक हुनक विश्रामी छन्दसँ जकरा हुनक जीवनक संग समरसता छलैक। बुद्धदेव बोसक हुनक मानसिक तनावसँ जकरा द्वारा यातना-सहन मूल्यवान् भय जाइछ। विष्णु देक हुनक सामाजिक चेतनाक याथार्थ्यक कारण जकर स्फुरण हुनक संघटित आलंकारिकतामे होइछ। सुधीन्द्रनाथक हुनक गद्यात्मक तर्कवादसँ जकरा द्वारा कवित्व पूर्ण भावप्रवणता रूप पबैछ। एहि पांचोमे सुधीन्द्रनाथक रचना सभसँ अधिक सघोष वर्णक प्रयोग करैछ। अतएव हिनक अनुवाद सभसँ कम सन्तोषप्रद। एकरा अतिरिक्त हिनक छन्द अत्यन्त नियमित अछि, शब्दावली अत्यन्त पारंपरिक। एहिसँ देखबामे आबि सकैत अछि जे अन्य चारू कविसँ ई कम आधुनिक छथि। किन्तु जीवनानन्द हिनका पओलन्हि 'निराशाक किरणसँ उज्ज्वल'। जीवनानन्द एहिसँ अधिक सत्य नहि कहि सकैत छलाह।

जीवनानन्द एवं सुधीन्द्रनाथक बीच एकटा ध्रुवबिन्दुकेँ पाएब कोनो असा-धारण बात नहि। यथार्थमे एही प्रकारक प्रशंसा एक बेरि एकटा नव कविसँ प्राप्त भेल। किन्तु कविताक शैली अथवा रुचिमे कोनो दू कवि ओतक भिन्न नहि होएताह जतेक छथि जीवनानन्द ओ सुधीन्द्रनाथ। किन्तु एक बेरि एना अंकित कय दी, एक बेरि ई लिखि दी जे जीवनानन्द ओ सुधीन्द्रनाथ परस्परक प्रतिध्रुव छलाह तथापि दूनू गोटाक बीच ओहि अनुभव-साम्यक दर्शन होएत जे हुनकालोकनिक द्वारा स्फुटित भेल। किन्तु हमरालोकनि प्रायः एहि अनुभव-साम्यकेँ हृदयंगम नहि करैत छी। अन्यथा किएक आजुक कविलोकनि कहैत छथि जे मात्र जीवनानन्द हुनक गुरु थिकाह तथा सुधीन्द्रनाथसँ हुनका किछु ओ सिखबाक नहि छन्हि?

किन्तु की ई सत्य थीक ? की ओलोकनि हिनकासँ नहि सिखलन्हि अछि ? हिनक मृत्युक बाद 20 वर्षसँ अधिक बीति गेल। हिनक प्रभावकेँ बुझबामे हमरालोकनि एतेक समय लगा देल। बुझना जाइछ अधिक समय नहि लगाओल अछि। स्पष्ट अछि जे आजुक कविताक आयाम सुधीन्द्रनाथक विपरीत अछि। किन्तु जँ हम गभीरमे जाइ तँ हिनक अवदानकेँ जानि सकैत छी। शब्द प्रयोगक दृष्टिकोणमे, सामान्य जटिलतामे, अथवा विम्बक संग गांथल तर्कमे। एकरा अतिरिक्त विवेचनात्मक प्रबुद्धतामे हिनक गभीर प्रभाव अछि यद्यपि गद्यमे हिनक अनुकरण कएनिहार वहुत नहि भेलाह अछि।

जे होअओ, एकटा प्रभाव एहन अछि जकरा सम्वन्धमे सामान्य स्वीकृति देखबामे अबैछ: बंगला कवितामे ई श्रेण्य शैलीक अवतारण कएलन्हि। किन्तु तकर की अर्थ ई भेल जे ई तथाकथित श्रेण्यवादी छलाह ? हिनक मृत्युक कतोक मासक वाद हिनक प्रशंसा करैत बुद्धदेव बोस एकरा स्पष्ट कएलन्हि : हृदयसँ सुधीन्द्रनाथ रोमांटिक कवि छलाह—सभसँ पैघ रोमांटिक। प्रमाणरूपेँ हम केवल दूटा वस्तु कहब : एक, हिनक प्रेमकाव्यमे भावनाक निविडता, इच्छा एवं क्लेशक एकांतिकता ओ क्रंदन जकरा सन वस्तु समस्त बंगला साहित्यक इतिहासमे कतहु नहि भेटत —वैष्णव रचनामे नहि, रवीन्द्रनाथमे नहि, कोनो समसामयिक रचनामे नहि। द्वितीय, भगवान्क अनस्तित्वप्रयुक्त अभावबोध। एहि त्रुटिक मार्जन ई कविताक द्वारा नहि करय चाहैत छलाह। इहो रोमांटिकक लक्षण थीक। एहि रिक्तताकेँ ई कवितासँ, जनताजनार्दनसँ, इतिहाससँ सेहो पाटय नहि चाहैत छलाह। तेँ यद्यपि ई अपनाकेँ भौतिकतावादी कहैत छलाह, तथापि हिनक कवितासँ प्रमाणित होइत अछि जे हिनक पिपासा छल सनातन तत्त्वक हेतु। हिनक समसामयिक हिनका सम्बन्धमे एहिना सोचैत छलाह। एकटा एहन समसामयिक जे हिनक कविता संग्रहक सम्पादन कएलक ओ कही तँ हिनका भावी पीढ़ीक सोझां उपस्थापित कएलक।

यथार्थमे प्रायः एहि 20 वर्षमे सुधीन्द्रनाथ श्रेण्य बनि गेल छलाह। श्रेण्य बनि जएबाक अर्थ अधिक काल होइत अछि प्रचारित होएवासँ वंचित भय जाएब। किन्तु अभ्यन्तरमे जाय स्थिर भय जाएब। हम हिनका अस्वीकार कोना करब जखन अभ्यन्तरमे ई काज करितहिं छथि ? कोना अस्वीकार करब जखन कही तँ ई साहित्यिक आनुवंशीय प्ररूप भय विद्यमान छथि ? आइ जखन हम लिखैत छी तखन हिनकहि लिखैत छी अर्थात् हिनक अमरत्वक एकटा अंशकेँ। दोसर अंश थीक हिनक कृति।

117164
10·12·04

०००

टैगोरक पश्चात् बंगलाक वरिष्ठ कवि सुधीन्द्रनाथ दत्त प्रकीर्ण काव्यक रचना कमल, मुदा प्रकीर्णो रुपमे एहेन काव्यक सृष्टि कयल जे संक्षिप्त ओ परिपक्क, तर्कमे गदयात्मक तथापि काव्यानुभूति-सम्पन्न, ध्वनि-झंकृतिमे समृद्ध ओ असाधारण आदर्श दिस उन्मुख अछि। स्वान्तः-सुखाय काव्य-रचनाक दृष्टिएँ ओ विशुद्ध कवि नहि छलाह, एकर विपरीत ओ अपन समसामयिकतासँ घनिष्ठ रुपेँ संयुक्त छलाह। हुनक समसामयिक क्वचित अन्य कविक कवितामे एतादृश समसामयिक सन्दर्भ दृष्टिगत होइछ। शंका ओ नैराश्यसँ आरब्ध तार्किक विवेचन-सरणि होइत, जाहिमे शुभाशुभ अन्योन्याश्रित अछि, ओ एकटा एहन शून्यवाद धरि पहुँचलाह जे समग्र ऐतिहासिक उद्देश्य-परकतार्कें अवडेरि देल। अपन एहि असाधारण अभियान-क्रममे ओ प्रसिद्ध बंगला-पत्रिका 'परिचय'क स्थापना कमल तथा प्रसिद्धिमे एहिसँ किञ्चितो न्यून नहि छल हुनका द्वारा आरब्ध 'शुक्रवार' गोष्ठी जाहिमे हुनक मित्र-मण्डली एकत्र भऽ विविध विषयक विवेचन करैत छलथिन। कलकत्ताक एक संभ्रान्त परिवारमे सम्भूत, नामी पिताक पुत्र एवं तद्वते नामी पितृव्यजनक भातिज सुधीन्द्रनाथ दत्तक विकासक सशक्त मूलपरम्पराक अन्तस्तल मे निहित छलनि तथापि ओ पाश्चात्य जगतक व्यापक प्रभावकेँ सेहो आत्मसात् कमलनि। आ' याहरा मानसिकता ओ प्राप्त कमलनि से वास्तविक उदारवादी छल।

Library IIAS, Shimla
MT 891.440 92 D 262 D
00117164

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00